वैज्ञानिक चिंतन की आवाज़

तर्कशील पथ

TARKSHEEL

दिसंबर 2021



अंदर पढ़े :

₹20

अज्ञानता वो जमीन है जिसमें करामातों के लिए विश्वास उगता है। ...रोबर्ट जी इंगरसोल

कविता

–पाश

मैं पूछता हूं
आसमान में उड़ते हुए सूरज से
क्या वक्त इसी का नाम है
कि घटनाएं कुचलती चली जाएं
मस्त हाथी की तरह
एक पूरे मनुष्य की चेतना/ कि हर प्रश्न
काम में लगे जिस्म की गलती ही हो?
क्यूं सुना दिया जाता है हर बार
पुराना चुटकुला
क्यूं कहा जाता है कि हम जिंदा हैं
जरा सोचो –
कि हम में से कितनों का नाता है
जिंदगी जैसी किसी वस्तु के साथ !
रब की वो कैसी रहमत है
जो कनक बोते फटे हुए हाथों–
और मंडी के बीचोबीच के
तख्तपोश पर फैली हुई मांस की
उस पिलपली ढेरी पर,
एक ही समय होती है?
आखिर क्यों
बैलों की घंटियां
और पानी निकालते इंजन के शोर में
घिरे हुए चेहरों पर जम गई है
एक चीखतीं खामोशी?
कौन खा जाता है तल कर
मशीन मे चारा डाल रहे
कुतरे हुए अरमानों वाले डोलो की मछलियां?
क्यों गिड़गिड़ाता है
मेरे गांव का किसान
एक मामूली से पुलिसए के आगे?
क्यों किसी दरड़े जाते आदमी के चौंकने के लिए
हर वार को
कविता कह दिया जाता है?
मैं पूछता हूं आसमान में उड़ते हुए सूरज से

तर्कशील पथ पत्रिका हेतु शुल्क पंजाब नैशनल बैंक में तर्कशील सोसायटी पंजाब (रजि) के नाम से खाता सं. 0044000100282234 IFSC: PUNB0004400 में जमा करा सकते है या शुल्क Paytm एवं googlepay के माध्यम से मोबाईल नम्बर 9416036203 पर या कोड को स्कैन करके भी भेजा जा सकता है। शुल्क भेजने के बाद इसी मोबाइल नम्बर पर अपना पता SMS या WhatsApp करें।

Reg.No.HARHIN/2014/60580

संपादक : प्रा बलवंत सिंह - 94163-24802

संपादक सहयोग :-

गुरमीत अम्बाला - 94160-36203

बलबीर चन्द लौंगोवाल - 98153-17028

हेम राज स्टेनो - 98769-53561

पत्रिका शुल्क :-

द्विवार्षिक : 200/- रू.

विदेश : वार्षिक : 25 यू.एस.डॉलर

रचनाएं, पत्र व्यवहार व शुल्क भेजने के लिए पता:

मुख्य कार्यालय

तर्कशील भवन, संघेडा बाईपास

तर्कशील चौंक, बरनाला-148101 (पंजाब)

01679-241466, 98769 53561

tarksheeleditor@gmail.com

balbirlongowal1966@gmail.com

तर्कशील सोसायटी की गतिविधियों से जुड़ने के लिए :

www.facebook.com/tarksheelindia

पेज को लाईक करें।

पत्रिका के प्रमुख लेखों को निम्न ब्लॉग पर भी पढ़ा जा सकता है-

https://tarksheelpath.blogspot.com

पत्रिका को पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें:

www.tarksheel.org

Tarksheel on Whatsapp : 9416036203

Tarksheel Mobile App :

Readwhere.com

Tarksheel on Twitter:

@gurmeeteditor

टाईप सैटिंग और डिज़ाइनिंग:

दोआबा कम्यूनिकेशंस

मोबाईल : 92530 64969

Email: baldevmehrok@gmail.com

संकेतिका

आगामी मीटिंग के बारे

करोना महामारी के चलते तर्कशील सोसायटी हरियाणा की आगामी द्विमासिक मीटिंग अनिश्चित है। जैसी भी स्थिति होगी, तर्कशील साथियों को समय-समय पर सूचित कर दिया जायेगा।

नोट : किसी भी तरह की कानूनी कारवाई सिर्फ कुरुक्षेत्र (हरियाणा) की अदालत में ही हो सकेगी।

सम्पादकीय

पर्यावरण संरक्षण

विश्व मे बढ़ते कार्बन उत्सर्जन पर चिंतन के लिए पिछले पच्चीस सालों से विश्व के अग्रणी देश सम्मेलन करते रहे हैं। इस बार का सम्मेलन ग्लासगो में दो सप्ताह चला और कार्बन उत्सर्जन को कम करने पर चिंतन किया। विश्व के अग्रणी व पूंजीवादी व्यवस्था से लैस देश अंतहीन लाभ की दौड़ में लगे हैं। वे ही विकास के नाम पर पर्यावरण को सबसे बड़ी क्षति पहुंचा रहे है। जल, जंगल, जमीन का दोहन जितना इन विकसित देशों ने पिछले पचास वर्षो में किया वह बेहद दुखदायी रहा। धीरे-धीरे वैज्ञानिकों और पर्यावरण संरक्षण के लिए लगे चिंतनशील लोगों ने आवाज उठानी शरू की और भविष्य के खतरे से चेताया तो पूंजीवादियों की आंखे खुलने लगी लेकिन वे अपने अंतहीन लाभ को छोड़ने के मूड़ में नहीं दिखते। सारा जोर यह लगाया जा रहा कि कार्बन उत्सर्जन के साधनों की जगह सुरक्षित साधन तलाशे जाएं।

कुल मिला कर इस सम्मेलन का यही परिणाम रहा, लेकिन नए पर्यावरण को सुरक्षित रखने वाले यंत्रो को बनाने में बहुत खर्च होना है विकासशील देश इस स्थिति में नही हैं कि यह संसाधन जुटा सकें। उन्हें अपने संयंत्रों को बदलने के लिए इन्ही पूंजीवादी देशों की सहायता की जरूरत है, जिसके लिए पिछले सम्मेलनों में सौ अरब डॉलर की सहायेता के वायदे को विकसित देश पूरा नहीं कर पा रहे। आज विश्व में ज्यादातर सयंत्र कोयले व जीवाश्म ईंधन पर ही निर्भर हैं जिसे झटके से बंद नही किया जा सकता। उसके लिए ग्लास्गो सम्मेलन में यह फैसला लिया गया कि कोयले के उपयोग को को कम किया जाए।

जहां तक भारत की स्थिति है, तो हर साल देश की राजधानी दिल्ली भयंकर प्रदुषण का शिकार अक्टूबर-नवम्बर में बनती है वैसे तो दिल्ली में प्रदूषण का स्तर सदा मापक मानदण्ड से ज्यादा रहता है लेकिन इन महीनों में ज्यादा बढ़ जाता है। अभी तक दिल्ली सरकारें किसानों के पराली जलाने को ही इसका बड़ा कारण बता कर अपनी कार्यप्रणाली को दुरुस्त करने की बजाए आरोप लगा कर ही बरी करने के प्रयास करती रही हैं लेकिन इस बार 15 नवम्बर को एक सुनवाई के दौरान इस आरोप को नकार दिया कि दिल्ली प्रदूषण में पराली जलाने से केवल चार प्रतिशत ही प्रभाव पड़ता है । सुप्रीम कोर्ट ने आदेश दिया कि इस पर जल्दी ही कार्य योजना बनाई जाए। गौरतलब है कि दिल्ली सरकार ने प्रदुषण के चलते स्कूलों कालेजों की छुटियां कर दी व निर्माण कार्यो पर रोक लगाई लेकिन कोई भी ठोस कार्यनीति बनाने की तरफ अभी तक कदम नही उठाए ।

जरूरत है कि मानव जाति को अपने को जीवित रखने के साथ ही अन्य जीव जंतुओं जो प्रकृति का अहम हिस्सा है उसके लिए विकास के नाम पर विनाश की अंधी दौड़ को खत्म करना होगा।

गुरमीत अम्बाला

दर्शनशास्त्र का स्वाल

-हेमराज स्टेनो

कई बार तो दर्शनशास्त्र का शब्द सुनते ही जन-साधारण को ऐसे लगता है कि इस को पढ़ना-समझना बुद्धिजीवियों के वश की ही बात हो तथा यह उनका ही काम हो अथवा उन्होंने दर्शन शास्त्र से क्या लेना है। परंतु दर्शनशास्त्र एक ऐसी चीज है कि जाने-अनजाने में हर कोई किसी न किसी रूप में किसी न किसी दर्शन को मानता हैं आओ, देखें कैसे ?

तर्कशीलों के पास अनेक प्रकार के केस आते हैं किसी के घर में कपड़ों को आग लग जाती है, किसी अन्य घर में कपड़े कट जाते हैं, किसी घर में खून के छींटे गिरते हैं। घर में कोई सदस्य अपना सिर घुमाने लग जाता है तो किसी अन्य घर का कोई सदस्य गुम-सुम पड़ा रहता है इत्यादि। जिन घरों में ऐसा कुछ घटित होता है, उनमें से बहुसंख्यक लोग इसे देवी, देवताओं का कोप, किसी प्रकार के भूत-प्रेत की छाया अथवा अपने ही परिवार के किसी मृतक सदस्य की भटकती हुई 'आत्मा' की गति का न होना समझते हैं।

यह दृष्टिकोण अपनाते ही वे इसके समाधान के लिए उस काल्पनिक शक्ति को 'प्रसन्न' कर के अपने गृह में से इस ग्रह (संकट) को दूर करने के लिए भंति-भंति प्रकार के ढंग-तरीके प्रयोग में लाते हैं-तंत्र-मंत्र का सहारा लेते हैं, पाठ करवाते हैं, दान-पुण्य करते हैं, किसी देवी-देवता की भेंटों का गायन करवाते हें। इन सब पर बहुत सा धन भी खर्च कर देते हैं। कई लोग तो अपने शरीर पर चिमटे अथवा सांकल बरसा कर कष्ट भी सहन करते हैं। यद्यपि ऐसे सभी क्रिया -कलापों से उन को कोई लाभ नहीं मिलता परंतु यह सब अभी तक चला जा रहा है।

जब वे लोग सभी ओर से थक हार कर तर्कशीलों के पास परामर्श के लिए आते हैं तो तर्कशील क्या करते हैं ? साधू-संतों, बाबाओं, तांत्रिकों इत्यादि के विपरीत सर्वप्रथम उनको विश्वास में लेते हैं, समस्या के सही कारण को ढूंढते हैं। मानसिक तौर पर पीड़ित व्यक्ति की समस्या को सुयोग्य समाधान प्रदान करते हैं, पीड़ित व्यक्ति को राहत मिलती है तथा घटनाएं बंद हो जाती हैं।

अब देखो, जहां पर परिवार वालों का इसे किसी दैवी शक्ति की 'क्रोपी' के तौर पर देखने वाला दृष्टिकोण था वहीं पर तर्कशीलों का दृष्टिकोण इसके पीछे कोई सामाजिक आर्थिक अथवा कोई अन्यकारण समझने का था। इसीलिए दोनों समस्या के समाधान के लिए ढंग-तरीके भी भिन्न-भिन्न अपनाए। इससे दृष्टिकोण के महत्व की आसानी से समझ आ जाती है।

अब यह देखते हैं कि प्रकृति, समाज एवं मानवीय चिंतन (संसार) को समझने एवं बदलने के लिए भी विश्व-दृष्टिकोण क्यों आवश्यक है ?

पहले प्रकृति के बारे में। प्रकृतिक तौर पर वर्षा होने के समय कई बार आसमानी बिजली गिर पड़ती है। इससे कई बार जान माल का नुकसान हो जाता हैं अधिक वर्षा होने के कारण बाढ़ आ जाने से भी ऐसा ही होता है। इसी प्रकार से अन्य प्रकृतिक घटनाएं भी घटती रहती हैं। इसलिए इन प्रकृतिक हानिकारक घटनाक्रमों को रोकने, कम करने अथवा इन से बचाव के लिए कोई प्रयत्न करने के लिए इन के पीछे कार्य कर रहे प्रकृतिक नियमों समझने की आवश्यकता है।

अब समाज के बारे में। कई कह सकते हैं कि संसार को समझने अथवा बदलने के झंझट में पड़ कर हम ने क्या लेना है, हम तो मौज-मस्ती करने वाले हैं। एक अच्छे कारोबार वाला व्यक्ति अपने एक मित्र को कहने लगा कि उसको क्या जरूरत है इस समाज को बदलने की, क्योंकि वह तो आनन्ददायक जीवन व्यतीत कर रहा हैं इस पर उसके दोस्त ने कहा कि वर्तमान में हमारे समाज में लूट-पाट की

घटनाओं का होना एक साधारण सी बात है। मान लो कि जब वह लाखों रुपयों की नकदी किसी बैंक में जमा करवाने के लिए जाता है और यदि उसका यह सारा पैसा कोई लूट कर ले जाए तो वह क्या करेगा? फिर उसने कहा कि ऐसे घटनाक्रम को तो रोकने की जरूरत है। फिर उसके दोस्त ने कहा कि बस, इसलिए समाज को समझने की आवश्यकता है, ऐसे समाज को बदलने की आवश्यकता है।

अब मानवीय चिंतन के बारे में। पहले पहल प्रायः यह कहा जाता था कि बहम-भ्रम का कोई इलाज नहीं। परंतु मानव की सोच में बहम-भ्रम क्यों पैदा होते हैं? इसके बारे में वर्तमान समय में कितनी ही खोज की जा चुकी है तथा तर्कशील कितने ही भूत-प्रेतों के भ्रम के शिकार इन्सानों को इन वहम-भ्रम से मुक्त करवा चुके हैं। परंतु इस बहम-भम्रम का समाधान तब ही संभव हो सकता जब मानव की सोच के अंदर बहम-भ्रम के उत्पन्न होने को समझा गया अर्थात् मानवीय चिंतन को समझा गया। इसलिए मानवीय सोच के पीछे कार्य करने वाले नियमों को भी समझने की आवश्यकता होती है।

तात्पर्य यह है कि प्रकृति, समाज एवं मानवीय, इस समूचे संसार को समझने एवं बदलने में अपना रोल निभाने के लिए विश्व के बारे में एक दृष्टिकोण का अपनाना एक आवश्यक शर्त है।

इससे आगे यह महत्वपूर्ण है कि यह दृष्टिकोण कैसा हो? खण्डित एवं गलत अथवा अखण्ड एवं सही, इस बाबत विचार करते हैं।

आप्रेशन करने वाले डॉक्टर की मिसाल लें। वह आप्रेशन अत्यन्त सफलता के साथ करता हैं क्यों? क्योंकि वह शरीर विज्ञान के नियमों को समझता है तथा इन नियमो का उचित प्रयोग करने में भी निपुण होता हैं इसलिए अप्रेशन करते समय वह वही सही दृष्टिकोण अपना रहा होता है। परंतु प्रायः यह भी देखा जाता है कि वही डॉक्टर अपने जीवन में भंडारे करवाते हैं ताकि उनके घरों में कोई विपदा न आ जाए, उनका पारिवारिक जीवन खुशहाल बना रहे। यहां पर आकर उसका किसी रोग को आने के कारणों को समझ कर दूर करने के स्थान पर किसी दिव्य शक्ति पर आश्रित रहने वाला दृष्टिकोण बन जाता है, अर्थात पहले वाला दृष्टिकोण खंडित हो गया तथा सही भी न रहा।

इस लिए प्रत्येक व्यक्ति का दृष्टिकोण अखण्डएवं सही होना जरूरी है; तब ही वह संसार को समझ सकता है, बदल सकता है तथा अपने हितों के अनुसार उसे ढाल सकता है।

अब आगे।

क्या भौतिक विज्ञान, जीव विज्ञान, रासायनविज्ञान, खगोल विज्ञान तथा इतिहास को पढ़ कर विश्व के बारे में एक अखण्डएवं सही दृष्टिकोण नहीं बनता? नहीं बनाता, क्यों नहीं बनता, आओ देखें। प्रसिद्ध भौतिक विज्ञानी न्यूटन के बारे में राधेश्याम तिवारी (दिल्ली) द्वारा लिखी गई कविता 'न्यूटन' नीचे प्रस्तुत की जा रही है, जो इस बिन्दू को स्पष्ट कर देती हैः

'न्यूटन ने यह
तो सोच लिया
कि सेब
वृक्ष पर से नीचे
क्यों गिरता है
परंतु
यह नहीं सोचा कि नीचे गिर कर भी
नीचे के लोगों को क्यों नहीं मिलता???

अर्थात भौतिक विज्ञानी होने के कारण न्यूटन ने यह तो खोज लिया कि पृथ्वी में गुरुत्वाकर्षण के कारण वृक्ष से फल नीचे गिरता है परंतु नीचे गिर कर भी समाज में रह रहे निम्न स्तर (अर्थात निर्धन) लोगों को क्यों नहीं मिलता। यह न तो उसकी खोज का क्षेत्र था और न ही इसके कारण उसकी खोज में इसका जवाब शामिल हो सका। क्योंकि सामजिक असमानता क्यों है, यह समाज विज्ञान का विषय है।

बस, इसी प्रकार खगोल विज्ञान नक्षत्रोंका, जीव विज्ञान वनस्पति, जीवों एवं मनपुष्यों के बारे में; इतिहास समाज में घटित हो चुकी घटनाओं के बारे में ज्ञान देंगे। परंतु इन विज्ञानों का ज्ञान अपने-अपने क्षेत्र का होगा। अतः विज्ञान किसी भी क्षेत्र का हो, वह अपने क्षेत्र का ही देगा न कि समूचे जगत का। अर्थात् ये समूचे जगत के बारे में एक अखण्ड एवं सही विश्व दृष्टिकोण नहीं दे सकते। हां, बेशक यह

ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है।

फिर यह सही संसार दृष्टिकोण कहां से प्राप्त हो? केवल दर्शन शास्त्र से? आओ देखते हैं कैसेः

दशर्नशास्त्र किसी एक क्षेत्र के नहीं बल्कि समस्त संसार के बुनियादी नियमों को दर्शाता हैं हम एक नियम का उदाहरण लेकर इस बारे स्पष्ट करते हैं। मार्क्सवादी फिलास्फी का एक नियम है-'विपरीतों की एकता और संघर्ष'। (Unity and struggle of the opposites) यह किसी भी विशेष क्षेत्र के विज्ञान का नियम नहीं है। यह आम एवं खास दोनों क्षेत्रों में कार्यशील है, विशेष सूक्ष्म कणों से लेकर विशाल आम आकारों तक। अब इसे लागू करके देखते हैं ताकि यह स्पष्ट हो सके कि यह समस्त विश्व में प्रत्येक वस्तु के अस्तित्व में होने तथा उसके परिवर्तित होकर कोई अन्य रूप धारण करने के पीछे कैसे कार्य करता है।

प्रकृति बारे। पहले इस नियम के प्रथम भाग 'दो विपरीतों के दरम्यान एकता' वाले भाग को लागू करके देखते हैं। मानव जीवन की ओर दृष्टिपात करो। मनुष्य जन्म लेता है, उसकी मृत्यु होती है। अर्थात् यहां पर जीवन एवं मृत्यु का घटनाक्रम है। इस में से किसी एक को समाप्त कर दो। मान लो हम मृत्यु को काट दें, फिर जीवन शब्द की कोई जरूरत ही नहीं रहेगी। इसी प्रकार यदि आप जीवन शब्द को काट दें तो फिर मृत्यु शब्द की कोई आवश्यकता ही नहीं रहेगी।

बस मानवीय घटनारक्रम भी 'जीवन और मृत्यु के दो विपरीतों' की एकता ही है। अब इसके दूसरे पक्ष 'विपरीतों में संघर्ष' वाले हिस्से पर लागू कर के देखो। हमारे मानव शरीर में दो प्रकार की प्रक्रियाएं चलती हैं 'रचनात्मक एवं विनाशकारी'। जब तक रचनात्मक प्रक्रिया हावी रहती है तो व्यक्ति प्रसन्न मुद्रा में रहता है परंतु जब विनाशकारी प्रक्रिया धीरे-धीरे प्रभावी होती चली जाती है तो व्यक्ति पर बुढ़ापा आ जाता है अथवा इस से पूर्व भी इसके पूर्ण रूप से हावी हो जाने पर इस की मृत्यु हो जाती है। अतः 'दो विपरीतों की एकता और संघर्ष' वाला नियम प्रकृति पर भी लागू होता है।

अब समाज बारे। समाज में दास प्रथा वाले युग की बात कर लो। उस समय दास-स्वामी मुख्य रूप में दो विरोधी वर्ग थे। यदि दास न होते तो दास-स्वामी हो सकते थे? नहीं। यदि दास-स्वामी न होते तो क्या दास हो सकते थे? फिर नहीं। इसलिए इस नियम का प्रथम भाग-'दो विपरीतों की एकता' वाला तो लागू हो गया।

अब इसी नियम के दूसरे भाग 'विपरीतों का संघर्ष' को लागू कर के देखें। परंतु गुलामों का शोषण होने के कारण उन का जीवन दुर्दशा वाला था। इस में से संघर्ष का जन्म लेना स्वाभाविक था। इस, इसी कारण से दासों ने विद्रोह किये। दासों एवं दास-स्वामियों के मध्य में संघर्ष हुए। इस से देखा जा सकता है कि इस नियम का दूसरा भाग 'विपरीतों का संघर्ष' पूरी तरह से फिट बैठता है।

अब मानव के चिन्तन पर लागू कर के देखते हैं। मनुष्य की चेतना में सकारात्मक एवं नकारात्मक विचार कार्य करते हैं। उनमें हमेशा संघर्ष होता रहता हैं जो विचार व्यक्ति की सोच पर हावी होता है वैसा ही उसका दृष्टिकोण होता है। दोनों विरोधी विचार परस्पर परिवर्तित होते रहते हैं। परंतु सही विचार विकास की ओर ले जाते हैं। यदि समाज के इतिहास पर दृष्टिपात किया जाए तो हम लाखों शहीदों की सूची देखते हैं। इन सभी के सामने भी साधारण लोगों की भांति अपना निजी जीवन जीने एवं सामूहिक जीवन के लिए अपना जीवन न्यौछावर कर देने का विरोध था। इसमें से यदि निजी जीवन जीने की सोच हावी होती तो उन्होंने भी आम लोगों की भांति जीवन व्यतीत कर लिया होता। परंतु उनके चिंतन के भीतर चल रहे विरोध में से वे अपने निजी सुविधाओं वाले जीवन का त्याग कर के समय की सरकारों के साथ टक्कर लेने का मार्ग अपना कर शहीद हो गये। उन्होंने सिर झुका कर जीने वाले जीवन को नापसन्द किया। क्यों? क्योंकि यह उनकी सोच ही थी कि ऐसा जीवन, वास्तव में कोई जीवन ही नहीं।

और उदाहरण देखें! शहीद भगत अपने आरम्भिक जीवन में एक आस्तिक सोच वाला व्यक्ति था, परंतु विशेष परिस्थितियों के अधीन उसकी सोच में एक संघर्षचला तथा वह आस्तिक से नास्तिक बन गया। यदि यह विरोध न चलता तो वह कभी भी

नास्तिक नहीं बन सकता था। इसके अतिरिक्त हम कई बार कह देते हैं कि 'मैं दुविधा में हूं;, यह किसी निर्णय पर पहुंचने के लिए हमारी चिंतन प्रक्रिया के चल रहे विरोध के हल न होने की स्थिति ही होती है। इसी प्रकार अनेक अनेक उदाहरण लिये जा सकते हैं। तात्पर्य यह है कि 'दो विपरीतों की एकता और संघर्ष' वाला नियम मानव के चिंतन पर भी लागू होता है।

इसी प्रकार की मार्क्सवादी फिलॉस्फी के दूसरे दो नियम मात्रात्मक से गुणात्मक परिवर्तन तथा निषेध का निषेध भी समूचे जगत् पर लागू होते हैं।

अतः दर्शन के दायरे में क्या-क्या आता है? प्रथम तो यह कि यह प्रकृति, समाज एवं मानव चिंतन से संबंधित सवालों को प्रस्तुत करता है; दूसरा यह इन सवालों का अध्ययन करता है। इसलिए दर्शनशास्त्र प्रकृति, समाज एवं मानव चिंतन के विकास के आधारभूत और सामान्य नियमों का विज्ञान है; तथा तीसरा, यद्यपि किसी को ज्ञात हो अथवा न हो परंतु प्रत्येक हर हालत में किसी न किसी दर्शन के अनुसार चल रहा होता है।

परंतु आगे यह प्रश्न उत्पन्न हो जाता है कि भिन्न-भिन्न लोगों के दर्शनों में इतना अन्तर क्यों होता है, उनके विचारों में इतना अन्तर क्यों होता है? यह आगामी लेख में देखेंगे।

(हिन्दी अनुवादः बलवन्त सिंह लेक्चरार)

मन न रँगाये, रँगाये जोगी कपड़ा

देखो, ये लौंडा अभी हवालात की हवा खा रहा है। कल तक नारंगी चोला पहन कईयों का पूजनीय था। जर, जोरू और जमीन का धंधेबाज था।

जहाजों में बैठ नारंगी रंग का मादक पेय पीता था, और एक बार कहीं विदेश में काम केलि करते धरा गया ।

कुछ भी अनुचित नही है । यहां तक कि भगवा कपड़े पहन कर भी यदि कोई दारू बाजी और छोकरी बाजी करे, तो मेरी नजर में वह भी अनैतिक नहीं। बशर्ते वह बलात्कार, छलात्कार और पाखंड न करे। सन्यास और ब्रह्म चर्य का ढोंग न करे। भगवा कपड़ा पहनने से किसी मर्द या औरत की काम लिप्सा खत्म नही होती। भूख, प्यास की तरह हर मनुष्य को सेक्स की सुरसुरी मचती है। उसे शांत करने का सभी को हक है ।

लेकिन ये पाखंडी बाबा अपनी मासूम भक्तिनों को निवाला बनाते हैं। माइयाँ मुस्टंडे लौंडे पालती हैं, और जब वे काबू से बाहर हो जाते हैं, तो उन्हें मरवा डालती हैं । हर पाखंडी प्रभाव शाली का यह सत्य है । हमारे गढ़वाल के एक सुंदर लड़के को दिल्ली की एक अधेड़ पत्रकारिणी, 2जिगर जारिणी अपने साथ ले गयी। कुछ साल बाद वह गायब हो गया। आज तक पता नही चला।

बाबा गण लड़कों को चेला बनाते हैं। फिर चेला गुरु के पांव दबाते दबाते एक दिन उसका गला दबा देता है।

हमारे राज्य में मल्टीनेशनल के खिलाफ आग उगलने वाला एक मल्टीनेशनल बाबा का गुरु कमसे कम तीन दशक से लापता है।

ठग, भोगी बाबाओं के फेर में न पड़ो । इन पर कड़ी नजर रखो , और इन्हें घर कभी न बुलाओ ।

-राजीव नारायण बहुगुणा

(किश्त2)

कमरअली दरवेश की पुकार

-डॉ.नरेंद्र दाभोलकर

महाराष्ट्र के पूना में तीस किलोमीटर दूर पूना-सतारा रोडपर खेड़ शिवपुर नाम का एक गांव है। उसके नजदीक ही मुड़कर अंदर आने पर 'कमरअली बाबा' का दरगाह नज़र आता है। यह सभीधर्म के लोगों के मेल-मिलाप का सील है। नाम है-'कमरअली दरवेश दरगाह'। कभी समचार-पत्रों में, कभी फिल्म डिवीजन के 'वृत चित्रों' से तो कभी दूरदर्शन की जगमगाहट से वह हमेशा सुर्खियों में रहता है।

दरगाह के सामने दो बड़े पत्थर हैं । बताया जाता है कि उसमें से एक नब्बे किलोग्राम का है, तो दूसरा साठ किलोग्राम का। पहले पत्थर को ग्यारह और दूसरे पत्थर को नौ लोग सिर्फ उंगली की मात्र नोक लगाएं और 'कमरअली दरवेश की जय' का नारा लगाए तो, ये पत्थर पंख जितने हल्के बन जाते हैं और उंगली लगाने वालों के सिर तक इन्हें आसानी से उठाया जाता है, और वह भी केवल हर एक की एक-एक उंगली के सहारे। पहले पत्थर के लिऐ ग्यारह और पत्थर के लिए नौ ही लोग होने चाहिए इसमें कोई कमीबेशी मान्य नहीं है। पत्थर उठाते समय कमरअली दरवेश का ही जयघोष होना चाहिए यह भी शर्त है। महिला द्वारा उंगली लगाना मना है। अनजाने में भी कोई महिला उंगली लगा दे तो बात बिगड़ जाती है।

'कमरअली' दरवेश' एक साक्षात्कारी फकीर थे। वे इस जगह पर कब और कैसे आए, इसका किसी को पता नहीं है। लेकिन उन्होंने किसी समय इस जगह के सारे भूत-प्रेत और पिशाच भगा दिए थे। सत्तर वर्ष की उम्र में उन्होंने समाधि ली। इस जगह पर दो राक्षस थे। फकीर ने उन्हें शाप दिया कि 'तुम पत्थर बनकर गिरोगे और लोग तुम्हें उठाकर पटक देंगे।'

फकीर के श्राप से राक्षस से पत्थर बनने की कहानी सुनकर भी कौतूहल न होता तो आश्चर्य होता। मुबई दूरदर्शन ने जून, 1987 में यह चमत्कार बिना किसी स्पष्टीकरण के दिखाया था। इसके बाद पत्थरों को शाप-मुक्त करने की जिम्मेदारी हमारे ऊपर आ गई। दरअसल इस संबंध में कई पत्रों में प्रकाशन और प्रतिक्रियाएं शुरू हो चुकी थीं। चमत्कार न होने की बात हम करते आये थे, इसलिए हमारे लिए इस मसले का भंडाफोड़ करने की चुनौती थी।

मैं, प्रा. आर्डे, श्री मंडपे, शिंदे, पागें, दयाला, बाबर-कुल सात कार्यकताओं ने यह चुनौती कबूल की। भिखारी, फूल-माला बेचने वाले तथा भक्तगणों के बीच से रास्ता निकालते हुए दस-बारह पत्थरों की सीढ़ियां चढ़कर दरगाह के फाटक से दरगाह के सामने आए। प्रवेश द्वार के दोनों ओर दो पत्थर थे। एक पत्थर कुरंड का (बालुकाश्म) और दूसरा काला (कणाश्म) का था। दोनों पत्थर गढ़ाए गए थे जिनका आकार बड़े प्रेशर कुकर जितना था। पत्थर का व्यास लगभग एकफुट लम्बाई भी एक फुट थी। पत्थर मुख्य दरगाह के बाहर था। प्रवेश्द्वार पर बोर्ड लगा थाः 'स्त्रियां को अंदर आना मना है।'

पत्थर के पास एक बौना युवक सिर परलाल रुमाल बांधकर खड़ा था। मैंने उससे पूछा, 'इस पत्थर को कैसे उठाते हें?'

'ग्यारह लोग पत्थर के नीचे तर्जनी लगाएंगे। एक सुर में जोर से जयघोष करेंगे-'कमरअली दरवेश की जय'। पत्थर कागद जैसा हल्का बनता है और उठाया जाता है।'

सामने वाले चबूतरे पर सिर पर लाल रुमाल बांधे कुछ सामान्य लोग तथा मुल्ला-मौलवी थे। उनमें से तीन-चार लोग आगे आए। पूछने लगे कि 'देखना है?' हमारे द्वारा सिर हिलाते ही बोले, 'आओ भाई।' हम सात लोग थे और वे चार। उनके कहने के अनुसार दाएं हाथ की तर्जनी पत्थर को लगाई। भरोसा करने के हेतु उन्होंने फिर एक बार उंगलिया गिनाई। ग्यारह ही थी।। फिर एक ही दम में आवाज दी-'कमरअली दरवेश की जय'। पत्थर जैसे-तैसे आधा फुट ऊपर उठ गया और एक ओर लुढ़क गया। फिर एक बार फिर जोर से इन्हीं लोगों ने यही प्रयोग किया, लेकिन पत्थर आधे फुट से ऊपर नहीं जा सका। मंझे हुए भक्तगण सकते में आ गए और अचानक उन्हें एक तरकीब सुझी। 'अरे बाप रे! ये सारे अतिथि तो पैरों में चप्पल पहने हुए

ही पत्थर को छू रहे हैं।' फिर हमें 'जूते-चप्पल निकालने' का हुक्म दिया गया। हमने चप्पल-बूट निकाले। फिर एक बार सभी ने तर्जनी लगाकर कमरअली अली का जयघोष किया लेकिन परिणाम पहले जैसा ही निकला। थोड़े मायूस होकर सिर पर रुमाल बांधे लोग दूसरी तरफ चले गए। अपने औलिया फकीर की ताकत आज काम क्यों नहीं कर रही है, इस बात की पहेली में वे उलझे रहे।

असल में इसमें पहेली जैसा कुछ था ही नहीं, क्योंकि केवल उंगली लगानी है, ताकत नहीं, ऐसा निर्णय करने के कारण बेचारा कमरअली क्या करता ?

हम आगे बढ़े। दरगाह पर आए। हम जैसे चार मेहमानों को बुलाकर उंगली लगाने को कहा गया। जयघोष किया गया। देखते-देखते पत्थर कंधे जितना ऊपर उठ गया। उसे नीचे रेती में फेंक दिया गया। रुमालवाले लोगों के चेहरे पर खुशी छा गई। अब धीरे-धीरे भीड़ हमारे आस-पास इकट्ठी हो रही थी। कमरअली दरवेश का नाम लेकर पत्थर उठाने की बात हमने जाहिर की।

हमारी बात सुनकर एक ने हमें फटकारा, 'परसों कोल्हापुर के पहलवान लोग आए थे। उन्होंने भी इसी प्रकार का प्रयास किया मगर सफल नहीं हुए। आसान काम नहीं है यह।'

'देखेंगे, प्रयास करने में क्या हर्ज है ?' हमारे कार्यकर्ता मंडपे जी ने कहा। फिर एक बार हम सभी ने पत्थर के नीचे उंगलियां डालकर 'महात्मा फुले की जय' का घोष किया और पत्थर को कंधे तक उठाकर धम से नीचे फेंक दिया।

भीड़ में कुलबुलाहट शुरू हुई। हमने फिर एक नई तरकीब निकाली। ग्यारह लोग ही क्यों ? एक बार दस और एक बार बारह लोगों को उंगलियां लगाने को कहा गया और पत्थर करीबन सिर तक ऊपर उठ गया। नजदीक वाले पत्थर पर भी नौ के बदले आठ और दस लोगों को बुलाकर इसी प्रकार के प्रयोग किए गए।

अब तक माहौल काफी गरम हो चुका था। दरगाह पर आई दो महिलाएं बड़ी जिज्ञासा से बहुत समय से यह सब देख रही थीं। उन्होंने जिज्ञासावश हमसे पूछा, 'क्या हम उंगली लगा सकती हैं ?'

सच तो यह है कि महिलाएं उस पत्थर को स्पर्श न करें, यह उस स्थान का पवित्र संकेत था। धार्मिक स्थलों पर ऐसे नियमों का पालन भक्त आंख मूंद कर करते हैं और उनका आग्रह भी रहता है कि दूसरे भी ऐसा ही करें। इन नियमों का जाहिर उल्लंघन करना खतरे से खाली नहीं रहता। इसके गंभीर परिणामों की भी संभावना रहती है। लेकिन अब ऐसा समय आ चुका था कि हम पीछे हटने वाले नहीं थे। परिस्थिति और अपने आत्मविश्वास के बल पर हमने उनसे कहा, 'क्यों नहीं! बेशक!'

दो महिलाएं, अन्य चार लोग और हमारे चार कार्यकर्ताओं ने पत्थर के नीचे तर्जनियां लगाकर सीधे 'बोलो-एक, दो, तीन' की आवाज लगाई। देखते-देखते पत्थर ऊपर उठ गया। उन दोनों का इतराया हुआ चेहरा देखने लायक था। अब ध्यान में आया कि पत्थर उठाने के पीछे के कार्य-कारण भाव समझने पर चमत्कार लुप्त हो जाता है। वहां से बाहर निकलने के हेतु हमने पैरों में चप्पल और बूट डाले और हमारे ध्यान में आया कि एक बात तो रह ही गई है। फिर हमने चप्पल पैर में डालकर ही दोनों पत्थरों से उंगलिया लगाईं।, उन्हें ऊपर उठाया और धप् से नीचे छोड़ दिया।

पत्थर के नीचे उंगली लगाकर बल लगाया जाता है। सभी दिशाओं से बल लगने के कारण पत्थर हिलता नहीं और उस पर मजबूत पकड़ बैठती रहती है। एक ही सुर में चिल्लाने एक ही समय बल लगाने की सूचना सभी को मिलती। बड़ी-बड़ी वस्तुएं, पेड़ के तने जगह से हिलते समय और इमारतों पर टंकियां पहुंचाते हुए मजदूर लोग 'जोर लगाके हैया' कहते हुए हम देखते ही हैं। सभी ओर से लगाए बल के परिणामस्वरूप पत्थर उठाया जाता हैं जमीन से उठाते समय उंगली को ज्यादा बल लगाना पड़ता है। एक बार पत्थर ऊपर उठाने पर सारा बल कलाई और उसके पीछे की कोहनी के स्नायु पर आता है, जिससे पत्थर को ऊपर उठाने में आसानी हो जाती है।

फकीर द्वारा पत्थर बनाए गए राक्षसों का क्या हुआ, पता नहीं लेकिन अंधविश्वास की लाट बने उन पत्थरों को फेंकते समय लग रहा था कि बहुसंख्यकों के सिर पर बैठे अंधविश्वास के राक्षस को हम ऐसे कब फेंक सकेंगे ?

-लेखक की पुस्तक 'अंधविश्वास उन्मूलन-आचार'' से

नारी उत्पीड़न

-आर.पी.गांधी

9900 वर्ष पहले धरती के मानव ने तांबे की खोज कर ली थी। वह पाषण युग से बाहर आ रहा था। उसने अपने तीर की नोक तांबे की धातु से बनानी शुरू की। उससे पहले वह इस काम के लिए हड्डी या पत्थर का इस्तेमाल करता था। परन्तु तांबा नरम धातु होने के कारण आगे से मुड़ जाता था। जब मानव ने जस्त की खोज कर ली थी तो तांबे में 20% जस्त मिलाकर पीतल का निर्माण किया। पीतल तांबे से ज्यादा कठोर मिश्र धातु है जबकि अभी भी मानव प्रकृति के सहारे ही जी रहा था। किसी भी प्रकार का कोई निर्माण कार्य नही करता था। जंगलो से जो कुछ भी उसको उपलब्ध हो जाता था तथा जानवरों का शिकार ही उसकी खुराक थी। तब यह छोटे-छोटे कबीलों की शक्ल में रहता था। उस समय पति पत्नी का रिवाज न होकर नर और मादा का रिश्ता था जैसा कि बन्दरों में पाया जाता है। इसलिए बच्चों की पहचान मां के नाम से होती थी। रामायण और महाभारत काल तक ऐसा ही होता रहा। बच्चो को उनकी माता के नाम से ही पुकारा जाता था जैसे गंगा-पुत्र,गान्धारी-पुत्र, देवकीनन्दन, कुन्ती-पुत्र, अंजलि-पुत्र आदि। कबीला-वाद के बाद जब सामन्त-वाद शुरू हुआ तब बहु-पत्नी रिवाज बन गया। पुरुष ने शारीरिक बल होने के कारण नारी को अपनी दासी बना लिया। यहीं से नारी का उत्पीड़न शुरू हुआ। विष्णु के चित्रों अथवा मूर्तियों में लक्ष्मी विष्णु के पांव दबाती हुई दिखाई जाती है। रामायण में सीता के मुंह से यह कहलवाया जाता है 'स्वामी मैं आपके चरणों की दासी हूं'। वह अपने पति को आर्य-पुत्र कह कर सम्बोधन करती है तथा मांग करती है कि मुझे अपने चरणों में जगह दे दो। सतं तुलसीदास अपनी रामायण में अयोध्या-कांड़ में अयोध्या का दृश्य-वर्णन करते हुए कहते हैं अयोध्या-वासियों के पास चन्दन, कुन्दन, फल-फूल और नारियां सभी ऐश्वर्य के साधन थे। इससे आसानी से अनुमान लगाया जा सकता है कि नारी को भोग-विलास की वस्तु समझा गया है। आगे चल कर अयोध्या-कांड में तुलसी दास जी कहते हैं- पति चाहे जैसा भी हो नारी का कर्तव्य है, उसकी सेवा करना। अगर वह ऐसा नहीं करती तो उसे भरी जवानी में विधवा होना पड़ेगा। यह कहकर मानसिक दासता तथा भय पैदा करने का प्रयत्न किया गया है। ताकि मर्द की दासी बनी रहे। लकां-कांड़ में तुलसी दास जी फरमाते है जब लक्ष्मण मूर्छित हो गए तब राम के मुंह से यह कहलवाया गया है 'अगर मुझे यह पता होता कि मेरे भाई की यह दशा होनी है तो मै बदनामी को सह लेता पर युद्ध न करता। ऐसे ही तुलसी दास जी पुरुष को समझाते हुए लिखते है। 'ढोर, गंवार, शूद्र और नारी' ये सब ताड़न के अधिकारी' इससे भी पुरूष-प्रधानता को आसानी से समझा जा सकता है। भागवत-पुराण में श्री कृष्ण की सोलह हजार एक सौ आठ पत्नियां बताई गई है। राजा जरासंध की सत्रह हजार पत्नियां बताई गई हैं। मुगल काल में अकबर की पांच हजार बेगमों का जिक्र मिलता है। नवाब आसफुल दौला की भी हजारों की सख्या में बेगमें थी। जब उसे कलकता में अंग्रेजो ने नजरबंद कर रखा था तब भी उसके पास चार बेगमें थी। इस्लाम में इस्लामी शरीअत के अनुसार एक आदमी चार औरतें रख सकता है। अरबी शेख आज भी अपने हरम में कई-कई औरतें रखते हैं। बूढ़े शेख निकाह के नाम से जहां भी मिले मेहर के मां-बाप को कुछ पैसे देकर उनकी नाबालिग बच्चियों को ले जाते हैं। ऐसी लड़कियों की मानसिक दशा का आसानी से अनुमान लगाया जा सकता है जो न तो शेख लोगों की भाषा और संस्कृति को समझती हैं और न ही उनकी जीवन शैली को। एक बार हैदराबाद की एक तेरह वर्षीय आमना नाम की लड़की को 65 वर्षीय शेख के साथ साथ पकड़ा गया था। लड़की बिलख-बिलख कर रो रही थी। इस पर

जहाज की परिचारिका ने उस लड़की को शेख के चंगुल से छुड़ाया और मामले की जानकारी पुलिस को दी। नारी-उत्पीड़न के इस तरह के किस्से पढ़ने और सुनने को मिलते हैं। आज भी नेपाल, बिहार आदि राज्यों से लड़कियां लाकर पंजाब, हरियाणा आदि राज्यो में बेची जाती हैं। एक बार भारत और नेपाल के सम्बन्धों में कुछ कमी आ गई परन्तु तब भी लड़कियों का क्रय-विक्रय चलता रहा। नेपाल की आर्थिक बदहाली के कारण गरीब मां-बाप पैसे के लालच में अपनी लडकियां बेच देते हैं। भारत और नेपाल सीमा पर जो लड़की दो हजार में बिकती है, कानपुर आकर उसकी कीमत बीस हजार हो जाती है। और मुम्बई पहुंच कर उसी की कीमत साठ हजार बन जाती है। पिछले दिनों पुलिस के छापे के दौरान वेश्यालयों में बहुत सारी नेपाली लड़कियां बरामद की गई थी परन्तु नेपाल सरकार ने इन नेपाली लड़कियों को लेने से इनकार कर दिया था।

ऐसे ही देवदासी प्रथा के यघ्यपि सरकार ने गैर कानूनी करार दिया है परन्तु आज भी कर्नाटक राज्य में बेलगाम के स्थान पर दलित जाति की लड़कियों को जब उनकी आयु 12-13 साल की होती है उनको उलमा देवी 'जगत मां' के साथ शादी कर दी जाती है। लड़की की औरत के साथ शादी कितनी अटपटी सी लगती है। इन लड़कियों को मुम्बई और पुणे के दलाल नौकरी के नाम पर ले जाते हैं। और वहां जाकर कोठों पर बेच दिया जाता है। ऐसी लड़कियां जिनकी जिन्दगी मन्दिरों से शुरू होती है 35 वर्ग की आयु में तरह-तरह के घातक रोगों से पीड़ित हो जाती हैं और तड़प-तड़प कर मौत का ग्रास बन जाती है। फिल्म 'गिद्ध' में इन्हीं देवदासियो की कहानी को बड़ी खूबसूरती से फिल्माया गया है। इस तरीके से पटेल और सरमायेदार अपनी काम-तृप्ति के लिए देवदासियों का प्रयोग करते है। फिल्म की नायिका स्मिता पाटिल और नायक ओम पुरी ने अपने अभिनय द्वारा समय की सच्चाई को बहुत ही सुन्दर ढंग से उजागर किया है। ऐसे ही आन्ध्र प्रदेश में गरीब लोग अपनी बेटियों को गांव के देवता से व्याह देते हैं। जिनके पास अपनी कोई जिन्दगी नहीं रह जाती। वे नगर वधु कहलाती हैं। जिन्दगी में उनको अनेक कठिनाइयों से दो-चार होना पड़ता है। लावारिस होने की वजह से वे पुरूषों की कामवासना का शिकार बनती हैं। कहने को तो हम 70 वर्ष से स्वतन्त्र है परन्तु समाज में आज भी कितनी ही कुरीतियां पनप रही हैं। लाखो-करोड़ों महिलाएं अपना शरीर बेचकर जिन्दा रहने के लिए विवश है। हर प्रकार का जुल्म और ज्यादती सहने के लिए बाध्य होना पड़ता है।

हमारी फिल्में और टी.वी. सीरियल कितनी ही अश्लीलता समाज में परोस रहे हैं। उसी का नतीजा है ये बढ़ते हुए बलात्कार केस। बाजार में अश्लील पुस्तको की भी कमी नही है जो नारी को भोग वस्तु से ज्यादा महत्व नहीं देती।

आज हमारा विधान नारी को बराबर का अधिकार तो देता है परन्तु पुरुष को समाज जो बुरी तरह से हावी है नारी को उसके अधिकारो से वंचित रखने का प्रयास करता रहता है। कई जगह स्वयं नारी अपने रिश्तों को बनाए रखने के लिए त्याग का सबूत देती है। उदाहरण के लिए मां-बाप की सम्पति पर भाई-बहनों का बराबर का हक होता है लेकिन व्यवहार में वह अपने हिस्से को भाईयों को दे देती है ताकि भाई-भाभियों के साथ सम्बन्ध बने रहे।

आर्थिक निर्भरता भी महिलाओं के लिए कठिनाई पैदा करती है। शराबी आदमी प्रायः अपनी पत्नियों पर रौब डालते पाए जाते हैं कि मेरी अपनी कमाई है। मैं चाहे जैसे प्रयोग करूं तू मुझे मना नही कर सकती।

अतीत में भी नारियों को पुरुष समाज की ओर से किए गए जुल्मों का शिकार होना पड़ा। जैसे महाभारत में द्रोपदी को पांच पतियों की पत्नी बनकर जिन्दगी काटनी पड़ी। अनुसुइया को स्वयं को पतिव्रता सिद्व करने के लिए कोढ़ी पुरूष का बोझ ढ़ोना पड़ा। सावित्री को अपने पति सत्यवान को जीवित करने के लिए यमराज की खुशामदें करते दर्शाया गया है। ऐसे ही ऋषि गौतम की पत्नी अहल्या को इन्द्र द्वारा बलात्कार सहना पड़ा। गौतम ने अहल्या को श्राप देकर पत्थर बना दिया जिसको एक लम्बे समय तक राम के चरणों के स्पर्श की

प्रतीक्षा करनी पड़ी। इस कहानी का वर्णन रामायण में मिलता है। जालन्धर को मारने के लिए विष्णु ने जालन्धर की पत्नी वृन्दा से बलात्कार किया, कारण वृन्दा को वर मिला हुआ था कि जब तक उसका सत् भंग नहीं होता उसके पति को कोई नहीं मार सकता। उसका सत् भंग होने के बाद शिव ने जालन्धर को मार दिया। बृहस्पति ने अपनी भाभी ममता के साथ बलात्कार किया। कपालमोचन की कहानी में ब्रहा का जिक्र आता है जिसमें वर्णन है कि ब्रहा स्वयं अपनी पुत्री सरस्वती पर बुरी दृष्टि रखने लगा था जिससे शिव ने क्रोधित हो ब्रहा का कपाल मोचन कर दिया था। अब बिलासपुर के पास कपालमोचन का बहुत बड़ा मेला लगता है। वहां पर बने तालाब अमृत सरोवर जिसमें गाय-बछड़े को उस सरोवर से पार होते देखा तो शिव-पार्वती भी उनको देख ब्राह्मण हत्या का दोष दूर करने के लिए उस सरोवर को पार करने गए। ब्रहा के इस दोष के कारण पूरे देश में पुष्कर राज के अतिरिक्त और कोई मन्दिर नहीं। इस तरह की कहानियां हमें अपने इतिहास और मिथ्या इतिहास में पढ़ने को मिल जाती है। अपने को विकसित देश कहने वाले इंग्लैड देश में भी नारी को लम्बे समय तक वोट देने का अधिकार न था। तब एक महिला ने स्वयं को एक चेन से बांध ताला लगा कर चाबी कहीं दूर फैक दी और नारी के वोट देने के समर्थन में नारे लगाने शुरू किए। इस घटना के पीछे उसका एक ही उद्देश्य था कि मैं नारी के अधिकारों के लिए ज्यादा से ज्यादा देर तक आवाज बुलन्द कर सकूं।

इन दिनों माडलिंग के जमाने में नारी के ज्यादा से ज्यादा वस्त्र उतरवाए जाते हैं। जरा आप ही सोचिए सीमेटं के विज्ञापन में नारी की क्या आवश्यकता है। नारी को बहुत कम वस्त्रों में तालाब के पानी से बाहर निकलते हुए दिखाया गया है। हर प्रकार की वस्तु के प्रचार के लिए भले ही वस्तु से नारी का दूर का भी सम्बन्ध न हो फिर भी नारी को उस वस्तु के विज्ञापन के लिए कम से कम वस्त्रों में दिखाया जाता है जिससे यह सिद्ध होता है कि महिला एक मां, बहन, बेटी और पत्नी न होकर एक बाजारू वस्तु है। सुन्दरता के मुकाबलों में बहुत कम वस्त्रों में नारी की देह का प्रदर्शन किया जाता है। इन बातों का ही परिणाम है कि समाज में नैतिक पतन बढ़ रहा हैं। और बलात्कार की भयावह घटनाएं घट रही है। एक और नारी हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही है वह कई जगह पुरूषों को भी पछाड़ रही है। खेल क्षेत्र में भी नारी अपनी श्रेष्ठता दिखा रही है।

इस वैज्ञानिक युग में भी नारी को एक वस्तु की तरह खरीदा और बेचा जाता है। इसके कई उदाहरण मिलते हैं। इससे दास युग की बात ताजा हो जाती है। यहां तक कि सतयुग की कहानी के अनुसार राजा हरिशचन्द्र भरी मंडी में बिके और उनकी पत्नी और बच्चा भी बेच दिया गया। जब भी कोई राजा अपनी बेटी की शादी करता तो कितनी ही दासियां दहेज के रूप में दे दी जाती जिनका अपना कोई जीवन न होता। इस तरह की लड़कियां दरबारियों या राजाओं की हवस का शिकार होती। हमारे देश के प्रसिद्व लेखक मुशीं प्रेमचन्द की कहानी रूठी-रानी में भी इसी प्रकार का वर्णन मिलता है। आज संविधान नारी को पुरूष के बराबर अधिकार तो देता है परन्तु नारियां अपने मायके से अच्छे रिश्ते बनाए रखने के लिए अपने अधिकारों को प्रयोग में नहीं लाती। इसका एक कारण नारी की पुरातन मानसिक दासता भी है। अब समय आ गया है कि पुरूष समाज को भी यह सोचना चाहिए कि देश का लगभग आधी आबादी नारी जाति को उनको अधिकारों से वंचित न किया जाए। अगर हम सशक्त राष्ट्र का निर्माण करना चाहते हैं तो हमें नारी को भी समान अधिकार देने होंगे। संसद में भी महिला आरक्षण सम्बन्धी बिल काफी समय से लम्बित है। अब जब नारी समाज के हर क्षेत्र में आगे आ रही है तब हम नारी को चौके-चुल्हे तक सीमित नहीं रख सकते। पंचायतों में महिलाओं का पंच, सरपंच तो बना दिया जाता है परन्तु इनकी जगह काम पति करता है। इसके लिए महिला समाज को आर्थिक, मानसिक और राजनीतिक स्वतन्त्रता देनी आवश्यक हो जाती है।

★★★

कमाल का व्यक्ति था कमालपाशा

-राजपाल सिंह
मो. 9876710809

इस्लामिक देश हो, इस्लामिक देश भी वह जिसक मुखिया को सारी दुनिया के सुन्नी मत वाले मुस्लमान अपना खलीफा (पैगम्बर का उत्तराधिकार) मानते हों, ऐसे देश में मुखिया की पदवी प्राप्त करने वाला व्यक्ति लन केवल खुद ही सारे मुस्लमानों के धार्मिक सिरमौर होने का रुतबा त्याग दे, बल्कि 99 प्रतिशत मुस्लिम आबादी वाले देश को धर्म निर्पेक्ष देश घोषित कर दे, ऐसा कारनामा कोई कमाल का व्यक्ति ही कर सकता है। फिर यह धर्म निर्पेक्षता भी ऐसी-वैसी नही कि बस घोषणा कर दी अथवा हमारे देश की भांति संविधान में दर्ज कर दिया कि यह देश सैकुलर है। उसने वास्तव में बहुत बड़े परिवर्तन लागू किये। सभी धार्मिक न्यायालय खत्म कर दिये, धार्मिक संस्थाओं द्वारा चलाए जा रहे स्कूल बंद कर दिया, धार्मिक मंत्रालय समाप्त कर दिया, इस्लामिक कैलेंडर के स्थान पर शेष विश्व में प्रचलित कैलेंडर लागू कर दिया, शुक्रवार के स्थानन पर रविवार को अवकाश का दिन बनाया, महिलाओं के हिज़ाब पहनने पर पाबन्दी लगा दी, लिखने के लिए अरबी लिपि के स्थान पर रोम लिपि लागू कर दी, अर्थात् धार्मिक कट्टरपन, पिछड़ापन तथा विकसित दुनिया से अलग रखने वाली प्रत्येक चीज पर पाबंदी लगा दी।

क्या आप जानते हें कि ऐसा कहां पर हुआ और धर्म की जकड़न को तोड़ने के लिए इतने बड़े क्रांतिकारी कदम उठाने वाला यह शख्स कौन था?

ऐसा घटित हुआ था लगभग 100 वर्ष पूर्व तुर्की में, तथा यह कदम उठाने वाला व्यक्ति था मुस्तफा कमाल पाशा। उसके नाम के साथ 'कमाल' शब्द ऐसे ही नहीं शामिल हुआ था अथवा यह नहीं कि उसने अपने नाम को सार्थक करने के लिए यह कार्य किये बल्कि उसकी विलक्षण योग्यता के चलते ही उसे कमाल नाम मिला था। हिन्दी एवं पंजाबी में जो हम 'कमाल' शब्द का प्रयोग करते हैं, यह मूलरूप में तुर्ी भाषा का शब्द है। मुस्तफा कमालपाशा का वास्तविक नाम तो अली रजा मुस्तफा था, परन्तु बचपन में ही उसकी विशेष योग्यता के कारण उसके गणित के अध्यापक ने उसे 'कमाल' के नाम से बुलाना शुरू कर दिया कि तुम तो कमाल ही हो। बाद में सेना का नेतृत्व करते समय उसके सम्मान में 'पाशा' शब्द भी जुड़ गया। अत' इतिहास में अली रज़ा मुस्तफा के स्थान पर कमालपाशा अथवा कमालपाशा अतातुर्क के नाम से जाना जाता है। (अतातुर्क का अर्थ है 'तुर्की का पितामा')

मुस्तफा कमाल का जन्म 1881 में हुआ तथा किशोरावस्था में ही वह मिल्ट्री एकाडमी से ट्रेनिंग प्राप्त कर के सेना में भत्ी हो गया। सेना में उसने कमांडर के तौर पर अपनी काबिलियत का प्रकटावा करते बहुत नाम कमाया। तुर्की उस समय अत्यन्त विशाल साम्राज्य था, जिसे ओटोमन साम्राज्य के तौर पर जाना जाता था। प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान ओटामन साम्राज्य जर्मनी की ओर था जिन्हें धुरी शक्तियां अथवा अक्ष शक्तियां (axis powers) कहा जाता था। मुस्तफा कमाल ने इस विश्वयुद्ध में बहादुरी दिखाई तथा एक योग्य कमांडर के तौर पर प्रसिद्ध हुआ। विरोध में लड़ रही इंगलैंड की सेना का आफिसरों का भी यह मानना था कि मुस्तफा कमाल जहां पर कमांड कर रहा होता था, तुर्की की वह सेना कभी नहीं हारी थी। 1915 में उसके नेतृत्व में तुर्की की सेना ब्रिटिश एवं फ्रांसीसी सेनाओं को इस्तांबुल (तुर्की की पहली राजधानी) पर कब्जा करने से रोकने में सफल रहीं थी। इससे उसे बहुत सम्मान मिला।

प्रथम विश्वयुद्ध में ओटोमन साम्राज्य के पराजित हो जाने के उपरान्त विजयी मित्र राष्ट्रों-ब्रिटेन एवं फ्रांस ने इस साम्राज्य द्वारा अपने अधीन किये गये हिस्सों को आपस में बांट लिया। युद्धोपरांत हुई संधि के द्वारा तुर्की में यद्यपि सुल्तान की सत्ता कायम रखी गई परंतु इस में ब्रिटेन का अत्यधिक

हस्तक्षेप रहता था। इसके विरूद्ध कमालपाशा ने तुर्की में राष्ट्रीय आंदोलन शुरू कर दिया। सेना में ऊंचे पद पर होने एवं विश्व-युद्ध में नाम कमाने के कारण उसका जनता में काफी प्रभाव था। जब ब्रिटेन को लगा कि तुर्की का राष्ट्रीय आंदोलन तुर्की को उसके हाथ से निकाल सकता है तो उसने सीधी कार्रवाई करके कुछ नेताओं को गिरफ्तार कर लिया और पूरी तरह से अपनी कठपुतली सरकार वहां पर कायम कर दी। इस कठपुतली सरकार ने कमालपाशा एवं राष्ट्रीय आंदोलन के अन्य नेताओं को काफिर घोषित कर दिया तथा प्रचार करवा दिया कि सच्चे मुस्लमानों को बागियों का साथ नहीं देना चाहिये (जैसे कि हमारे देश में गदर लहर के योद्धाओं के बारे में कहा गया था कि सच्चे सिखों को उनका साथ नहीं देना चाहिये)। इसके जवाब में कमालपाशा ने ऐलान कि किया तुर्की की वास्तविक सरकार अंकारा में है। उसके कठपुतली ही है।

राष्ट्रीय आंदोलन को दबाने के लिए पहल ेतो सुल्तान ने अपनी निजी सेना भेजी परंतु उसमें से अधिकतर सैनिक बागियों के साथ मिल गये। यह देखकर ब्रिटेन ने अपनी सेना भेजनी चाही परंतु ब्रिटेन के लोग विश्वयुद्ध लड़कर हटे होने के कारण इस बात के पक्ष में नहीं थे। अतः ब्रिटेन ने यूनानी सेना को आगे किया।

दूसरी ओर कमाल ने सोवियत रूस से सहायता ली। उसने 16 मार्च 1921 को सोवियत रूस के साथ मैत्री संधि की, यद्यपि उस समय न तो मुस्तफा कमाल की सरकार तथा न ही लेनिन की सोवयित सरकार को दुनिया के अन्य देशों के द्वारा मान्यता प्राप्त हुई थी। यद्यपि रूस में कम्युनिस्ट सरकार को स्थायित्व प्राप्त नहीं था और गृह-युद्ध में उलझी हुई थी परंतु उसने तुर्की के राष्ट्रीय आंदोल की हथियारों एवं अन्य साधनों के रूप में काफी सहायता की थी। कमाल पाशा के नेतृत्व में तुर्कीं के राष्ट्रीय आंदोलन को विजय प्राप्त होती गई और 29 अक्तूबर 1923 को ओटोमन साम्राज्य की राख में से तुर्की का जन्म हुआ, जिसका प्रथम अघ्यक्ष मुस्तफा कमाल पाश बना।

राष्ट्रीय आंदोलन के सफल होने एवं राष्ट्राध्यक्ष बनने के उपरान्त कमाल पाशा ने देश को पिछड़ेपन में से निकालने एवं अपने देश को आधुनिक स्तर पर लाने के लिए वे सभी कदम उठाये जिनका लेख के प्रारम्भ में ज़िक्र किया गया है। प्रथम असेम्बली में उसके पक्ष में 197 सदस्य थे तथा प्रतिपक्ष के सदस्यों की संख्या 118 थी जो उसकी धर्म से संबंधित नीतियों के खासतौर पर विरोधी थे। परंतु बाद के चुनावों में उसनेसभी विरोधियों को बाहर कर दिया औार असेंबली में अधिकतर यूनिवर्सिटी स्तर तक शिक्षित तथा भिन्न-भिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ बड़ी संख्या में शामिल कर लिये। ये नये नेता तुर्की के अनपढ़ लोगों की सोच से भिन्न दृष्टिकोण रखते थे। अन्त में उनहोंने लोगों की सोच एवं तुर्की की सारी व्यवस्था बदल दी। इसी कारण यह कहा जाता है कि वे ऊपर की तरफ से क्रांति को लेकर आए।

तुर्की को पिछड़े विचारों और रूढ़िवादी धार्मिक जीवन-मूल्यों में से निकाल कर प्रगअति के पथ पर डालने में कमाल पाशा को काफी सफलता मिली। 10 नवंबर 1938 को उनका देहान्त हो गया। वर्तमान शासकों के द्वारा यद्यपि कुछ प्रतिगामी कदम उठाए गये हैं परंतु तुर्की के लोगों की सारेच एवं वहां की व्यवस्था में जो पद चिन्ह कमालपाशा ने डाल दिये हैं, उलनको मिटाया नहीं जा सकता।

-हिन्दी अनुवाद : बलवन्त सिंह लेक्चरार

ेतुर्की की घटनाओं से भारत का संबंध

ओटोमन साम्राज्य (तुर्की) का सुल्तान क्योंकि सारी दुनिया के मुस्लमानों का खलीफा, अर्थात् राजनीतिक एवं धार्मिक नेता माना गया था। इसलिये जब इसका युद्ध ब्रिटेन वाले पक्ष के साथ छिड़ गया तो सभी मुस्लमानों में अंग्रजों के प्रति रोष उत्पन्न हो गया। खासतौर पर जब ओटोमन साम्राज्य ब्रिटेन-फ्रांस पक्ष की सेनाओं से पराजित हो गया तो विजेता पक्ष ने इसके अधिपत्य वाले इलाके इस से तोड़ दिये। इससे मुस्लमानों को लगा कि उनके खलीफा की ताकत को खत्म किया जा रहा है। यह

शेष पृष्ठ 16 पर

मजदूरी व्यवस्था

-फ्रेडरिक एंगेल्स'

एक लेख में हमने इस समयसिद्ध उक्ति पर विचार किया था, 'काम के उचित दिन की उचित मजदूरी', और इस निष्कर्ष पर पहुँचे थे कि वर्तमान सामाजिक अवस्थाओं में काम के दिन की सबसे उचित मजदूरी अनिवार्य रूप से मजदूर के उत्पाद के सबसे अनुचित बँटवारे के समान होती है, उस उत्पाद का बड़ा हिसा पूँजीपति की जेब में जाता है, और मजदूर को उतने से ही गुजारा करना पड़ता है, जितने से वह खुद को काम करने लायक बनाये रख सके और अपनी नस्ल को बढ़ा सके।

यह राजनीतिक अर्थशास्त्र का एक नियम है, दूसरे शब्दों में, समाज के वर्तमान आर्थिक संगठन का एक नियम है, जो कि कोर्ट ऑफ चांसरी सहित इंग्लैंड के सभी सामान्य और वैधानिक कानूनों से अधिक शक्तिशाली है। जब तक समाज दो विरोधी वर्गों में बँटा हुआ है , जिसमें एक ओर हैं, उत्पादन के सभी साधनों, जमीन, कच्चे माल, मशीनरी पर एकाधिकार रखने वाले पूँजीपति और दूसरी ओर हैं, उत्पादन के साधनों के स्वामित्व से पूरी तरह वंचित मेहनतकश, जिनके पास अपनी काम करने की शक्ति के अलावा और कुछ भी नहीं होता। जब तक यह सामाजिक संगठन मौजूद हैं तब तक मजदूरी का नियम सर्वशक्तिमान बना रहेगा, और हर दिन उन जंजीरों को और मजबूत बनाता रहेगा जो मेहनतकश इंसान को खुद अपनी पैदावार का गुलाम बनाए रखती है, जिस पर पूँजीपति का एकाधिकार होता है।

इस देश की ट्रेड यूनियनों को इस कानून के खिलाफ लड़ते हुए अब करीब साठ साल हो गए हैं और नतीजा क्या रहा? क्या वे मजदूर वर्ग को उन बंधनों से मुक्त कराने में सफल हुई हैं, जिनमें पूँजी खुद उसके हाथों की पैदावार ने उसे बाँध रखा है? क्या उन्होंने मजदूर वर्ग के एक भी तबके को उजरती गुलामों की स्थिति से ऊपर उठने में, उत्पादन के साधनों का, कच्चे माल, औजारों, अपने उद्योग में आवश्यक मशीनरी का स्वामी, और इस तरह अपने श्रम की पैदावार का स्वामी बनने में सक्षम बनाया है? सब जानते हैं कि न केवल उन्होंने ऐसा नहीं किया है, बल्कि उन्होंने कभी कोशिश ही नहीं की है।

लेकिन इस नाते हम यह नहीं कह सकते कि चूँकि ट्रेड यूनियनों ने ऐसा नहीं किया है, इसलिए उनकी कोई उपयोगिता नहीं है। इसके विपरीत, इंग्लैंड में, और औद्योगिक उत्पादन करने वाले हर देश में, पूँजी के विरुद्ध मजदूर वर्ग के हर संघर्ष में ट्रेड यूनियनें उसके लिए जरूरी हैं। किसी भी देश में मजदूरी की औसत दर उस देश में आम जीवन स्तर के अनुसार मजदूरों की नस्ल को जिंदा रहने के लिए आवश्यक बुनियादी वस्तुओं के योग के बराबर होती है। यह जीवन स्तर अलग-अलग श्रेणियों के मजदूरों के लिए अलग-अलग हो सकता है।

मजदूरी की दर ऊँची बनाए रखने और काम के घंटे कम करने के संघर्ष में ट्रेड यूनियनों का बहुत बड़ा लाभ यह है कि वे जीवन स्तर ऊँचा बनाए रखने और उसे बेहतर करने में मदद करती हैं। लंदन के पूर्वी भाग में बहुत से पेशे ऐसे हैं, जिनका श्रम राजगीर मिस्त्रियों तथा राजगीर के साथ काम करने वाले मजदूरों से अधिक कुशल और उनके जैसा कठिन नहीं है, फिर भी वे इसके मुकाबले आधी मजदूरी ही कमा पाते हैं।

क्यों? सिर्फ इसलिए, क्योंकि एक शक्तिशाली संगठन पहले वाले मजदूरों को तुलनात्मक रूप से ऊँचा जीवन स्तर बनाए रखने में सक्षम बनाता है, जिससे उनकी मजदूरी निर्धारित होती है, जबकि दूसरे वाले मजदूरों को असंगठित और कमजोर होने के नाते अपने नियोक्ताओं के अपरिहार्य और मनमाने अतिक्रमण का शिकार होना पड़ता है। उनका जीवन स्तर लगातार गिरता जाता है, वे लगातार कम-से-कम मजदूरी पर जीना सीख लेते हैं, और उनकी मजदूरी स्वाभाविक रूप से उस स्तर तक गिर जाती है, जिसे उन्होंने खघ्द पर्याप्त मान लेना सीख लिया है ।

यानी, मजदूरी का नियम ऐसी रेखा नहीं खींचता, जिसमें लचीलापन न हो। यह कुछ सीमाओं

के साथ अटल नहीं है। हर समय (महामंदी को छोड़कर) हर ट्रेड के लिए एक खास दायरा होता है, जिसके भीतर दोनों विरोधी पक्षों के संघर्ष के परिणामस्वरूप मजदूरी की दर में संशोधन हो सकता है। हर मामले में मजदूरी का निर्धारण सौदेबाजी से होता है और सौदेबाजी में जो सबसे देर तक और सबसे अच्छी तरह प्रतिरोध करता है, उसी के पास अपने देय से अधिक पाने का सबसे अधिक मौका रहता है। अगर कोई अकेला मजदूर पूँजीपति के साथ सौदेबाजी की कोशिश करता है, तो वह आसानी से मात खा जाता है और उसे अपने आप समर्पण करना पड़ता है, लेकिन अगर किसी पेशे के सभी मजदूर एक शक्तिशाली संगठन बना लेते हैं, अपने बीच से इतना कोष जमा कर लेते हैं, जिससे वे जरूरत पड़ने पर अपने नियोक्ताओं के खिलाफ जा सकें, और इस प्रकार इन नियोक्ताओं से एक ताकत के तौर पर मुकाबला करने में सक्षम हो जाते हैं, तभी, और सिर्फ तभी, उन्हें वह थोड़ी-सी रकम मिल सकती है, जिसे वर्तमान समाज के आर्थिक संगठन के अनुसार, काम के उचित दिन की उचित मजदूरी कहा जा सकता है।

ट्रेड यूनियनों के संघर्ष से मजदूरी का नियम पलट नहीं जाता। इसके विपरीत वे इसे लागू कराती हैं। ट्रेड यूनियनों के प्रतिरोध के बिना मजदूर को वह भी नहीं मिलता, जो मजदूरी व्यवस्था के अनुसार उसे मिलना चाहिए। ट्रेड यूनियनों के डर से ही पूँजीपति को उसके मजदूर की श्रम शक्ति का पूरा मूल्य देने के लिए मजबूर किया जा सकता है। आपको सबूत चाहिए? बड़ी ट्रेड यूनियनों के सदस्यों को मिलने वाली मजदूरी देखिए, और दुख-तकलीफ से भरे उस गड्ढे, लंदन के उस पूर्वी इलाके में असंख्य छोटे-छोटे पेशों के कामगारों को मिलने वाली मजदूरी को देख लीजिए।

इस तरह ट्रेड यूनियनें मजदूरी व्यवस्था पर हमला नहीं करतीं। लेकिन मजदूरी कम या ज्यादा होने से मजदूर वर्ग की आर्थिक अवनति नहीं होती। यह अवनति इस तथ्य में निहित होती है कि अपने श्रम की पूरी पैदावार प्राप्त करने के बजाय मजदूर वर्ग को अपनी पैदावार के एक हिस्से से संतुष्ट होना पड़ता है, जिसे मजदूरी कहते हैं। पूँजीपति सारी पैदावार को हड़प लेता है (उसी में से वह मजदूर का भुगतान करता है) क्योंकि श्रम के साधनों पर उसका मालिकाना होता है। और, इसलिए, जब तक मजदूर वर्ग काम के सभी साधनों जमीन, कच्चा माल, मशीनरी, आदि का और इस प्रकार अपनी समस्त पैदावार का मालिक नहीं बन जाता, तब तक वह वास्तव में मुक्त नहीं हो सकता।

'द लेबर स्टैंडर्ड' से साभार

पेज 14 का शेष (कमालपाशा)

रोष भारत के मुस्लमानों में कुछ ज्यादा ही जाग गया, जिसका एक कारण यह भी था कि यहां पर वे स्वयं भी अंग्रेजों के शासन के अधीन रह रहे थे। अतः अंग्रेज, भारत एवं तुर्की के मुस्लमानों के साझा शत्रु बन गये। उधर कांग्रेस इसी समय अंगेज सरकार के विरूद्ध असहयोग आंदोलन शुरू कर रही थी। महात्मा गांधी ने मुस्लमानों को अंग्रेज विरोधी आंदोलन में आकर्षित करने के लिए उनके द्वारा अंग्रेजों के विरोध में चलाए जा रहे खिलाफत आंदोलन का समर्थन कर दिया। गांधी जी की यह नीति सफल रही और असहयोग आंदोलन के दौरान हिन्दू-मुस्लिम इकट्ठे हो कर अंग्रेजों के विरूद्ध संघर्ष में शामिल हुए, यद्यपि दोनों की प्रेरक शक्ति अलग-अलग थी। यह वर्णन योग्य है कि खलीफा के पक्ष में बाकी दुनिया के मुस्लमानों ने थोड़ी-बहुत आवाज़ तो उठाई परंतु सार्वजनिक आंदोलन के रूप में भारत में ही विरोध हुआ। यहां से तो बहुत से मुस्लिम अफगानिस्तान के रास्ते तुर्की में पहुंच कर युद्ध में शामिल होने के लिए भी चल पड़े थे। परंतु जब 1923 में कमालपाशा ने खलीफा की पदवी तुर्की में ही समाप्त कर दी तो खिलाफत आंदोलन भी स्माप्त हो गया। वैसे भारत की स्वतन्त्रता के इतिहासकारों के लिए यह बहस का मुद्दा है कि क्या कांग्रेस को इस प्रतिगामी धार्मिक रूप वाले आंदोलन का समर्थन करना चाहिये था अथवा नहीं? तथा क्या इसका स्वतंत्रता संग्राम में कोई रचनात्मक रोल बनता है?

-हिन्दी अनुवादः बलवन्त सिंह लेक्चरार

आध्यात्मिकता एक लॉलीपॉप

झूठे एवं लुटेरे लोगों का अब तक काम ही यही रहा है कि लोगों को बुद्धू बना कर उनकी लूट की जाए। इसी प्रकार धर्मो से हट कर समय के अनुसार एक अन्य चीज ने जन्म लिया है- आध्यात्मिकता (Sprituality) अर्थात समाधि द्वारा ज्ञान जैसे कि योग, आत्मा, परमात्मा, कर्म चक्र अथरवा कुण्डलिनी। वैसे तो यह धर्मो का विषय ही था, परंतु कुछ नये उठे आधुनिक गुरुओं ने जिनका मुख्यतः नाम हैं, जगी वासुदेव, श्री श्री रविशंकर, महर्षि महेश योगी आदि। इन लोगों का टाारगेट अधिकतर युवा पीढ़ी होती है तथा इन्होंने चालाकी के साथ आध्यात्मिकता को धर्म से अलग कर के इसे एक नये लॉलीपॉप के रूप में तैयार कर लिया हैं जैसे कि अब से कई वर्ष पूर्व इन में से एक प्रसिद्ध नाम, 'चन्द्रमोहन जैन' उफ ओशो ने किया था, जिसका मैंने स्वयं भी किसी समय काफी अध्ययन किया है, उसकी बहुत सी पुस्तकें पढ़ीं। उसने बहुत बातें घुमा फिर कर की हैं, जिन से ऐसा प्रतीत होता है कि या तो वह स्वंय भ्रमित है अथवाा नौटंकीबाज है। अपने साक्षात्कारों में तो वह साफ तौर पर परमात्मा के अस्तित्व को नकारता है। परंतु अपने आश्रमों में उस पर घुमा फिरा कर बड़े-बड़े प्रवचन देता है और उसके भगत सिर हिलाते जाते है। उसके कारनामों के बारे में विस्तार से जानने के लिए आप 'ओशो बेनकाब' पुस्तक को पढ़ सकते हैं। बिल्कुल उसी रारस्ते पर ही ये आधुनिक गुरु चल रहे हें। ये वास्तव में वे इंसान हैं जिन्होंने स्वयं अपना जीवन ऐशो-आराम में ही व्यतीत किया था अथवा व्यतीत कर रहे हैं। तथा अपने अनुयायियों को लॉलीपॉप दे कर सपनों के संसार में भेज दिया तथा दिमाग से पैदल कर दिया। ये लोग क्या हैं क्या नहीं, इसके बारे में बताने पर मैं अधिक समय बर्बाद नहीं करना चाहता, परंतु इनका जाल बेहद खतरनाक हैं इन की बातें नशे की लत जैसे (addictive) हैं तथा मीठे ज़हर की भंति हैं।

हम अपने मुद्दे पर आते हैं।

'क्या समाधि द्वारा ज्ञान प्राप्त हो सकता है?'

व्यक्ति का समस्त ज्ञान जन्म से लेकर ही पांच ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा प्राप्त होता है न कि समाधिद्वारा। वह व्यक्ति जिस की पांचों ज्ञानेंद्रियां नहीं हैं वह केवल एक आलू की भांति ही अपना जीवन व्यतीत करेगा, चाहे कुछ हो जाए। यदि ज्ञान समाधि द्वारा प्राप्त होता हो तो फिर हमारे देश की समस्त शिक्षण संस्थाएं बन्दकर देनी चाहिएं, इन के स्थान पर समाधि के संस्थान खोल देनो चाहिएं। शिक्षा पर इतनी बड़ी राशि खर्च करने काक्या लाभ ?

ज्ञानेंद्रियों द्वारा बाह्यमुखी प्रत्यक्ष ज्ञान के विपरीत किसी व्यक्ति का अन्तर्मुखी ज्ञान बनावटी एवं भ्रामक भी हो सकता है। उदाहरण के तौर पर मानसिक विकार वाले लोगों का मिथ्या विश्वास उनका अन्तर्मुखी अनुभव ही होता है, जिस के पीछे कोई सच्चाई नहीं होती। किसी व्यक्ति में मिथ्या विश्वास रासायनिक, भौतिक, जीव एवं मनोवैज्ञानिक प्रभावों के उत्पन्न किये जा सकते हैं। नशे वाली दवाएं, अन्य नशे ज्ञानेन्द्रियों को प्रभावित करने वाली बातें जैसे कि ढोल का बजना, तालियां बजाना, कील लेना, मन्त्रों एवं भजनों का गायन करना नाचना, शारीरिक रसों, शरीर के अंदर विटामिन एवं पाचक रस में गड़बड़, डर, सदमा एवं सम्मोहन द्वारा कमजोर मानसिकता वाले व्यक्तियों में मिथ्या विश्वास उत्पन्न किये जा सकते हैं।

डॉ. अब्राहम टी.कोवूर इस विषय पर अपने विचार रखते हुए लिखते हें।ः

'एक मद्रासी जो कि लोक हाऊस प्रैस में काम करता था, को उसकसी पत्नी पागलपन की अवस्था में मेरे पास सम्मोहन द्वारा ईलाज के लिए लेकर आई। जांच करने पर पता चला कि उसके पागलपन का करण 'योग समाधि' थी।

इस आदमी ने एक तमिल पुस्तक -'योगिक समाधि' को पढ़ा। उसने उसमें पढ़ा था कि यदि कोई व्यक्ति 'पदमासन' में बैठकर, 108 बार 'ओम-रीम-जैमना शक्ति' के मंत्र का जाप करो, तो

उसकी दिमागी आंख खुल जाती हैं वह 'रोशन-दिमाग बन जाता है और भविष्य में घटने वाली हर घटना को पहली ही जान लेता है।

उसने इसकी जांच करनी चाही। एक रात को वह अपने बिस्तर पर चौकड़ी मार कर बैठ गया और उसने 'ओम-रीम-जैमना शक्ति' के मंत्र का जाप करना आरम्भ कर दिया। उसकी पत्नी के अनुसार वह उस मंत्र का पूरा कोर्स खत्म न कर सका। मंत्र को 50-60 बार बोलने के उपरांत उसने 'मुरूगा-मुरूगा' कह कर घर से भागना शुरू कर उदिया।उसी दिन से वह पागलों जैसा व्यवहार करने लग पड़ा है। उसने बहुत से ओझाओं से ईलाज करवाया। मनो चिकित्सा की किताबें ऐसे अनेक मामलों से भरी पड़ी हैं। मंदिर में पूजा करते समय, पैशाचिक नृत्य में,धार्मिक जलूसों एवं मीटिंगों में इस प्रकार के ऊलजलूल व्यवहार का कारण अस्थाई पागलपन होता हैं। जो ढोल पीटने द्वारा, मंत्र-भजन, नृत्य संगीत, जय-जय कार द्वारा उन लोगों में उत्पन्न कर दिया जाता है।

धार्मिक भ्रम जिस का नाम समाधि है, यह धीमी चाल से चलने वाली प्रक्रिया है, जो अपने आप ही हिप्नोसिस उत्पन्न कर देती है। समाधिद्वारा, व्यक्तियों के प्राप्त झूठे अनुभव अक्सर उनके धार्मिक भ्रमों के अनुसार ही होते हैं। एक ईसाई को समाधि द्वारा 'जीहोवा' के दर्शन हो सकते हैं, जो कि स्वर्ग में एकसोने के सिंहासन पर विराजमान है, उसक दाई तरफ ईसा मसीह है, उसके चारों ओर संदर पंखों वाले देवता गीत गा रहे हैं। एक हिन्दू या बौद्ध को अपने पिछले अथवा आने वाले जन्म के बारे में झूठा विश्वास हो सकता है। एल.एस.डी, गांजा, अफीम, पोस्त इतयादि भी इस तरह के झूठ उत्पन्न कर सकते हैं।

कुछ व्यक्ति गहरी समाधि द्वारा क्रिप्टस्थीसिया नामक एक बीमारी का शिकार हो जाते है।। इस बीमारी में रोगी को यह पागलों जेसा विश्वास हो जाता है कि दैवी शक्ति से संपन्न व्यक्ति है।

अनपढ़ एवं भोले-भाले लोग जब मानसिक विकार का शिकार हो जाते हैं तो उन्हें पागल कहा जात है। उनकी किसी भी बात को महत्व नहीं दिया जाता। दूसरी ओर जब इस मानसिक विकार का शिकार कोई चालाक अथवा बुद्धिमान व्यक्ति हो तो वह अपने श्रोताओं अथवा पाठकों को यह यकीन करवा देगा कि उसके ब्रह्म-ज्ञान, अन्तिम सत्य बोध और परमात्मा में लीन हो जाने वाले गुण प्राप्त हो गये हैं। हो सकता है इससे उसके बहुत से श्रद्धालु एवं शिष्य बन जाए। मानसिक विकार ग्रस्त अथवा असाधारण योग्य और बुद्धिमान व्यक्ति आमतौर पर धर्म के प्रचारक एवं नींव डालने वाले होते हैं। मादक पदार्थों के साथ-साथ समाधि पर भी रोक लगानी चाहिए तथा इसको गैर कानूनी घोषित करना चाहिए क्योंकि इन दोनों का ही मनुष्य के मन पर एक जैसा ही प्रभाव पड़ता है।'

सपनों की दुनिया से बाहर निकलो, प्रत्येक चीज को क्यों और कैसे की कसौटी पर परख करना सीखो। विज्ञान के साथ जुड़ों और आगे बढ़ो। समाधि, आत्मा, परमात्मा जेसी कोदई चीज नहीं होती। यह केवल चाशनी में लपेटे हुए ज़हर का लालीपॉप है जो तुम्हारे बौद्धिक स्तर को नीचे गिरा कर, तुम्हारी समझने की शक्ति को खत्म करता है तथा यथार्थ से तोड़ कर सपनों की मिथ्या दुनिया के साथ जोड़ता है।

-'फेसबुक'से साभार

हिन्दी अनुवादः बलवन्त सिंह लेक्चरार

कविता

-डॉ.रणजीत

कीलरें बन कर रह जाती हैं
नफरत है मुझे अपने धर्मों से
मेरा धर्म पत्थरों और
पोथियों के आदि का धर्म है
फटे हुए कानों और नुचे हुए केशों का धर्म है
जिन्दा जलायी हुई सतियों और बधियाए हुए
सन्यासियों का धर्म है
मुझे नफरत है अपने मठों और मंदिरों से
जहां आतंक और अज्ञान को मूर्तियों को
ढाल कर पूजा जाता है
नफरत है मुझे मिमियाते हुए होठों और जुड़ते
हुए हाथों से
नफरत है मुझे घिसती हुई नाकों और झुकते
हुए माथों से।

भारत में अधार्मिक लोगों को एकजुट करने की जरूरत

– मनोज मलिक

अधार्मिक लोग वे लोग हैं जिन्होंने धर्म, ईश्वर, आत्मा तथा इनसे जुड़े जड़-विश्वासों (dogmas) को अस्वीकार कर दिया है। वे किसी भी तरह के अंधविश्वासों में यकीन नहीं रखते और केवल विज्ञान पर भरोसा करते हैं। अधार्मिक लोगों में शामिल हैं, निरीश्वरवादी, मानववादी, तर्कवादी, स्वतंत्र-चिंतक (फ्री-थिंकर्स), एक्स-मुस्लिम आदि।

पूरे संसार में अधार्मिक लोग असली अल्पसंख्यक हैं, जिन्हें हर दौर में, हर देश में प्रताड़ित किया गया है। भारत भी इसका अपवाद नहीं है। इसके बावजूद ये इनमें एकता का अभाव है। वास्तव में, यही लोग हैं जिन्हें एकजुट होने की सबसे ज्यादा जरूरत है ताकि अपने जरूरतमंद साथी की मदद कर सकें। लेकिन बड़े अफसोस की बात है कि यही सबसे ज्यादा असंगठित हैं। अधार्मिक लोग एक-दूसरे की गतिविधियों से अनभिज्ञ हैं। अभी हाल ही में इंटरनेट की मेहरबानी से थोड़ी एकता, मेलजोल, जरूर शुरू हुआ है। आइए, हम इसके पीछे के कारणों को जानें और यह भी समझें कि इनका हल क्या हो सकता है।

अनेकता के कारणः-

1. अलग-अलग पहचानें और जुड़ावः- हालांकि अधार्मिक लोगों में काफी समानताएं पाई जाती हैं, फिर भी वे हर बिंदु पर एकमत नहीं होते हैं, और होना भी नहीं चाहिए। वैसे तो यह अच्छी बात है, कि वे एक ही लकीर के फकीर नहीं हैं। धार्मिक और अधार्मिक लोगों में यह एक मूल अंतर होता है। एक धार्मिक व्यक्ति की निश्चित जड़-मान्यताएं होती हैं, वह किसी एक किताब को ईश्वर-वाणी मानकर उसपर अडिग विश्वास रखता है, जबकि दूसरी ओर, अधार्मिक व्यक्ति तथ्यों की रौशनी में अपने विचार बनाता है, और तथ्यों के बदलने पर विचार बदलने के लिए तैयार रहता है। इस तरह वह स्वाभाविक रूप से एक उदारवादी होता है। अधार्मिक लोग विविधता न केवल स्वीकार करते हैं, अपितु उसे बढ़ावा भी देते हैं

इसी कारण वे मुक्त-चिंतन और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की बात करते हैं। वे अपने लिए अलग-अलग संबोधन का इस्तेमाल करते हैं। कुछ अपने को निरीश्वरवादी कहते हैं, जबकि अन्य खुद को विवेकवादी, मानववादी, विज्ञानवादी या स्वतंत्र-चिंतक कहलाना पसंद करते हैं। लेकिन संगठित होने की दृष्टि से यही खुली सोच इनकी कमजोरी भी बन जाती है। इनकी शक्ति (जितनी थोड़ी-बहुत भी है), बिखर कर रह जाती है। इनकी कोई सांझी पहचान नहीं है। 'अधार्मिक' शब्द सभी की विचारधारा को समेटने वाला कोई उचित शब्द नहीं है, इसके अलावा, यह एक नकारात्मक संबोधन है। लेकिन फिलहाल, हमारे पास कोई ऐसा शब्द नहीं है, जो सभी अधार्मिक लोगों के लिए सांझे तौर पर प्रयोग में लाया जा सके।

2. केंद्रीय मुद्दों पर सर्व-सहमति नहींः-

यद्यपि यह प्रशंसनीय है कि अधार्मिक लोग मत-विविधता, असहमति की भावना का स्वागत करते हैं, तथापि यह इनकी कमजोरी बन जाती है। सभी अधार्मिक लोग 'अपनी-अपनी डफली और अपना-अपना राग' बजाते रहते हैं। वे महत्वपूर्ण मुद्दों पर विभाजित हैं, इस कारण वे समाज को प्रभावित नहीं कर पाते हैं। केंद्रीय मुद्दों पर कोई सर्व-सहमति नहीं है। नेतृत्व के झगड़े हालात को और अधिक मुश्किल बना देते हैं। ऐसी स्थिति में, वे किस तरह से एकता पैदा कर सकते हैं? वे किस तरह से अपने सांझे वैचारिक विरोधियों का मुकाबला करने की आशा रख सकते हैं?

3.उत्साह, समन्वय और रचनात्मक कार्यक्रमों का अभाव :-

हमें भारत के निरीश्वरवादी, विवेकवादी कार्यकर्ता में उत्साह का अभाव दिखता है, क्योंकि उनके पास कोई नवीन रचनात्मक कार्यक्रम नहीं है। वही एक ढर्रे के बोरिंग प्रोग्राम होते रहते हैं। कोई नवाचार "Innovations½ नहीं हैं, हर कार्यक्रम में वही चेहरे बार-बार दिखाई देते हैं। ऐसा लगता है मानो हम उन लोगों को प्रभावित करने का प्रयास

कर रहे हैं, जो पहले से ही प्रभावित हैं।

इसके अतिरिक्त, भारत के विभिन्न अधार्मिक संगठनों में समन्वय (coordination) का भी अभाव नजर आता है। अर्जक संघ का कार्यकर्ता एथीस्ट सैंटर, विजयवाड़ा या द्रविड़ कझगम, तमिलनाडु, के बारे में नहीं जानता है। अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति (महाराष्ट्र) को इंडियन ह्यूमनिस्ट यूनियन (दिल्ली) के बारे में जानकारी नहीं है।

दूसरी ओर, तमाम अंधविश्वासों और मिथ्या-धारणाओं के बावजूद, धार्मिक लोगों की अपनी संस्थाओं में अडिग विश्वास होता है। वे निष्ठापूर्वक अपने समुदाय के नियमों का पालन करते हैं। इस तरह से, उनकी कमजोरी उनकी ताकत बन जाती है। यह बात हमें इनसे जरूर ग्रहण करनी चाहिए।

एकता के लिए उपायः

1. सांझा न्यूनतम कथनः-

भारत की सभी अधार्मिक संस्थाओं को अपने छोटे-छोटे मतभेद भुलाते हुए, मिल-जुलकर, अपना एक सांझा न्यूनतम कार्यक्रम तैयार करना चाहिए। उदाहरण के लिए सभी अधार्मिक लोग डार्विन के क्रम-विकास सिद्धांत, नैतिकता, और विज्ञान के महत्व पर सहमत होते हैं और सभी पारलौकिकता (Supernatural) को रद्द करते हैं।

उन्हें इनके आधार पर न्यूनतम कथन (Minimum Statement) बनाना चाहिए, जैसे ह्यूमनिस्ट इंटरनेशनल ने अपने सदस्य-संगठनों के लिए बनाया हुआ है। इससे पूरे भारत की अधार्मिक संस्थाओं में एकरूपता आएगी। इसके लिए अपनी संस्था का किसी अखिल भारतीय महासंघ में विलय करने की जरूरत नहीं है। अपनी संस्था का पृथक अस्तित्व रखते हुए भी हम एकमंच पर आ सकते हैं।

निरीश्वरवाद, विवेकवाद, मानववाद, विज्ञानवाद या स्वतंत्र-चिंतन आदि एक-दूसरे से मिलती-जुलती विचारधाराएं हैं। मैं अक्सर इन्हें 'बंधु विचारधाराएं' कहता हूं। याद रखिए कि हमारे बीच में सहमति के बिंदु अधिक हैं (70 प्रतिशत से 80 प्रतिशत) मामलों पर हम सहमत हैं। इसके अनुपात में असहमति के बिंदु बहुत कम हैं। एक व्यक्ति एक ही समय में, निरीश्वरवादी, विवेकवादी, मानववादी, विज्ञानवादी या स्वतंत्र-चिंतक हो सकता है। यह हमारी ताकत है। यह हमारी कमजोरी नहीं बननी चाहिए। हम सभी अधार्मिक लोग एक ही पथ के पथिक हैं, हमारा एक ही लक्ष्य है, सैकुलर और वैज्ञानिक सोच पर आधारित समाज।

2. सकारात्मक और रचनात्मक भूमिका का निर्वहन जरूरीः-

यह सच्चाई है कि अधार्मिक संस्थाओं को धर्म की कुरीतियों की आलोचना करनी पड़ती है। उन्हें कथित चमत्कारों की, ढोंगी बाबाओं की पोल खोलनी होती है। यह उनके कार्यक्षेत्र की आवश्यकता है। लेकिन ध्यान रखें कि कहीं धर्म की आलोचना पूरे विमर्श को नकारात्मक न बना दे।

विवेकवादी, मानववादी लोगों का प्राथमिक काम सकारात्मक और रचनात्मक ही होना चाहिए। निस्संदेह, खेत को तैयार करने के लिए, हल चलाना, खरपतवार हटाना जरूरी होता है।

लेकिन हमारा असली उद्देश्य अच्छे बीज बोना, उनको खाद-पानी देना और उनकी बढ़िया फसल काटना होता है। यही एक किसान का असली मकसद होता है। इसी तरह, अधार्मिक लोगों और उनकी संस्थाओं को, अपने जीवन-मूल्यों पर आधारित, एक बेहतर समाज की रचना के लिए रचनात्मक कार्य हाथ में लेने होंगे।

धर्म लोगों में अंधविश्वास फैलाने के साथ-साथ एक सामुदायिक पहचान और सुरक्षा भी प्रदान करता है। अधार्मिक विचारधारा को भी यह सकारात्मक भूमिका निभानी होगी। केवल धार्मिक कुरीतियों की निंदा करना काफी नहीं है। केवल आलोचना करते रहने और कुछ भी सकारात्मक भूमिका नहीं निभाने से हमारी विचारधारा अनुपयोगी और अप्रासंगिक हो सकती है। अनुभवों से लाभ उठाना चाहिए।

सबका काम करने का तरीका अलग होता है, फिर भी एक-दूसरे से सीखना चाहिए। 'फिरा' को और अधिक मजबूत करना चाहिए। यह किसी एक व्यक्ति का काम नहीं है, बल्कि सभी अधार्मिक लोगों का सामूहिक दायित्व है। इसके नेतृत्व का उचित सम्मान और सहयोग परमावश्यक है। हर साल भारत के अलग-अलग स्थानों में 'फिरा' का वार्षिक सम्मेलन आयोजित किया जाना चाहिए।

आपसी सद्भाव केवल शब्दों तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि व्यवहार में भी झलकना

चाहिए। हर निरीश्वरवादी, मानववादी, विवेकवादी को संकट में पड़े अपने समविचारी बंधु की सहायता करनी चाहिए। इसे केवल व्यक्तिगत रूप तक सीमित नहीं रखना चाहिए। संस्थाओं को संकट में पड़े हुए बंधु की यथासंभव मदद (आर्थिक, कानूनी आदि) की व्यवस्था करनी चाहिए। अपने बजट में इसका उचित प्रावधान करना चाहिए। तभी विचारधारा के लिए लोगों में मनोबल बढ़ेगा। कोई भी समविचारी व्यक्ति खुद को अकेला महसूस न करे, इसका हमें ख्याल रखना होगा।

4. कार्यशीलता (Activism):-

अधार्मिक संस्थाओं को नये कार्यकर्ता भर्ती करने की जरूरत होती है। इसके लिए नवाचार 'Innovations' करने जरूरी हैं। युवक-युवतियों को आकर्षित करने के लिए रोचक कार्यक्रम करने जरूरी हैं। इसमें नीरस बैठकें या सेमिनार काम नहीं करेंगे। बच्चों के लिए खेल-आधारित गतिविधियां, नौजवानों की सक्रिय भागीदारी के लिए विशेष मुद्दों (कुरीतियों, नशे, दमनकारी कानून आदि) पर अभियान, जागरुकता रैली, मोटरसाइकिल रैली, पुस्तक-मेला, नुक्कड़ नाटक, म्यूजियम या चिड़ियाघर की सैर, स्टडी-सैंटर, समर कैंप आदि नये-नये ढंग अपनाने होंगे। युवकों से राय लेकर उनकी रुचि और जरूरतों के अनुसार कार्यक्रम की रचना करें। मत भूलें कि किसी पिरामिड की भांति, किसी संस्था की रचना उसकी नींव से शुरू होती है। इसलिए सबसे जरूरी है, कि स्थानीय इकाई 'Local Unit' को मजबूती प्रदान की जाए।

उपर्युक्त बातें स्थानीय इकाई को मजबूत बनाने का काम करेंगी। इसके बदले में, स्थानीय इकाई, आगे चलकर, तहसील, जिला, प्रांत की इकाइयों को मजबूती देगी। कोई आपत्ति उठा सकता है कि इसमें तो बहुत सारे कार्यकर्ता चाहिएं, जिनका अभी हमारे पास अभाव है। निस्संदेह, इसमें बहुत संसाधन और कार्यकर्ताओं की आवश्यकता होती है। वे सब अपने आप आ जाएंगे यदि हम गंभीरता से, ईमानदारी से बिना थके, अपना काम शुरू कर दें। यदि हम अपना मनोबल बनाए रखें और धैर्यपूर्वक अपने काम को जारी रखें। यह एक तरह का चक्र (cycle) है, हरेक प्रोजेक्ट से हमें नये-नये कार्यकर्ता मिलेंगे और फिर उन कार्यकर्ताओं के बल पर नये प्रोजेक्ट शुरू करना संभव होगा। इसमें समय जरूर लगता है, उसके लिए हमें इंतजार करना होगा। पर यह एक सिद्ध बात है। यह एक तरह का गर्भकाल (Gestation Period) है, इसमें बहुत धैर्य की परीक्षा होती है, उतावलापन करने से काम बिगड़ सकता है।

अतः निष्कर्ष के रूप में, सभी अधार्मिक लोगों में एकता समय की आवश्यकता है। यह चुनौतीपूर्ण समय है, जब भारत के संविधान के मूल्यों पर खतरा मंडरा रहा है, भारत की सैकुलर परंपरा पर आंच आ रही है, जब सांप्रदायिक ताकतें पूरे परि श्य पर अपना आधिपत्य जमाने में लगी हुई हैं। वह सब कुछ दांव पर लगा हुआ है, जिसके लिए हम संघर्षरत हैं, चाहे वह सैकुलरिज्म हो, वैज्ञानिक सोच हो या अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता हो। चुनौती बहुत गंभीर है और हमारे पास कोई विकल्प नहीं है, अपने इन प्रिय जीवन-मूल्यों के लिए लड़ने के सिवाय। याद रखिए, एकता में बल है, हम एक रहेंगे तो टिके रहेंगे, वरना मिट जाएंगे।

manojsanghi367@gmail-com

अंधविश्वास के चलते लड़की की मौत पर पिता व ईमाम गिरफ्तार

कनूर। कुछ दिन पहले एक 11 वर्ष की लड़की की मृत्यु पर कनूर शहर में पुलिस ने बुधवार को उसके पिता और एक ईमाम को गिरफ्तार किया है जिन्होंने उसे समय पर चिकित्सा उपलब्ध नहीं करवाई।

पुलिस ने बताया कि लड़की के पिता अब्दुल सत्तार जो कि नलूव्याल का रहने वाला है और ईमाम मुहम्मद उवैस, जो कि कुंजीपैल्ली का रहने वाला है को एक रिश्तेदार की शिकायत पर गिरफ्तार किया गया है।

रिश्तेदार ने शिकायत की थी कि फातिमा, को बुखार था लेकन अंधविश्वार के कारण उसके अभिभाविकां ने उसे चिकित्सा उपलब्ध नहीं करवाई।

पवित्र जलः

लड़की को जब एक स्थानीय मस्जिद के ईमाम के पास ले जाया गया तो ईमाम उवैस ने उसे केवल पवित्र जल दिया।

रिश्तेदारों ने ईमाम के खिलाफ इसकी जांच करवाने की मांग की है क्योंकि इससे पहले भी पांच व्यक्तियों की इसी प्रकार मृत्यु हो चुकी है।

कोरोना काल में ऑनलाइन शिक्षा : दावे, हकीकत एवं चुनौतियाँ

-बूटा सिंह सिरसा

हमारे समाज में जिस प्रकार की असमानताएं हैं इसमें शिक्षा की असमानता को अलग से नहीं देखा जा सकता बल्कि शिक्षा वर्गीय विषमता को बनाए रखने व विकसित करने का कार्य करती है। शिक्षा को स्वतंत्र सांस्कृतिक ताकत के रूप में नहीं देखा जा सकता बल्कि यह वर्गीय हितों को ही साधती है। शिक्षा की अवधारणा जीवन जीने की तैयारी से जुड़ी मानवीय गतिविधियों से संबंधित है। इसलिए शिक्षा के लक्ष्य उद्देश्य तय किए जाते हैं । यह उद्देश्य भी शासक वर्ग वगहय हितों के अनुसार ही तय करता है। शिक्षा के द्वारा बच्चे में मूल्य विकसित किए जाते हैं। इनमें संविधान के मूल्य, समानता, भाईचारे की भावना, संवेदनशीलता व नैतिक मूल्य आदि हैं ।

ऑनलाइन शिक्षा की स्थितिः

मार्च 2020 में कोरोना महामारी के चलते स्कूली शिक्षा सबसे ज्यादा प्रभावित हुई। स्कूल बंद रहने के कारण बच्चे घरों में रहे तथा सरकार द्वारा घर से पढ़ाई कार्यक्रम चलाया गया। जब हम वर्तमान दौर में चल रही ऑनलाइन शिक्षा की जमीनी हकीकत को देखते हैं तो बहुत सारी बातें सामने आती है। हरियाणा ज्ञान विज्ञान समिति की तरफ से हरियाणा के नौ जिलों के 1000 घरों में किए गए एक सर्वे में पता चला कि मात्र 14% बच्चे ही ऑनलाइन शिक्षा ले रहे हैं यानि कि 76प्रतिशत बच्चे इस ऑनलाइन शिक्षा से पूरी तरह से बाहर हैं एक प्रमुख समाचार पत्र के सर्वे के अनुसार 44 प्रतिशत बच्चों के पास ही इंटरनेट/ स्मार्टफोन हैं, फिर भी हरियाणा सरकार कह रही है कि ऑनलाइन शिक्षा पूरी तरह से सफल है। 'घर से पढ़ाई', 'मुख्यमंत्री दूरवर्ती शिक्षा योजना' जैसे कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं बड़े-बड़े पोस्टर विज्ञापन शेयर किए जा रहे ह। यह बात सिर्फ हरियाणा सरकार ही नहीं कह रही बल्कि शिक्षा विभाग के आंकड़े कह रहे हैं। इन आंकड़ों में सच्चाई क्या है? पिछले साल से ही ऑनलाइन सप्ताहिक टैस्ट लिए जा रहे है। इन टैस्टों में बच्चों की भागीदारी कुछ ब्लाकों में 100प्रतिशत से भी ज्यादा रही ! सवाल यह है कि जब सर्वे यह कहता है कि मात्र 44% बच्चों के पास स्मार्टफोन या इंटरनेट की सुविधा है तो यह सप्ताहिक टैस्ट 100% से ज्यादा कैसे हो रहे हैं ? इन टैस्टों को कौन कर रहा है? सरकार इसको सौ प्रतिशत सफल क्यों कह रही है? यह अध्यापक वर्ग के सामने एक बड़ा सवाल है क्योंकि सचाई यह है कि टैस्ट का आंकड़ा पूरा करने के लिए ऊपर से आदेश आते हैं। फिर जिला व खंड स्तर के अधिकारी स्कूल मुखिया को आदेश देते हैं स्कूल मुखिया कक्षा अध्यापक को 100% बच्चों के टैस्ट करवाने के लिए आदेश देता है यह सभी आदेश लिखित नहीं बल्कि मौखिक या व्हाट्सएप के माध्यम से ही आते हैं! एक तरफ धौंस दिखाई जाती है, आर्डर निकले जाते हैं, स्पष्टीकरण मांग लिए जाते हैं या फिर अपील की जाती है। हमें पता है कि अधिकारी की अपील भी आदेश ही होती है। फिर अधिकतर अध्यापक पूरी आज्ञाकारिता दिखाते हुए टैस्ट का आंकड़ा 100% करने के लिए वे सब तरीके अपना लेते हैं जिन्हें किसी भी प्रकार से ठीक नहीं कहा जा सकता। यह कार्य अपनी जड़ें काटने वाला है बल्कि पूरे समाज की जड़ें काटने वाला है । जैसे कि स्कूल में फोन मंगवा कर एक बच्चे से कई-कई बच्चों के टैस्ट करवाना, अपने फोन से घर से टैस्ट करना या फिर कक्षा के कुछ बच्चों को फोन करके उनको यह बोलना कि आप फलां-फलां बच्चों का टैस्ट कर दो! यह कैसी शिक्षा है?

पिछले वर्ष से यही चल रहा है। इस वर्ष भी जबकि स्कूल खुल चुके हैं परन्तु मासिक टैस्ट अवसर एप पर ही लिए जा रहे हैं जबकि सच्चाई यह है कि यह एप सही तरीके से चल नहीं रही और टैस्ट में सिर्फ बहुविकल्पीय प्रश्न हैं यानि कि चार विकल्पों में से एक ऑप्शन चुनना है, उस पर क्लिक करना है। इस बहुविकल्पीय मूल्यांकन प्रणाली को किसी भी तरीके से ठीक नहीं कहा जा सकता क्योंकि यह पूरी तरह से तुक्का आधारित है और बच्चे की सृजनात्मकता को खत्म करने वाली है। मूल्यांकन अलग से बहस का विषय है। इस प्रकार से अध्यापक वर्ग के सहयोग से झूठे आंकड़े इकट्ठे किए

जा रहे हैं और सरकार अपनी पीठ थपथपा रही है। क्या ऐसी शिक्षा से, ऐसे टैस्टों से बच्चों के अंदर नैतिक मूल्य विकसित किए जा सकते हैं? क्या अध्यापक को सही तथ्य पेश नहीं करने चाहिए? स्कूल मुखिया द्वारा भी जो फीडबैक दिया जा रहा है वह बिना सोचे समझे सिर्फ अधिकारियों को खुश करने के लिए दिया जा रहा है।

मोबाइल के दुरुपयोगः-

शिक्षा विभाग व सरकार की तरफ से इस प्रकार का कोई दिशानिर्देश जारी नहीं किया गया कि किस आयु वर्ग के अनुसार बच्चों का स्क्रीन टाइम कितना होना चाहिए । क्योंकि स्क्रीन टाइम का बच्चों की आंखों पर सबसे ज्यादा प्रभाव पड़ रहा है। बाल मनोवैज्ञानिकों के अनुसार मोबाईल के ज्यादा प्रयोग से बच्चों की आँखों पर प्रभाव पड़ रहा है व उनका मानसिक स्वास्थ्य भी खराब हो रहा है। ज्यादातर बच्चों के स्वभाव में चिड़चिड़ापन है तथा वे कुंठित हो रहे हैं। इसके अतिरिक्त बच्चों के लिए मोबाइल पर कई प्रकार के प्रलोभन है। जो लिंक भेजे जा रहे हैं उनमें बहुत सारे विज्ञापन हैं। इंटरनेट पर बहुत सारी पोर्न साइट्स हैं जिन पर अश्लील सामग्री है, वीडियो गेम व सोशल मीडिया आदि कई प्रकार की चीजें हैं जो बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं। इन सब चीजों को देखकर मुजफ्फर रज्मी का एक शेयर याद आता हैः

यह जब्र भी देखा है तारीख की नजरों ने
लम्हों ने खता की थी सदियों ने सजा पाई

इस प्रकार की सामग्रियों के माध्यम से बच्चों को क्या बनाया जा रहा है? एक संवेदनहीन मशीन, एक रोबोट ! यह बहुत बड़ा सवाल है कि जब यह वीडियो गेम खेलने वाली पीढ़ी बड़ी होगी तो हमारा समाज कैसा होगा? प्रसिद्ध लातिनी अमरीकी शिक्षा शास्त्री एदुआर्दो गलियानो ने वीडियो गेम के बारे में बहुत पहले कहा था कि 'वीडियो गेम में बच्चे के सामने एक आभासी दुश्मन (VIRTUAL ENEMY) होता है जिसको उसने मारना होता है। वह गेम में उसको बंदूक से, तीरों से, लाठी-डंडों या अन्य किसी तरीके से मारता है लेकिन जब उसको नहीं मार सकता तो गेम समाप्त हो जाती है और स्क्रीन पर लिखा आ जाता है YOU LOOSE , आप हार गए' हमें पता है कि हारना कोई भी नहीं चाहता। वीडियो गेम के माध्यम से बच्चों को हिंसा की शिक्षा दी जाती है। हिंसा सीखने वाली यह पीढ़ी जवान होकर जब समाज में आएगी तो हमारा समाज कैसा होगा?' भारत के विविधता वाले समाज में यह और भी खतरनाक होगा। एक अध्यापक के लिए जरूर चिंता का विषय होना चाहिए।

समाज को पीछे ले जाने का रास्ताः

मानव समाज का इतिहास बताता है कि समाज हमेशा आगे जाता है और समाज को आगे ले जाने में, उसके विकास में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है लेकिन अब इस ऑनलाइन शिक्षा के दौर में जिस प्रकार से विभिन्न एप विकसित किए जा रहे हैं, उसको देखकर ऐसा लगता है कि कहीं ये APP के द्वारा बंदर की जात का जानवर बनाने की तैयारी तो नहीं ? यानि कि समाज को पीछे ले जाने का मसला तो नहीं ! हमें पता है कि शासक वर्ग अपनी नीतियों के माध्यम से विशेषकर शिक्षा के माध्यम से समाज को पीछे ले जा सकता है, अंधकार के युग की तरफ। हमारे देश में जब से एनडीए सरकार सत्ता में आई है तब से भारत को 'विश्व गुरु' बनाने की बातें की जा रहीं हैं। वे कहते हैं कि प्राचीन काल में भारत 'विश्वगुरु' था। वे जिस काल की बात करते हैं जब हम इतिहास का अध्ययन करते हैं तो पता चलता है कि उस समय शिक्षा एक खास तबके तक ही सीमित थी और एक बहुत बड़ा हिस्सा जिन्हें शूद्र कहा जाता था, शिक्षा से पूरी तरह से वंचित था। 'विश्व गुरु' बनने का अभिप्राय कहीं यही तो नहीं है कि शिक्षा को पूरी तरह से बाजार के हवाले कर दिया जाए ताकि बहुत बड़ा हिस्सा शिक्षा से वंचित रह जाए। शिक्षा अमीर लोगों तक सीमित रह जाए, क्या ऐसा समाज/ देश 'विश्व गुरु' हो सकता है? यह एक दार्शनिक सिद्धांत है कि जब शासक वर्ग विभिन्न राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक समस्याओं से घिरा होता है तो वह लोगों का ध्यान इन समस्याओं से हटाने के लिए भूतकाल का महिमामण्डन GLORIFY करता है। ऐसा सिर्फ भारत में ही नहीं पूरी दुनिया में होता रहा है व हो रहा है। आम जनता के बड़े हिस्से के मन में यह बात बिठा दी जाती है कि जो भूतकाल था वह स्वर्णिम युग था ! हमने अपने देश को उसी स्थिति में लेकर। जब हम प्रगतिशीलता की बात करते हैं और यह कहते हैं कि

शेष पृष्ठ 48 पर

इंसान अंधविश्वासी क्यूं बनता है?

आज यदि भारत के लोगों को यदि कोई, आत्मा, परमात्मा चमत्कार, भूत, प्रेत के अस्तित्व के बारे में कोई कह रहा हो, तो जल्दी से उनके दिमाग मे उतरने लगता है। लेकिन इसके विपरीत कोई कुछ कह रहा है, तो उल्टा उसे पागल करार कर दिया जाता है ।

दोस्तों ऐसा क्यू होता है?' इसका जवाब ये है कि बचपन से होने वाले हमारे मन पर आस्तिक संस्कार। स्कूल हो या घर हो, हर तरफ दैवीय शक्ति को बचपन से हमारे कच्चे मन मे बिठा दी जाती है। ऐसे संस्कारों में हम पलते हैं, बड़े होते है और हमारे अंतर्मन मे यह बैठ जाता है कि भगवान का अस्तित्व है, शैतान भी है। उसे नकारने के लिए मन तैयार नही हो पाता। इसलिए अपने उन लोगों के सामने कितना भी माथा पीटे, तो भी वे यही कहेंगे कि भगवान है ।

आज भी टी.वी. सिरीयल में अंधविश्वास , काल्पनिक बातों के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं दिखाया जाता। इसलिए आज से ही अपने बच्चों पर विज्ञानवादी संस्कार दो ताकि वे अंधविश्वास के जाल मे न फंसे और खुद के फैसले खुद लेने लगेंगे किसी दैवीय शक्ति पर निर्भर नही रहेगें।

बचपन में माँ कहती है उधर मत जाना भूत आ जाएगा. बचपन मे माँ बताती है भगवान के सामने हाथ जोड़कर बोल भगवान मुझे पास कर दो।

टीवी पर कार्टून में चमत्कार, जादू जैसी अवैज्ञानिक बातें दिखाकर बच्चों का मनोरंजन किया जाता है, लेकिन चमत्कार और जादू की बातें बच्चों के अंतर्मन मे गहराई तक असर होता है और बड़े होने के बाद भी इंसान के मन मे चमत्कार और जादू के लिए आकर्षण कायम रहता है। स्कूल में जो विज्ञान सिखाया जाता है उसका संबंध रोजमर्रा की जिंदगी से न जोड़ना।

Law Of Monopoly:

मतलब 99 प्रतिशत समाज के लोग इसी राह पर चल रहे हैं तो जरूर वे सही ही होंगे, हमने उनका अनुकरण करना चाहिये ये समझ इन्सानी जीवन भाव भावनाओं की ओर उलझा होने के कारण उसमे असीम सुख और दुख की विस्मय कारक शॉकिंग मिलावट है, जो बातें उसे हिलाकर रख देती हैं और उसका चमत्कारों पर यकीन पक्का होता जाता है ।

हमने ये किया इसिलिये ऐसा हुआ और हमने ऐसा नहीं किया इसलिए हमारे साथ वैसा कुछ हुआ है। ऐसी कुछ योगायोग की घटनाओं को इंसान नियम समझकर जीवन भर उसका बोझ उठाता रहता है ।

Law Of Repeated Audio VisualEffect-

इस तत्व के अनुसार समाज मे मिडिया, माउथ पब्लिसिटी, सामाजिक उत्सव इत्यादि माध्यम से जो इंसान को बारबार दिखाया जाता है, सुनाया जाता है उस पर इंसान आसानी से यकीन कर लेता है। डर, और लोभ, ये दो नैसर्गिक भावनाएं हर इंसान के भीतर बड़े तौर पर होती हैं, लेकिन जिस दिन **ये भावनाएं इंसान के जीवन पर प्रभुत्व प्रस्थापित करती हैं तब वह मानसिक गुलामगिरी में फसता जाता है।**

और अंत मे सभी में महत्वपूर्ण बात 'चमत्कार' होता है -ऐसा सौ बार आग्रह से बताने वाले सभी धर्म के ग्रंथ इस बात की वजह है। इसलिए धर्म ग्रंथ में बतायी गयी अतिरंजित बातें कैसे गलत हैं, ये वक्त रहते ही बच्चों को समझाने की कोशिश करें। जो इंसान भूत-प्रेत के कारण रात के अंधेरे में अकेले सोने, चलने से डरता है, समझ लेना वह सबसे ज्यादा अंधविश्वासी है। उसका मन मानता है कि भूत है और यह धारणा यह साबित करती है कि भूत पहले है। भूत है तो ईश्वर है। उसका अंधविश्वासी होना एक प्रकार का डर है।

(साभारत)

देवी प्रसाद चट्टोपाध्याय

नरेन्द्र नाथ भट्टाचार्य

देवी प्रसाद चट्टोपाध्याय दर्शन शास्त्र और मनोविज्ञान के एक गंभी अध्येता थे और आधुनिक काल के एक सृजनशील भारतीय दार्शनिक के रूप में उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की थी। उनकी दार्शनिक जिज्ञासा की बुनियादी शक्ति मार्क्सवादी प्रेरणा थी, जिसके कारण उन्होंन भारतीय दर्शन के इतिहास में मनोवाद और भौतिकवाद के आपसी द्वंद्व की यथारर्थ प्रकृति को उद्घाटित किया। वे मानते थे कि जिस प्रकार यूनान में तत्वमीमांसा शब्द के मूल अर्थ का लोप हो गया और उसको आयोनियाई भौतिकवादियों के सुकरातपूर्व प्रकृतिवाद के विरोध में अमूर्त काल्पनिक चिंतन से जोड़ दिया गया, उसी प्रकार अधिकांश भारतीय दार्शनिक प्रणालियों ने अपने परिष्कृत रूपों में अपनी मूल भौतिकवादी अंतर्वस्तु से नाता तोड़ लिया और भौतिक जगत् से परे किसी काल्पनिक यथार्थ के अन्वेषण जैसे असम्भव काम को अपना उद्देश्य बना लिया। इसलिए उन्होंने भारत की लोक-परंपरा और वैज्ञानिक परंपरा, दोनों में भौतिकवाद के ऐतिहासिक मूल्यों की खोज की जरूरत महसूस की। उन्होंने इसका पता लगाने की आवश्यकता भी महसूस की कि किस प्रकार शताब्दियों के दौरा अभिजात वर्गो द्वारा प्रचारित भ्रांतिपूर्ण विवदृष्टि के तकाजे पूरे करने के लिए परिष्कृत धार्मिक और दार्शनिक ग्रंथों में इन पंरपराओं को ऐसा विचारवादी रंग दे दिया गया कि वे पहचान के काबिल भी नहीं रहीं।

यही प्रो. चट्टोपाध्याय की आजीवन जिज्ञासा थी जिसके कारण वे एक विषय से दूसरे विषय की ओर उन्मुख होते रहे। उनका विश्वास था कि धार्मिक और दार्शनिक ग्रंथों की अपने-आप में तब तक कोई उपयोगिता नहीं होती जब तक उनकी विषय-वस्तु को इतिहास और विज्ञान के परिणामों के संदर्भ में न रखा जाए। उनको एक ऐसी पद्धति की तलाश थी जिसकी सहायता से खंड-खंड बिखरे साक्ष्यों से आद्य-भैतिकवाद का चित्र तैयार करना ही सीाव न हो, बल्कि समूचे आदिम जीवन को सामाजिक विकास के विभिन्न असमान चरणों में रह रहे मनुष्यों की उत्पादक गतिविधियों से प्रत्यक्ष रूप से जोड़कर भह समझा जा सकें उनको ऐसी पद्धति का पता जार्ज ऑमसन के लेखन से चला। ऑमसन ने प्राचीन यूनानी साहित्य और दर्शन की व्याख्या के लिए मार्क्सवाद के बुनियादी सिद्धांतों का प्रयोग किया था, जो चट्टोपाध्याय को भारतीय स्थिति के विश्लेषण और व्याख्या के लिए भी सबसे कारगर लगा। इस पद्धति का उपयोग करते हुए उन्होंने तर्क दिया कि वैदिक विश्वदृष्टि अंततः जिस मनोवादी तामझाम से जुड़ गई, उसके बावजूद उसका आधारभूत तत्व एक प्रकार का आदिम आद्य-भैतिकवाद था जो अध्यात्मवाद से पूर्व की चेतना के चरण का सूचक है।

देवी प्रसाद के अनुसार रहस्यमय अनुष्ठानों से जुड़े अद्य-भैतिकवाद का आदिम स्वरूप ही आगे चलकर तंत्रविद्या के अधिक प्रचलित नाम से जाना जाने लगा, भले ही यह बात स्वयं तंत्रविद्या के बारे में प्रचलित लोकव्यापक धारणाओं की विरोधी लगे। भारत के पूरे सांस्कृतिक इतिहस में तांत्रिक आचार-विचारों के विशेषकर इतने लंबे समय तक जीवित रहने का कारण सामाजिक वास्तविकता में उन भौतिक स्थितियों का बचे रहना है, जिनसे ये उत्पन्न हुए। आदिम या कबीलाई समाज के अवशेष हमेशा से ही भारत के सामाजिक ढांचे की एक प्रमुख विशेषता रहे हैं। देवी प्रसाद ने इसे अपूर्ण वि-आदिवासीकरण (डिट्रइबलाइजेशन) का नाम दिया और इस जनता की उन सांस्कृतिक संरचना, ग्राम-समुदाय, जाति-संगठन, परंपरागत विधानों, मातृसत्ता या स्त्रियों की मूल सामाजिक श्रेष्ठता और उस पर जबरन लादी गई पितृसत्ता के हवाले देकर स्पष्ट किया।

देहवाद और उससे जुड़े रहस्यमय अनुष्ठानों

का भौतिक आधार अंततः क्या रहा होगा और जीवन-निर्वाह के भौतिक सारधनों की प्राप्ति से किस प्रकार उनका संबंध स्थापित किया जा सकता है, इसका पता लगाने के लिए देवी प्रसाद ने आदिम कृषकों के प्रचनन संबंधी जादू-टोने में तंत्रविद्या का उद्‌गम ढंढने के प्रयास किए। उन्होंने यह तर्क दिया कि सांख्य दर्शन मूलतः उस आदिम आद्य-भौतिकवाद का विकास था जो तंत्रविद्या का मूलाधार था। पृथ्वी की स्त्री से और प्रकृतिक उत्पत्ति की मानव-प्रचजनन से पारंपरिक पहचान, जो कृषकों के अनेक विश्वासों और कर्मकांडों का मूल है, इस तथ्य के संकेत देती है कि प्रकृति के रहस्यों को मानव-काया के रहस्यों के द्वारा समझा जा सकता है ओर यह कि यह ब्रह्मांड की उत्पत्ति के समान या उससे मिलती-जुलती प्रक्रिया का परिणाम है। इस विचार-प्रणाली में ऐसी किसी बात के लिए कोई स्थान नहीं होता जो, ईश्वर, आत्मा के परलोक को प्राथमिकता देती हो। इस आ-भौतिकवादी तांत्रिक परंपरा का मूल चूंकि कृषि-संबंधी शारीरिक श्रम में था, इसलिए इसमें परवर्ती भारतीय विज्ञान और विशेष रूप से शरीर क्रिया विज्ञान तथा रसायन विद्या की संभावनाएं भी मौजूद थी। वैदिक ग्रंथों के आधार पर देवी प्रसाद ने यह तर्क भी दिया कि मानव-चेतना में मनोवादी दृष्टि के उदय के लिए कर्म से चिंतन का और शारीरिक श्रम से मानसिक श्रम का अलगाव तथा सामाजिक रूप से शारीरिक श्रम के प्रति तिरस्कार-भव का जुड़ना आवश्यक था।

देवी प्रसाद की दूसरी प्रमुख रचना इंडियन फिलासफीः पॉपुलर इंट्रोडक्शन (1964) है, जो लोकायत में प्रस्तूत दृष्टकोण को और आगे बढ़ाती है। आधुनिक युग की दार्शनिक आवश्यकताओं की चेतना के साथ लिखे गए इस ग्रंथ में देवी प्रसाद ने आवश्यक आलोचनात्मक और चयनमूलक दृष्टिकोण अपनाया है। जिन विचारों और सिद्धांतों को उन्होंने आज की दार्शनिक आवश्यकताओं के प्रतिकूल समझा है, उन्हें उन्होंने आलोचनात्मक ढंग से खारिज किया है और जिनका कुछ महत्व शेष है उनको रेखांकित और उजागर किया हैं उनके विचार में एक समय था जब अतीत की अंधउपासना हमारे स्तंत्रता संघर्ष और देशहित का एक कारगर साधन थी। तिलक और दूसरों की रचनाओं में पारंपरिक दर्शन का जो उग्र समर्थन हम पाते हैं, उसने हमें सचमुच ःएक प्रकार का उत्साह' प्रदान किया, भले ही स्वयं उस दर्शन की अपनी उपयोगिता कुछ भी रही हो। बहरहाल, तब कोई भी देशभक्त गीता को हाथ में लेकर सधे हुए कदमों से फांसी के तख्ते तक भी चला जाता था। लेकिन राजनीतिक स्वाधीनता की प्राप्ति के बाद स्थिति पूरी तरह बदल चुकी है। देवी प्रसाद के विचार में सामंतवाद सामंती विचारों के रूप में अभी भी हमारी चेतना में विराजमान है और निश्चय ही इनमें कुछ युगों पुराने दार्शनिक विचार भी शामिल हैं। वे कहते हैं कि प्रतिक्रियावादी विचारों से संघर्ष करने के अस्त्र हमें अपनी सांस्कृतिक धरोहर में ही मिलेंगे, 'कारण कि हमारे पारंपरिक दर्शनिकों में वे लोग भी थी जिन्होंने उन वैचारिक प्रवृत्तियों को कड़ी चुनौती दी जिनके विरोध की पैरवी आज हम विज्ञान और प्रगति के हित में करते हैं।'

यहीं से हम उनकी तीसरी रचना 'इंडियन एंथीज्म : ए मार्क्स्टिक एनैलिसिस' (1986) पर पहूंचते हैं। आज भारत में मार्क्सवाद के विरोध में जो प्रचार कि जाता है उसमें इस प्रचार से बढ़कर कुछ भी नहीं हैं कि मार्क्सवाद एक प्रकार का शुद्ध अनीश्वरवाद है और इसलिए यह हमारी उस राष्ट्रीय धरोहर के विनाश का कारण बनेगा जो प्रचारकों के अनुसार ईश्वर को सर्वोच्च सत्ता मानती है। देवीप्रसाद इन प्रचारकों के सामने एक आसान-सा सवाल रखते हैं। नास्तिकता के आधार पर मार्क्सवाद को खारिज करने की मांग करने से पहले क्या उन्होंने हमारे दार्शनिकों की वास्तविक रचनाओं को पढ़ने का कष्ट उठाया है? अथवा यह कि क्या वे इन तमाम रचनाओं को इसलिए नष्ट करना चाहते हैं कि भारतीय ज्ञान-विज्ञान के मूलतः ईश्वरमुखी होने की कमात्र कपोल कल्पना की रक्षा कर सकें-उस कपोल कल्पना की जिसके सहारे वे भारत में मार्क्सवाद के प्रसार को रोकना चाहते हें? देवी प्रसाद के विचार में परंपरागत भारतीय मनीषियों के बीच ईश्वर के निषेध पर ही सर्वाधिक स्पष्ट सहमति है। ये प्रमुख मनीषी भारती दर्शन प्रणालियों के विश्वसनीय प्रतिपादक

थे और तथ्य यह है कि उनमें एक बहुत बड़ा भाग कट्टर नास्तिकों का था।

'व्हाट इस लिविंग ॲण्ड व्हाट इस डेड इन इंडियन फिलॉसफी' (1976) में प्रो. चट्टोपाध्याय ने धर्म निरपेक्षत, बुद्धिवाद और वैज्ञानिक प्रवृत्ति के विरोधी विचारों और द्रष्टिकोणाों के अतीत के ऐसे बोझ माना है, जो प्राचीन काल और मध्यकाल की तरह आज की भारतीय की प्रगति में बाधा डालना चाहते हैं। उनके वास्तविक सामाजिक कार्य को निर्ममता से उद्घाटित करते हुए वे जोर देकर कहते हैं कि इन प्रतित्त्यावादी विचारों से आज मुख्यतः भारतीय मुहावरें में ही लड़ा जा सकता है, कारण कि सत्यान्वेषी भारतीय विचारकों के बाद ने बाद की पीढ़ियों के लिए केवल प्रवंचनाएं और झूठ के सूत्र ही नहीं छोड़े थे। उनमें ऐसे विचारक भी थे जो अपने ढंग से उन्हीं वैचारिक शक्तियों से लड़ते रहे, हालांकि उन्होंने यह लड़ाई ऐतिहासिक रूप से अपरिर्हाय सीमाओं के अंदर लड़ी। इस प्रकार परंपरागत भारतीय चिंतन के कोश में बहुत-कुछ ऐसा है जो हमारी समकालीन दार्शनिक आवश्यकताओं के लिए जीवंत महत्त्व रखता है। उन्होंने इसको खोजा, पहचाना और साक्ष्यों के साथ प्रस्तुत किया। देवी प्रसाद के अनुसार, आज के कड़े राजनीतिक संघर्ष में भारतीय दर्शन के उपयोग के प्रयास भी किए जा रहे हैं, और ऐसे चिंताजनक दिनों में भारतीय दर्शन में क्या जीवंत है और क्या मृत, इसके विश्लेषण को अधिक सावधानी के साथ और प्राथमिकता के स्तर पर हाथ में लिये जाने की जरूरत है।

इा प्रकार देवी प्रसाद ने भारतीय दर्शन में बुद्धिवाद, भौतिकवाद और वैज्ञानिक दृष्टिकोण की एक समानांतर परंपरा ढूंढ निकाली। इसके लिए उन्होंने भारी परिमाण में ग्रंथों में उपलब्ध शुष्क तथ्यों का विश्लेषण आश्चर्यजनक सुबोधता, लेकिन तीक्ष्ण विश्वासोत्पादक तर्कपद्धति का प्रयोग करते हुए किया। लेकिन जो प्रश्न उनको परेशान कर रहा था वह यह था कि यह समानातंर परंपरा अपने अस्तित्व के भारतीय साक्ष्यों के बावजूद क्यों प्रमुखता नहीं प्राप्त कर सकी और युगों तक एक दमित विश्वदृष्टा क्यों बनी रही। उन्होंने इस प्रश्न का उत्तर देने की कोशिश 'साइंए ऍण्ड सोसाइटी इन अंशिअंट इंडिया' (1977) में की है। इसमें वे कहते हैं कि प्राचीन भारत में प्रत्यक्षवादी विज्ञान का आरंभ जिस गंभीर संभावना के साथ हुआ, अंततः उसे एक श्रेणीबद्ध समाज की वैचारिक आवश्यकताओं ने समाप्त कर दिया। श्रेणी-विन्यास से जुड़ी आकांक्षाएं लगभग हर उस वस्तु को खतरा समझती थीं जो विज्ञान को संभव बनाती-इहलौकिकता, अनुभवाश्रित तथ्यों का बुद्धिसंगत अभिसंस्कार और प्रकृति के नियमों की अबाध खोज। भारतीय चिकित्साविज्ञान के इतिहास के संदर्भ में वे कहते हैं कि **उसने जादू और धर्म पर आधारित चिकित्सा से बुद्धिसंगत चिकित्सा प्रणाली की दिशा में एक बड़ा कदम उठाया और ऐसी अनेक सैद्धांतिक और व्यावहारिक प्रस्थापनाएं सामने रखीं जिनमें से कुछ तो आश्चर्यजनक रूप से आधुनिक विज्ञान की दहलीज तक आ पहुंची हैं। लेकिन यह प्रगति जोखिम-भरी साबित हुई।** इन प्रस्थापनाओं को बल पहुंचाने के लिए रहस्यवाद, कर्मकांड और धर्म के आवरण को नष्ट करना आवश्यक था, जिनको पुरोहितों के शक्तिशाली संगठनों तथा विधिनिर्माताओं ने भी निहित स्वार्थो को वैध ठहराने के लिए पवित्र घोषित कर रखा था। इसी कारण 1000 वर्षो से अधिक समय तक लगातार इन प्रस्थापनाओं की निंदा की जाती रही। इन दबावों के कारण हमारे वैज्ञानिकों ने अपनी वैज्ञानिक कृतियों पर रूढ़िवाद का आवरण चढ़ाकर विधिनिर्माताओं की निंदा से बचने की कोशिश की। यही कारण है कि इन कृतियों में बौद्धिक कचरे के ढेर जमा हो गये।

प्रो. चट्टोनपध्याय की अंतिम महान् रचना 'हिस्टरी ऑफ साइंस ॲण्ड टेक्नोलॉजी इन अंशिअंट इंडिया' (2 खंडों में, 1986, 1991) उनकी लोकायत से प्रारंभ हुई यात्रा का अंतिम बिंदु थी। प्रथम खंड का प्रमुख विषय प्रथम नगरीकरण के काल में, जिसकी विशेषता हड़प्पा सभ्यता थी, विज्ञान का आरंभ है। यह खंड कालक्रम-निर्धरण, नगरीकरण की प्रगति तथा मृदुभंड, यातायात, वस्त्रनिर्माण, धातुकर्म और संबद्ध कलाओं और शिल्पों में हुई प्रौद्योगिकीय प्रगति के विशेष संर्भ में मगध साम्राज्य

के उदय तक के काल की विवेचना करता है। देवीप्रसाद के विचार में प्रथम नगरीकरण के काल में विज्ञान का आरंभ केवल गणित और खगोलविद्या के सीमित अर्थ हुआ और 'प्रकृति विज्ञान या प्रकृति' के ज्ञान की संभावनाओं की उपेक्षा हुई क्योंकि यह किसी बाहरी तत्व से या प्रकृति के अधिष्ठाता समझे जाने वाले देवी-देवताओं से रहित होता है।' दूसरा खण्ड इस प्रश्न से आररंभ होता हैः पहले नगरीकरण के दौरान इस अर्थ में प्रकृति-विज्ञान क्यों संभव नहीं हुआ? इसका उत्तर प्रचीनतम नगरों के प्रशासनिक ढांचे में ढूंढने का प्रयास किया गया है, जिसे बहुत बड़े पैमाने पर गणित और खगोलविद्या की उसी प्रकार जरूरत थी जिस प्रकार अंधविश्वासों की। लेकिन आठवीं या सातवींशताब्दी ई.पू. के आसपास भारतीस इतिहास दूसरे नगरीकरण की दिशा में एक नारटकीय मोड़ लेने लगा। इस दूसरे नगरीकरण का प्रशासनिक ढांचा अलग था और इसलिए उसका बौद्धिक परिवेश भी अलग था, जिसमें प्रकृति के प्रति एक सलौकिक दृष्टिकोध के विकास की ससंभावना थीं एक गंभी बौद्धिक उथल-पुथल जारी थी और विचारक प्रकृति को समझने के लिए विभिन्न वैकल्पिक मार्गों की तलाश में थे। इस प्रकार एक उत्त्म वैज्ञानिक पद्धति लेकर पला वैज्ञानिक सामने आया। यही पद्धति थी जिसने जादू और धर्म पर आधारित चिकित्सा की जगह बुद्धिसंगत चिकित्सा पद्धति की दिशा में एक क्रांतिकारी प्रगति का रास्ता तैयार किया। भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में इस स्थिति ने परमाणुवाद की परिकल्पना को जन्म दिया। देवी प्रसाद रष्ट्रीस वैज्ञानिक-प्रद्योगिकी और विकास अध्ययन संस्थान /वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद् द्वारा प्रायोजित इसी 'विज्ञान का इतिहास' श्रंखला के शेष खंडों के लिए कार्यरत थे जब उनकी आकस्मिक मृत्यु ने उन्हें हमसे छीन लिया।

देवीप्रसादचट्टोध्याय का जन्म 1918 में हुआ था। 1941 में उन्होंने दर्शन में परास्नातक परीक्षा प्रथम श्रेणी में और प्रथम स्थान के साथ उत्तीर्ण की। उन्होंने प्रो.ॲनदासगुप्त के मार्गदर्शन में शोधकसर्य किया तथा बंबई और कलकत्ता के विभिन्न महाविद्यालयों में अध्यापन कार्य किया। वे भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के एक सक्रिय सदस्य थे और अपने आरंभिक दिनों में उन्होंने जनता और खासकर नए मार्क्सवादियों के लिए लेखन कार्य किया। उनकी लोकप्रिय पुस्तकें और खासकर बंगला में रचित पुस्तकें अनेक विषयों को समेटती हैं। उन्होंने नौजवानों के लिए बंगला में ज्ञानबार कथा लिखी। उन्होंने लिए उन्होंने रामकृष्ण मैत्र के साथ मिलकर पृथ्वी-इतिहास भी लिखी। उन्होंने विदेशी वामपंथी बुद्धिजीवियों की पुस्तकों और लेखों का बंगला अनुवाद भी किया। उक्त कृतियों के अलावा उन्होंने लामा तारानाथ की एक पुस्तक के अंगेजी अनुवाद 'हिस्टरी ऑफ बुद्धिज़्म इन इंडिया' का संपादन किया; यह अनुवाद लामा चिंपा और अलका चट्टोपाध्याय का किया हुआ थास। उन्होंने मूलतःरमेश चंद्र द्वारा ऋगवेद के बंगला अनुवाद का, भारतीय दर्शन के इतिहास पर उच्च कोटि के लेखों के चयन पर भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् की परियोजना का, और (कृणालकांति गंगोपध्याय के सहयोग से पांच खंडों में) वात्सयायन के भाष्य समेत गौतम कृत न्याय सूत्र का भी संपादन किया। उन्होंने 1959 में इंडियन स्टडीज पॉस्ट ॲण्ड प्रेजेंट नामक एक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन भी किया।

देवीप्रसार चट्टोपाध्याय को कलकत्ता विश्वविद्यालय ने डी.लिट्. की उपाधि दी तथाविज्ञान अकादमी, मास्को से उन्हें, डी.ऍस,सी. की मानक उपाधि प्राप्त हुई। उन्हें विश्वविद्यलय अनुदान आयोग से एक पुरस्कार तथा सोवियत भूमि नेहरू पुरस्कार भी प्राप्त हुए। उन्हें जर्मन विज्ञान अकादमी, बर्लिन का अकादमिशियन, विश्व दर्शन कांग्रेस वर्ना (1973) का उपाध्यक्ष, और विश्व संस्कृत सम्मेलन, वाइगर (1979) का अध्यक्ष भी चुना गया। भारत और विदेशों में बड़े पैमाने पर व्याख्यान देने के अलावा वे कलकत्ता विश्वविद्यालय, आंध्र विश्वविद्यालय और पुणे विश्वविद्यालय में विजिटिंग प्रोफेसर भी रहे। वे भारतीय इतिहारस अनुसंधान परिषद्से घनिष्ठ रूप से जुड़े थे।

(भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली की शोधपत्रिका 'इतिहास' के जनवरी-दिसंबर 1994 के अंक से उद्धृत)

बाबाओं के काले कारनामे

ऐसे पुजारी से कौन भगवान पूजा करवाएगा ?

किशोरी का एक साल तक यौन शोषण करने वाले पुजारी को उम्रकैद

`कोच्चि : नाबालिग लड़की का अभिभावक बनकर एक साल तक दुष्कर्म करने वाले पुजारी को उम्रकैद देते हुए केरल हाईकोर्ट ने कहा, पता नहीं कौनसा भगवान नाबालिग बच्चों का शोषण करने वाले पुजारी से अपनी पूजा करवाएगा।

जस्टिस के विनोद चंद्रन और जस्टिस जियाद रहमान ए. ए. ने केरल में मलप्पुरम के मंजिरी नगर के रहने वाले मुधा नामक व्यक्ति को यह सजा दी। कोर्ट ने कहा, जब व्यक्ति पत्नी-बच्चों को बेसहारा छोड़ देता है तो आवारा गिद्ध महिला और बच्चों को भी अपना शिकार बनाने से नहीं चूकते। इस मामले में पुजारी मधु ने एक बेसहारा महिला और उसके तीन बच्चों को आश्रय देने के नाम पर साथ रखा था। फिर महिला की बड़ी बेटी से दुष्कर्म किया। उस समय छोटे भाई-बहन भी वहीं मौजूद होते थे। यह मंदिर में पुजारी था और अक्सर शराब पीकर घर आता था। चिकित्सकीय जांच में यौन शोषण की पुष्टि हुई थी। मधु को पोक्सो अदालत ने दोषी करार दिया था। उसने हाईकोर्ट में में अपील की थी। एजेंसी।

फ्रांसः कैथोलिक चर्चों में 3.30 लाख बच्चों का यौन शोषण

2 पेरिस। फ्रांस के रोम कैथोलिक चर्चो में 3.30 लाख बच्चों का यौन शोषण हुआ है। इनमें 80 प्रतिशत पीड़ित लड़के थे। बीते 70 वर्षो में हुए इन यौन शोषण पर 2500 पृष्ठों की एक रिपोर्ट मंगलवार को जारी की गई। अपनी तरह के इस सबसे बड़े खुलासे के अनुसार कम से कम 3000 बाल यौन शोषण के अपराधियों ने यह किया गया। इनमें से अधिकतर में प्रीस्ट (छह स्तर के ईसाई धर्मगुरुओं में पांचवें) खुद शामिल थे।

फ्रांस के चर्चों में यौन शोषण के इस शर्मनाम मामलों की जांच कर रहे एक स्वतंत्र आयोग द्वारा ढाई साल की जांच के बाद बनाई इस रिपोर्ट के अनुसार चर्च में काम करने वाले कई गैर-धर्मिक लोगों ने भी बच्चों का यौन शोषण किया। आयोग अध्यक्ष जॉन मार्क सॉव ने कहा, इन 3.30 लाख बच्चों के जीवन पर शोषण के बेहद बुरे प्रभाव पड़े। 60 प्रतिशत बच्चे संवेदना के स्तर पर और सेक्स लाइफ में हमेशा परेशानियों से घिरे रहे। रिपोर्ट तैयार करने में मददगार बने पीड़ितों के एक संगठन के प्रमुख ओलिवियर सेविग्नक ने बताया कि एक ही यौन अपराधी ने कई-कई बच्चों का शोषण किया। यह फ्रांस के समाज के लिए बेहद डराने वाला तथ्य है। एजेंसी।

नाबालिग बच्चियों को निर्वस्त्र घुमाया, आठ पर केस दर्ज

दमोह। मध्य प्रदेश के दमोह में बारिश होने के लिए एक अनुष्ठान में नाबालिग लड़कियों को निवस्त्र घुमाने की घटना को लेकर आठ लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। पुलिस ने बताया, आरोपियों ने रविवार को जबेरा थाना क्षेत्र के बनिया गांव में रविवार को छह नाबालिग बच्चियों को निर्वस्त्र कर घुमाया और घटना का वीडियो भी बनया। आरोपियों पर पोकसो एक्ट और आईपीसी की कई धाराओं में मामला दर्ज किया गया है। एजेंसी। -अमर उजाला 11-9-2021

अंधविश्वास के चलते

मान्यता के तहत स्नान करने आया इंजीनियर यमुना में बहा

गांव उमेदगढ़ का रहने वाला संदीप फरीदाबाद में इंफोसिस कंपनी में है, इंजीनियर, सोमवार को जाना था कनाडा

संवाद न्यूज एजेंसी

मुरथल/सोनीपत । कनाडा जाने से पहले परिवार की मान्यता पूरी करने यमुना के मिमारपुर घाट पर पत्नी के साथ स्नान करने आया इंजीनियर पैर फिसलने से तेज बहाव मे डूब गया।

वहीं युवक के परिजनों घटना के बाद रोष जताया और आरोप लगाया कि यमुना घाट पर हादसा होने की दशा में बचाव के लिए कोई संसाधन उपलब्ध नहीं हैं। गोताखोर व मोटरबोट से युवक की तलाश की जा रही है। गांव उमेदगढ़ का रहने वाला संदीप गौतम (30) फरीदाबाद में इंफोसिस कंपनी में इंजीनियर है। वह फिलहाल फरीदाबाद में ही रहता है। संदीप की करीब डेढ़ साल पहले मनीषा के साथ शादी हुई थी। परिवार में मान्यता है कि शादी के बाद दंपती को एक साथ यमुना स्नान करना होता है। संदीप को कंपनी की तरफ से सोमवार को कनाडा जाना था। कनाडा जाने से पहले परिवार की मान्यता को पूरी करने के लिए रविवार को यमुना स्नान का कार्यक्रम बना लिया। वह परिवार की मान्यता को पूरी करने के लिए रविवार को यमुना स्नान का कार्यक्रम बना लिया। वह परिवार के सदस्यों के साथ रविवार सुबह यमुना पर स्नान करने गांव मिमारपुर घाट पर आए थे। पत्नी मनीषा ने बताया कि संदीप उनसे दो कमद आगे चल रहे थे। जब वह यमुना के किनारे पहुंचे तो अचानक पैर फिसलकर यमुना में गिर गए और तेज बहाव के कारण डूब गए। उन्होंने तुरंत पुलिस व प्रशासन से गुहार लगाई, लेकिन कोई मदद नहीं मिल सकी। ऐसे में उन्होंने निजी गोताखोर बुलाकर संदीप की तलाश शुरू करा उदी है। निजी गोताखोर व प्रशासन की तरफ से दोपहर को भेजी गई मोटरबोट की मदद से उसकी तलाश जारी है।

मासूम लोगों की आस्था पर कारोबार

क्या वाकई आती है महिलाओं पर माता, क्या कहता है साईंस?

नवरात्रि के दौरान सुनने में आता है कि किसी महिला पर माता आ गई। वो झूमने लगती है, अलग आवाज में बोलने लगती है या फिर किसी न न किसी तरह का अजीबोगरीब व्यवहार दिखता है। हालांकि मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि ये हिस्टीरिया है, यानी वो मनोवैज्ञानिक बीमारी, जो अक्सर उन महिलाओं में होती है जो किसी ट्रॉमा से गुज़र रही हों। एक्स्पर्ट ये भी मानते हैं कि लगातार किसी मंत्र भजन, तबले या ढोलक की वाइब्रेशन से भी ऐसा होता है। ये आवाजें ट्रिगर करती हैं और पहले से ही परेशान महिला अजीब व्यवहार करने लगती है। इसे साइकोलॉजी की भाषा में पजेशन सिंड्रोम कहते हैं।

वैसे 'माता आना' टर्म महिलाओं तक ही सीमित नहीं, पुरुषों के साथ भी ऐसा होता है। इस बारे छत्तीसगढ़ अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के अध्यक्ष डॉ दिनेश शर्मा बताते हैं कि उनके सामने कई ऐसे मामले आए, जब पुरुषों ने खुद पर हनुमान, साईबाबा या किसी देवता के आने का दावा किया। बकौल डॉ.मिश्रा, इसमें आधे मामले तो अंधविश्वास के हैं, जबकि कई मामले फर्जीवाड़ा भी है। ऐसे लोग, मासूम लोगों की आस्था पर कारोबार चलाते हैं। इनसे जैसे ही साईंस की बात की जाए, वे मैदान छोड़ कर भाग जाते हैं। वहीं, ऐसे लोग, जो पजेशन सिंड्रोम का शिकार हुए हों, उन्हें जैसे ही उस माहौल से हटाया जाता है, वे नॉर्मल हो जाते हैं। जैसे अगर वो म्यूजिक बंद कर दया जाए, जिसमें वे खुद पर 'देवी आना' क्लेम करते हैं।

बच्चों का कोना

कुछ-कुछ एलीयन जैसा दिख

इस गतिविधि का वैसे तो एलीयन (पर-ग्रह वासी) से दूर-दूर तक कोई वास्ता नहीं है। लेकिन बच्चे इस गतिविधि को काफी पसंद करते हैं।

जरुरी सामानः

एक मिलीमीटर मोटाई का एक मीटर लंबा तार, पानी से भरे दो गुब्बारे जिनका वज़न लगभग समान हो।

इस तरह से करें:

*तार को आकार में मोड़ लें। की बाहर भुजाएं अंदर की भुजाओं से काफी लंबी रहनी चाहिए। तार के छोर पर हुक बना लें और उन पर पानी भरे गुबबारे बांध लें।

* तार को अपने सिर पर रख लें, संभवतः वह संतुलित हो जाएगा। संतुलित न हो तो तार के सिरे और नीचे खींच लें। अब आप किसी एलियन जेसे दिखाई दे रहे हैं । आप इसे सिर पर रखकर यहां-वहां घूम भी सकते हैं।

कुछ चर्चाः

तार की तुलनास में पानी भरे गुब्बारे बहुत भारती हैं, इसलिए इस सेटअप का गुरुत्व-केंद्र खुद-ब-खुद आधार (तार का मध्य जो सिर पर टिका है) के ठीक नीचे आ जाता है।

अपनी जगह खड़े-खड़े ही तेजी से गोल घूम जाएं। क्या आपके साथ गुबबारे भी खूमते हैं ?

मट्ठी में बंद सिक्का पहचानिए

आप यह खेल दिखा कर दोस्तों को हैरत में डाल सकते हैं।

इस तरह से करेंः

टेबल पर कुछ सिक्के रख दें और आंखों पर पट्टी बांध लें।

आपका दोस्त इनमें से एक सिक्का कुछ सेकंड के लिए मुट्ठी में बंद करेगा और टेबल पर रख देगा। आप सिक्कों को सूघंकर, मुट्ठी में बंद सिक्का पहचान कर दोस्तों को हैरत में डाल देंगे।

दरअसल, आपने सूंघने का नाटक करते हुए सिक्कों को अपने ऊपरी ओंठ से छुआ। मुट्ठी में बंद सिक्का बाकी सिक्कों के मुकाबले थोड़ा गर्म था।

कुछ चर्चाः

किसी भी वस्तु (यहां सिक्के) का तापमान हमेशा आसपास के तापमान के बराबर रहता है। और हमारे आसपास का तापमान प्रायः हमारे शरीर के तापमान से कम रहता है। जब सिक्का मुट्ठी में पकड़ते हैं, हाथ से ऊष्मा लेकर सिक्का कुछ गर्म हो जाता है।

जब आप ठंडी वस्तु को छूते हैं तो ऊष्मा आपके शरीर से उस वस्तु में जाने लगती है और वस्तु आपको ठंडी महसूस होती है। यदि वस्तु शरीर से गर्म हो, शरीर उस वस्तु से ऊष्मा प्राप्त करता है और वह हमें गर्म महसूस होती है।

धार्मिक बाबा लोग इसी ट्रिक का प्रयोग कर लोगों को भ्रमाते हैं और मदारी लोगों का मनोरंजन करते हैं

गैस गीजर से नहाते समय खतरे व सावधानियां

- गुरमीत अम्बाला

सर्दी का मौसम शुरू होने वाला है, कुछ लोग अभी से गर्म पानी से नहाना शुरू कर देंगे !! पहले नहाने के पानी को लकड़ी जलाकर गर्म किया जाता था, फिर इलेक्ट्रिक हीटर, फिर इमर्सन रॉड, इलेक्ट्रिक गीजर आदि आए कुछ वर्षो से गैस गीजर लोकप्रिय हो गया ! क्योंकि गैस गीजर लागत की दृष्टि से किफायती माने जाते हैं, और तत्काल गर्म पानी आता है, इसलिए इन गैस गीजरों का उपयोग आम होने लगा है। बहुत से लोग इन गैस गीजर को सुरक्षित रूप से चलाना नहीं जानते हैं। यहां तक कि बहुत ही पढ़े लिखे लोग भी इस चीज की जानकारी नही रखते कि गैस गीजर को प्रयोग करते समय क्या सावधानियां रखनी चाहिएं। एक जान पहचान के डॉक्टर थे। उनकी बहू भी इस गीजर की शिकार हुई थी। मेरे मुहल्ले में एक महिला जो इंजीनियर है, बाथ रूप बन्द करके नहाने से बेहोश हो गई थी ,गनीमत है कि बच्चों दुवारा शोर मचाने से समय पर दरवाजा तोड़ कर उन्हें बचाया जा सका। इसी प्रकार मेरे आस पास पिछले पांच सालों ऐसी लगभग तीन घटनाएं घटी हैं।

यहां यह तथ्य भी महत्वपूर्ण है कि गैस गीजर बनाने वाले भी इसके सभी खतरों से अनजान हैं, क्योंकि ज्यादातर गीजर चीन से आयत होते हैं भारत मे बहुत सी कम्पनियां अपना लोगो लगा कर बेचती हैं।

आम तौर पर हम गीजर को बाथरूम के अंदर फिट कर देते हैं और गैस सिलेंडर को यह सोचकर बाहर रख देते हैं कि सिलेंडर से कोई दुर्घटना नहीं होगी। जबकि ज्यादातर दुर्घटना गीजर से होती है, सिलेंडर से नहीं। इस गीजर में हमारे किचन में रखे गैस चुल्हे की तरह गैस बर्नर होते हैं

इसलिए जब हम बाथरूम का दरवाजा बंद करते हैं और गीजर चालू करते हैं, हम जानते हैं कि आक्सीजन स्वयं नही जलती परन्तु जलने में सहायक होती है इस लिए बाथरूम के अंदर की हवा में से ऑक्सीजन धीरे-धीरे खत्म होने लगती है। सर्दियों में हम अक्सर बाथरूम में बने रोशनदानों को भी यह कह कर बन्द कर देते हैं कि इसमें से ठंडी हवा आती है। किचन की तरह बाथरूम में एग्जास्ट फैन भी नही लगाते। जिससे बाहर से हवा आने की प्रक्रिया रुक जाती है। धीरे धीरे बाथरूम, जो आम तौर पर छोटे बनाए जाते हैं उसमें मौजूद आक्सीजन धीरे धीरे खत्म होने लगती है और अंदर नहाते हुए व्यक्ति को पता ही नहीं चलता कि कब सांस लेने के लिए जरूरी आक्सीजन खत्म हो रही है और वह बेहोश हो कर गिर जाता है। दूसरी तरफ बर्नर में लगातार आग जलने से कार्बन मोनोऑक्साइड जैसी अन्य जहरीली गैसें बाथरूम में जमा हो जाती हैं और सांस लेना मुश्किल हो जाता है ।

ऐसे में अगर बेहोश व्यक्ति को समय रहते प्राथमिक उपचार मिल जाए, जल्द ही पता चल जाए तो जान बच जाती है, वरना जिंदगी से मौत में जाने में ज्यादा देरी नहीं लगती।

कुछ सावधानियां बरतने से हम सुरक्षित रह कर सर्दियों में गर्म पानी से आनन्द ले सकते हैंरू-

1. गैस सिलेंडर अंदर रखें या बाहर उससे फर्क नही पड़ता परन्तु गीजर को हर हाल में बाथरूम से बाहर रखना चाहिए।
2. अगर बाहर गीजर लगाना संभव न हो तो एक्जास्ट फैन जरूर लगाएं और नहाते समय उसे चला कर रखें, ताकि अंदर ताजी हवा का प्रवेश हो सके !!
3. अगर दोनों संभव न हो तो नहाने से पहले पानी गर्म कर लें और बाल्टी में भर कर नहाएं और गीजर बंद कर दें।
4. अगर नहाते समय कोई बेहोश हो जाए उसे तुरंत निकाल कर खुली हवा में ले जाएं उसके चारों तरफ भीड़ नही लगनी चाहिए। हल्की बेहोशी होने पर व्यक्ति हवा में आते ही होश आ जाएगा, साथ ही तुरन्त मैडीकल सहायता व्यक्ति को पहुंचाएं,

5.   कई बार हम बाथ रूम में हम मजबूत कुंडी लगा देते हैं जिसे एमरजेंसी में तोड़ना मुशिकल रहता है, इसलिए अगर घर मे अगर पति पत्नी व छोटे बच्चे हों तो कुंडी न ही लगाएं या बाथरूम में से बाहर निकलने की आकस्मिक व्यवस्था बनाएं जैसे जाली न लगा कर शीशे का दरवाजा या बड़ी खिड़की की व्यवस्था जिसे आसानी से तोड़ा जा सके।

6.बाथरूम में चिटकनी इस प्रकार से लगाएं कि जहां तक बच्चों का हाथ न जा सके ताकि वे गलती से उसे लगा न लें।

7.   बुजुर्गो को नहाने के लिए गर्म पानी बाल्टी में ही दें और नहाते समय फर्श पर प्लास्टिक शीट बिछाएं जिस से फिसलन से बचा जा सके।

ऐसी घटनाएं ज्यादातर लड़कियों/महिलाओं के साथ होती हैं, क्योंकि वे पुरुषों से ज्यादा समय बाथरूम में बिताती हैं।

बाकी अपने ज्ञान के अनुसार अन्य सावधानियां भी बरती जा सकती हैं।

खोज-खबर

सोने का सही समय रखेगा दिल को सेहतमंद

रात दस से 11 बजेके बीच हे सोने का सही समय, ब्रिटेन में88 हजार लोगों पर शोध

अमर उजाला रिसर्च टीम

लंदन । देश में पुनीत राजकुमार व सिद्धार्थ शुक्ला जैसे अभिनेता हार्ट अटैक से जान गवां बैठे। एक ताजा अध्ययन के अनुसार हृदय को सेहतमंद रखना है तो सोने का सही समय पता होना चाहिए। ब्रिटेन के यूनिवर्सिटी ऑफ एक्सटर के वैज्ञानिकों ने 88 हजार लोगों पर अध्ययन के बाद कहा है कि स्वस्थ हृदय व सुरक्षित जीवन के लिए रात दस बजे से 10 बजकर 59 मिनट के बीच सो जाना चाहिए।

प्रमुख शोधकर्ता प्रो. डेविड प्लान्स का कहना है कि शरीर की अपनी 24 घंटे चलने वाली आंतरिक घड़ी होती है जिसे वैज्ञानिक भाषा में सर्केडियन, रिदम कहते हैं। यह शारीरिक और मानसिक क्रिया में संतुलन बनाने का काम करती है। सोने और आराम करने का सही समय तय न होने के कारण ये घड़ी असंतलित होती है जिससे शरीर को कई तरह से नुकसान पहुंचता है। वैज्ञानिकों अनुसार जो लोग रात दस बजे से पहले सो जाते हैं उनमें बाद में हृदय रोग का खतरा 24% अधिक होता है। इसी तरह जो लोग आधी रात के बाद सोने जाते हैं उनमें हृदय रोग का खतरा 25% तक अधिक रहता है।

देर से सोने वालों को खतरा अधिक क्यों

वैज्ञानिकों का कहना है कि हृदय को स्वस्थ रखना है तो सही समय पर सोने का नियम बनाना होगा। डॉ. डेविड बताते हैं कि पहला देर से सोने वाला व्यक्ति सुबह की रोशनी के संपर्क में नहीं आ पाता है, इससे बॉडी क्लॉक खुद को रिसेट कर देती है और हृदय संबंधी तकलीफों का जन्म होता है। व्यस्कों को रात में औस्तन सात से नौ घंटे सोना चाहिए।

चीन में 5-जी तकनीक से 1 घंटे रिमोट सर्जरी

200 किलोमीटर दूर बैठे डॉक्टरों ने किया गॉल ब्लाडर का सफल ऑपरेशन

बीजिंग। चीन में डॉक्टरों ने 200 किलोमीटर दूर बैठकर गॉल ब्लेडर कीसमस्या से जूझ रहे मरीज की 5जी नेटवर्क तकनीक स`रिमोट सर्जरी कीं चीनी मीडिया द्वारा जारी रिपोर्ट के मुताबिक उत्तरी चीन केहुबेई प्रांत में यह सर्जरी लगभग एक घंटे तक चली । लेप्रोस्कोपिक कोलेसिस्टेकटॉमी नामक इस सर्जरी के लिए दूरसंचार कंपनी चाइना मोबाइल ने 6 जून को 5जी नेटवर्क के लिए लाइसेंस प्राप्त किया। यह सर्जरी जी इंटरनेट कनेक्शन की प्रक्रिया में ही संभव हो सकी।

तर्कशील हलचल

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की कुरुक्षेत्र में सभा व सेमिनार

कोविड 19 के चलते व एकत्रीकरण की रोक पर सरकारी अनुदेशों के कारण लगभग एक वर्ष तक तर्कशील मीटिंग नहीं हो पायी थी। माहौल के खुलते ही तर्कशील सेमिनार, मेले, सभा आदि दोबारा की जाने लगी हैं।

इसी कड़ी में तर्कशील सोसायटी हरियाणा की मीटिंग व जागरूकता सभा का आयोजन सोसायटी के प्रांतीय प्रधान फरियाद सिंह सनियाणा की अध्यक्षता में दिनांक 19 सितम्बर 2021 को डॉ. ओम प्रकाश ग्रेवाल अध्ययन एवं शोध संस्थान कुरुक्षेत्र में आयोजित किया गया। इस सभा में राज्य भर से तर्कशील कार्यकर्ताओं एंव आम लोगों ने बड़े उत्साह के साथ शिरकत की।

सभा मे मंच संचालन राज्य उपप्रधान राजेश पेगा ने की। तर्कशील साथी मास्टर राकेश ने पर्यावरण को स्वस्थ, स्वच्छ बनाने एंव पौधरोपण का संदेश दिया। वे अपने साथ बहुत सारे पौधे लेकर आये और साथियों को निशुल्क पौधे वितरित किये प्रा. बलवंत सिंह, सम्पादक तर्कशील ने बाबाओं दुवारा समाज को अंधविश्वास की तरफ लगातार धकेलते रहने पर चिंता व्यक्त की एवं गुरमीत राम रहीम पर चलते केसों में तर्कशील सोसायटी की भूमिका पर प्रकाश डाला। राज्य सचिव गुरमीत सिंह ने देश विदेश में चलते तर्कशील आंदोलन पर प्रकाश डाला एंव तर्कशील साहित्य के प्रकाशन के बारे में बताया।

सभा मे डॉक्टर परमानन्द ने स्वास्थ्य सम्बन्धी विषयों पर चर्चा की। रामेश्वर ने बाबाओं के चक्र में लोग कैसे फंसते है इस विषय पर चर्चा की। बलदेव सिंह महरोक ने तर्कशील पत्रिका के बारे में विचार रखे। प्रचार सचिव सुभाष तितरम ने तर्कशील साहित्य की प्रदर्शनी लगाई एंव तर्कशील विषयो पर चर्चा की। साथी जयदेव ने अपने तर्कशील जागरूकता के कार्यक्रमों को रेखांकित किया। सभा की अध्यक्षता राज्य प्रधान फरियाद सिंह ने की एंव तर्कशील सभाओं को भविष्य में लगातार करते रहने पर बल दिया।

सभा में महिलाओं की उल्लेखनीय भागीदारी रही तथाकुछ महिलाओं ने सभा में अपने विचार भी रखे। कार्यक्रम के आयोजन में कुरुक्षेत्र इकाई के सदस्यों के अलावा इस अन्य साथियों की भागीदारी रही। सभागार के लिए बलदेव महरोक व प्रा. बलवन्तसिंह ने अहम भूमिका निभाई

तर्कशील सोसायटी द्वारा खानपुर खुर्द में जागरूकता कार्यक्रम

तर्कशील सोसायटी हरियाणा दुवारा गांव खानपुर खुर्द, जिला झज्जर, हरियाणा में तर्कशील साथी पुलिस इंस्पेक्टर अनिल कुमार की याद में एक जागरूकता कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। साथी अनिल कुमार की एक रोड एक्सीडेंट में 12 मार्च 2021 को मृत्यु हो गई थी। परिवार व उनके सहयोगी रहे तर्कशील साथियों ने उनकी याद में यह आयोजन किया था।

6नवम्बर 2021 को उनके गांव में यह कार्यक्रम रात्रि 8 बजे से 11 बजे तक जारी रहा। जिसमे गांव वालों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया कार्यक्रम में महिलाओं की भागीदारी बड़ी संख्या में रही। गांव वालों ने आगे भी ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने की जरूरत पर बल दिया।

इस कार्यक्रम में तर्कशील जादूगर फरियाद सिंह सनियाना, राजा राम हंडियाया, राजेश कुमार पेगा, राम प्रसाद व सुरेश अहम भूमिका निभाई ,विभिन्न जादू के ट्रिक दिखा कर मनोरंजन के साथ अंधविश्वासों के प्रति जागरूकता का संदेश भी दिया।

राष्ट्रीय प्रजापति महासंघ रजि. शाखा चिल्ला गांव त्रिलोकपुरी दिल्ली में तर्कशीलता की ज्योति जलाई

दिनांक 12-09-2021 दिन रविवार को राष्ट्रीय प्रजापति महासंघ रजि. शाखा चिल्ला गांव त्रिलोकपुरी विधानसभा दिल्ली में मासिक आमसभा का आयोजन किया गया। जिसके मुख्यअतिथि श्री प्रताप सिंह जी सेवानिवृत्त (Joint general manager, Airports athourity of India) श्री ईश्वर नास्तिक सामाजिक चिन्तनशील, मेजर एस. एल. प्रजापति, श्री सतबीर सिंह (इलैक्ट्रिक प्रबन्धक) नोएडा डिपो व डाॅ. अकित जैन व डॉ. सुपर्णा जी रहे हैं।

ईश्वर नास्तिक जी ने सभा को सम्बोधन के साथ साथ समाज में फैली कुरीतियों, पाखण्ड व अंधविश्वास के बारे में बताते हुए प्रैक्टिकल के द्वारा समझाया की किस प्रकार से ये ढोंगी बाबा सत्संग आदि के नाम पर हमारे भोले भाले समाज का मूर्ख बनाकर अपना उल्लू सीधा करते हैं। उन्हौंने कहा हमारे समाज के बुद्धिजीवी वर्ग को आगे आकर, इस प्रकार के आयोजन कर समाज को जागृत करना होगा। ताकि समाज तांत्रिक बाबाओं के जाल में ना फंसे। नास्तिक जी ने तर्क व विज्ञान के आधार पर सभा मे उपस्थित समाज के लोगों को समझाने का प्रयास किया। श्री एस एल प्रजापति जी ने नास्तिक जी का साथ देते हुए अपने सम्बोधन में कहा कि आप लोगों को उस बात को कभी नहीं मानना चाहिए जो कि परम्परा में है या किसी बड़ी किताब या किसी बड़े ग्रन्थ मे लिखी हुई है अथवा किसी बड़े आदमी ने कहा है। किसी भी बात को तब मानना चाहिए जो बात सत्य कि कसौटी पर खरी उतरती हो। हमें तभी उसका अनुसरण करना चाहिए। प्रजापति जी ने कहा कि समाज के लोगों में बौद्धिक-स्तर को बढ़ा कर ही हम देश में फ़ैले जातिवाद को खत्म करने मे सफल हो सकते हैं। जो कार्य संतराम बी.ए. साहेब ने अपने (जात पात तोड़क मंडल) के माध्यम से शुरू किया था, उसे हम लोग काफी हद तक अंजाम तक पहॅुचा सकते हैं। इसी मौके पर श्री प्रताप सिंह जी ने अपने जीवन के अनुभवों के आधार पर सम्बोधन में शिक्षा को महत्व देते हुए सभा मे उपस्थित बच्चों को आहवान् करते हुए कहा कि आप लोग शिक्षा के प्रति जुनून अपने अन्दर पैदा करो और जिस प्रकार हम महा प्रबंधक के ओहदे तक पहुँच कर सेवानिवृत्त हुये हैं, अगर आप मे से कोई बच्चा ऊच्च शिक्षा प्राप्त कर, उच्चाधिकारी बन कर परिवार के साथ गाँव व् समाज का नाम रोशन करता है तो मुझे बहुत ख़ुशी कि अनुभूति होगी।

श्री प्रताप सिंह जी ने समाज को आगे समझाते हुए कहा कि आप लोगों को अपने हक अधिकारों के लिए लड़ना चाहिए, अगर लड़ नहीं सकते तो लिखना चाहिए, अगर लिख नहीं सकते तो बोलना चाहिए। और अगर बोल भी नहीं सकते हो तो आप लोगों को समाज के उन लोगों का साथ देना चाहिए जो लोग आपके हक अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ रहे हैं।

इसी मौके पर राष्ट्रीय प्रजापति महासंघ और आरोग्य नेचर क्योर के सहयोग से निशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। डा. अमित सैन जी एवं डॉ. सुपर्णा सैन जी द्वारा शिविर मे पहुंचे मरीजों कि जांच करके एक्यूप्रेशर, योग पद्दति, होम्योपैथी व प्रेसर प्वांइट द्वारा ईलाज किया गया। डॉ.अमित सैन जी ने उपस्थित लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा कि हम आप लोगों के साथ जुड़ गए हैं तो हमेशा आप लोगों कि सेवा स्वास्थ्य जांच शिविर के माध्यम से करते रहेंगे। जब कभी भी भविष्य मे महासंघ शाखा चिल्ला गांव त्रिलोकपुरी विधानसभा स्वास्थ्य शिविर का अयोजन करेगा, हम वहाँ समाज की सेवा मे तत्पर रहेंगे ताकि लोग स्वस्थ रहें।

राष्ट्रीय प्रजापति महासंघ रजि. शाखा चिल्ला गांव त्रिलोकपुरी विधानसभा दिल्ली के अध्यक्ष श्री धर्मबीर सिंह प्रजापति और कार्यकारिणी के सभी पदाधिकारियों ने आए हुए अतिथियों का फूलमाला एवं साल भेट करते हुए स्वागत सत्कार किया। व सभा में पहुचे समाज के सभी लोगों का धन्यवाद देते हुए सभा का समापन किया गया।

रिपोर्ट :*कमल प्रजापति प्रेस सचिव*
व विकास प्रजापति,कार्यालय सचिव

जिला बार रूप में शहीद भगत सिंह का जन्म दिवस मनाया गया

दिनांक 20 सितंबर 2021 को अखिल भारतीय अधिवक्ता यूनियन (All India Lawyer Union) द्वारा बार रूम कुरुक्षेत्र में शहीद भगत सिंह के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता यूनियन की जिला इकाई के अध्यक्ष श्री जसपाल सिंह उदासी ने की। अध्यक्ष मंडल संचालन में संदीप मदान, जे. एस.सोलखे एवं सुशील कुमार थे। संचालन समिति में योगेश कर्णवाल, हरजिंदर रितु निर्मल शामिल थे। प्रान्त की तरफ से श्री गुरमेज सिंह प्रांतीय अध्यक्ष एवं प्रांतीय संयुक्त सचिव राजविंदर चन्दी ने हिस्सेदारी की। इसके अतिरिक्त तरसेम सैनी, गुरदेव स्यान, रजत खुराना, गुरतेज, आशीष देसवाल, कमलेश सांगवान, दिलावर ने भी सहयोग दिया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि बीबी गुरजीत कौर (सामाजिक कार्यकर्त्त एवं शहीद भगत सिंह की भानजी रहे। साथ ही उन्होंने मुख्य वक्ता के तौर पर अपना वक्तव्य भी रखा। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री अजय कुमार शारदा (जिला एवं सत्र न्यायाधीश-कुरुक्षेत्र) रहे।

कार्यक्रम में बलवन्त सिंह लेक्चरार तथा मास्टर रोकश कुमार ने चमत्कारों का पर्दाफाश कार्यक्रम के तहत जादू के विभिन्न ट्रिक दिखा कर उनका वैज्ञानिक विश्लेषण भी प्रस्तुत किया। दर्शकों से अपने संबोधन में बलवन्त सिंह लेक्चरार ने तर्कशील सोसायटी की कार्यप्रणाली, सोसायटी द्वारा दुनिया भर के बाबाओं, साधु-संतों, तांत्रिकों, मुल्ला मौलवियों के समक्ष रखी गई 23 शर्तो की चुनौती एवं सोसायटी द्वारा किये जा रहे समाजहित के कार्यो के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी प्रदान की।

कार्यक्रम जननाट्य मंच कुरुक्षेत्र की टीम द्वारा शहीद भगत सिंह के विचारों को दर्शाते हुए स्किट एवं गीत संगीत पेश किया गया।

दर्शकों द्वारा इस कार्यक्रम को खूब सराहा गया।

भारत बंद के दौरान तर्कशील साहित्य बांटा गया

दिनांक 2 सितंबर, 2021 को संयुक्त किसान मोर्चा के आह्वान पर भारत बंद के दौरान गांव सनियाना एवं आसपास के गांवों से एकत्र हुए किसान समूह में तर्कशील सोसायटी हरियाणा के प्रांतीय अध्यक्ष फरियाद सनियाणा के नेतृत्व में तर्कशील साहित्य का वितरण किया गया। इस दौरान एकत्र हुए किसानों के सम्मुख फरियाद सिंह सनियाना ने तर्कशील सोसायटी की चुनौती एवं उद्देश्यों के बारे में विस्तार सहित जानकारी भी प्रदान की। साहित्य वितरण के आयोजन में हरजीत सिंह मौड़, इंद्रपाल मिड्डू एवं अमरप्रीत सिंह जज ने अपना विशेष सहयोग दिया।

पत्र मिला

नमस्कार,

तर्कशील पथ का अक्तूबर का अंक पढ़ा । 'जातिवादी मानसिकता ' संपादकीय लेख बहुत पसंद आया । आज समाज में ये कलंक जैसे मानसिकता देश के प्रगति में बड़ी बाधा के रूप में आज भी कायम है।

तर्कशील के माध्यम से समाज के सभी वर्गो ने इस मानसिकता को हमेशा के लिए नष्ट करना चाहए।

अंक की सभी रचनाएं बहुत ही बेहतरीन हैं। बहुत बधाइयां

-के.अन्ना
मुम्बई ,(महाराष्ट्र)

उत्तराखंड में तर्कशील विचारों की आहट

उत्तराखंड में वैज्ञानिक चेतना के पासार के लिए साइंस फॉर सोसाइटी ने तर्कशील सोसायटी पंजाब को पांच दिन की वर्कशॉप के लिए आमंत्रित किया। २१ अक्टूबर को राजेंद्र भदौड़ अध्यक्ष विद्यार्थी चेतना विभाग और रामकुमार पटियाला राष्ट्रीय विभाग के सहायक की तरफ से उत्तराखंड राज्य के नैनीताल जिले के रामनगर तहसील में पीरु मदारा गांव में शाइनिंग स्टार इंटर कालेज में ट्रेनिंग वर्कशॉप का आयोजन किया गया। बच्चों को जादू की आइटम दिखाई गई और सिखाई भी गई। समाज में फैले अंधविश्वास को दूर करने के बारे में जानकारी दी गई। सुबह 9-00 से 2-00 तक दो सैशन में बच्चों को ट्रेनिंग दी गई। यह वर्कशॉप तर्कशील सोसायटी पंजाब और साइंस फार सोसाइटी की तरफ से लगाई गई जिसमें गिरीश आर्य, मदन, दीपक और उषा ने भाग लिया। शुरुआत में कालेज के प्रबंधक श्री डीएस नेगी ने संबोधन करते हुए बच्चों को कहा कि जो कुछ भी आज तुम सीखोगे वह दूसरे बच्चों को भी सिखाओगे। रात को साइंस फार सोसायटी के मेंबरान की ट्रेनिंग वर्कशाप लगाई गई जिसमें जादू की आइटम करने की ट्रेनिंग दी गई।

22 अक्टूबर को 11वीं और 12वीं के बच्चों की वर्कशाप लगाई गई। 4 घंटे के सेशन के दौरान जादू के ट्रिक के द्वारा वैज्ञानिक सोच अपनाने की प्रेरणा दी गई। 23 अक्टूबर को दसवीं क्लास के बच्चों की वर्कशॉप लगाई गई। उनको अंधविश्वासी सोच के नुकसान के बारे में बता कर इसे छोड़ने के लिए प्रेरित किया गया। दोपहर दूसरे सेशन में स्कूल के अध्यापकों में तर्कशील प्रोग्राम दिया गया जिसमें 23 अध्यापकों ने बहुत ही ध्यान से रजिंदर भदौड़ और रामकुमार की बातों को सुना।

शाम को पीरु मदारा से 10 किलोमीटर दूर रामनगर शहर के एक वार्ड में तर्कशील प्रोग्राम किया गया जिसमें 100 के करीब बच्चा, 50 औरतों और 20 आदमियों ने तर्कशील विचारों को ध्यान से सुना। टीवी चौनल वालों ने भी इस प्रोग्राम की कवरेज की। उन्होंने राजेंद्र भदौड़ से इंटरव्यू भी की। उत्तराखंड राज्य में यह पहला प्रोग्राम होने के कारण लोगों और विद्यार्थियों में बहुत उत्साह था। 24 अक्टूबर दोपहर 2-00 बजे साइंस फॉर सोसायटी के सदस्यों की मीटिंग हुई जिसमें राजेंद्र भदौड़ जी ने तर्कशील सोसायटी के पंजाब में बनने से लेकर पूरे पंजाब में इकाईयों के बनने के बारे में बताया। उन्होंने उत्तराखंड में साइंस फार सोसाइटी के सदस्य दूसरे इलाकों में जाकर कैसे इकाइयां बनाकर सोसाइटी को मजबूत कर सकते हैं इसके बारे में बताया। मीटिंग में उषा, कौशल्या, सरस्वती, हेम आर्य,एडवोकेट मदन, मुनीश कुमार, बी.डी. नैनवाल, ललित उपरेती लेक्चरर वीर सिंह, दीपक, किशन जी और कॉलेज की लड़कियों के अलावा कई और मेंबरों ने भी भाग लिया। मीटिंग की समाप्ति पर गिरीश आर्य ने हाजिर मेंबरों का धन्यवाद किया।

शाम के सैशन में सोसाइटी के मेंबरों को जादू की ट्रेनिंग दी गई और लोगों में किस तरह जाएं उसके बारे में जानकारी दी गई। साइंस फार सोसाइटी के मेंबरों ने गांवों, मोहल्लों, स्कूलों और क लेजों में जाकर प्रोग्राम करने और समाज में फैले अंधविश्वास के खिलाफ लोगों में जागृति लाने के लिए पूरी मेहनत से संस्था का विस्तार करने का प्रण किया।

25 अक्टूबर यह प्रोग्राम नैनीताल में किया गया जो रामनगर से 80 किलोमीटर दूर है । सुबह 11-00 बजे भारतीय शहीद सैनिक स्कूल में पहला सेशन शुरू हुआ। हाल में 300 से ऊपर बच्चे मौजूद थे। राजेंद्र भदौड़ और राजकुमार ने जादू के ट्रिक दिखा कर बच्चों को अंधविश्वासों, फालतू की रस्मों और पाखंडी बाबाओं से बचके रहने और वैज्ञानिक सोच अपनाने के लिए प्रेरणा दी। साइंस फॉर सोसाइटी के संयोजक मदन एडवोकेट ने भी जादू के ट्रिक दिखाए और सोसाइटी के कामों के बारे में बताया। दूसरे सेशन में 300 के करीब और बच्चों के सामने यही प्रोग्राम दिया गया। प्रोग्राम करवाने में स्कूल के मैथ लेक्चर और शाहनवाज का विशेष योगदान रहा। प्रोग्राम के अंत में स्कूल के प्रिंसिपल ने प्रोग्राम को सराहा और तर्कशील पथ मैगजीन के दो चंदे दिए, एक स्कूल के लिए और एक घर के लिए । हिंदी की पुस्तक देव पुरुष हार गए की 10 कापियां बच्चों ने खरीदी और सोसाइटी के तर्कशील पथ मैगजीन 10 से बढ़ाकर 20 करने का फैसला किया।

– रिपोर्ट रामकुमार सहायक राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय तालमेल विभाग त. सो. पंजाब।

केस रिपोर्ट

..और फिर देवताओं के पहरे से छुटकारा मिल गया

-बलवंत सिंह लेक्चरार

रतन सिंह का परिवार एक साधारण मध्यवर्गीय परिवार था। कृषि कार्य ही उनका मुख्य रूप में पेशा था। खेती बाड़ी के साथ-साथ अपनी आमदन को बढ़ाने के लिये उन्होंने कई साल पूर्व एक कंबाईन खरीद ली थी। कंबाईन पर ड्राईवर एवं कारीगर के साथ-साथ रतन सिंह भी हमेशा जाया करता था। फसलों की कटाई के सीज़न पर वे भी अन्य कंबाईन मालिकों की भांति अपनी कंबाईन लेकर देश के अन्य प्रान्तों में फसल कटाई के लिए जाया करते थे। खेती-बाड़ी से एवं कंबाईन की कमाई के कारण उनके घर की आर्थिक दशा काफी बेहतर होती चली जा रही थी।

सात वर्ष पूर्व गेहूं कटाई के अवसर पर रतन सिंह कंबाईन के अपने अमले के साथ मध्यप्रदेश में फसल कटाई के लिए गया हुआ था। दिन-रात गेहूं की कटाई का कार्य चल रहा था। रतन सिंह एवं उसके सहयोगी बारी-बारी से कंबाईन चला कर गेहूं की कटाई किया करते थे। एक दिन रतन सिंह कंबाईन पर अपनी ड्यूटी निभा कर खाना खाने के बाद लगभग आधी रात को सोने के लिए अपनी चारपाई पर लेटा हुआ था कि उसे महसूस हुआ कि दो-तीन आदमी उसके पीछे खड़े हुए हैं और उसे पकड़ना चाह रहे हैं। वह उनसे डर कर चारपाई से उठ कर भाग खड़ा हुआ। डर के कारण उसके मुंह से आवाज़ भी नहीं निकल रही थी। वह भागता चला गया और एक बरसाती नाले में जा कर गिर गया। उसके सहयोगी कंबाईन को बंद कर के उसे खोजने में लग गये। रात भर वे उसे ढूंढते रहे परंतु वह उन्हें कहीं पर भी नहीं मिला। उन्होंने आसपास के गावों में तथा खेतों में उसकी खोज-पड़ताल जारी रखी। अगल दिन वह उन्हें बरसाती नाले के किनारे पर बेसुध पड़ा हुआ मिला।

उन्हेंने रतन सिंह के चाचा को, जो कि साथ वाले गांव में अपनी कंबाईन द्वारा गेहूं की कटाई करवा रहा था, इस घटनाक्रम की सूचना दी। उसके चाचा ने जब उसकी यह हालत देखी तो वह अपना सारा काम छोड़ कर रतन सिंह को अपने साथ लेकर वापिस अपने गांव की ओर चल पड़ा। वे रेलगाड़ी से वापिस दिल्ली आ रहे थे। जब रेलगाड़ी ग्वालियर रेलवे स्टेशन पर पहुचने से पहले थोड़ा धीमी गतिमें चल रही थी तो रतन सिंह ने ट्रेन में से छलांग लगा दी। उसे ऐसे करते देख उसके चाचा ने भी उसके पीछे ही छलांग कर उसे पकड़ लिया। फिर अन्य यात्रियों की मदद से उसे दोबारा से गाड़ी पर चढ़ा लिया गया। उसके पश्चात् वह ट्रेन में शांति से बैठा रहा। आगरा स्टेशन तक वह शांत रहा। आगरा स्टेशन पर पहुंच कर वह फिर से बेकाबू हो गया। उसकी ऐसी हालत देख कर उसके चाचा ने रेलवे पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने उसे पकड़ कर पुलिस चौकी में बिठा लिया और उसके घर में इस की सूचना भिजवा दी। रतन सिंह के घर वाले यहां से किराये पर एक कार लेकर आगरा पहुंचे तथा उसे साथ लेकर घर वापिस आ गये। घर आ कर भी दो हीनों तक उसकी ऐसी ही दशा बनी रही।

वह बार-बार बोलता था कि कई आदमी उसके पीछे लगे हुए हैं, वे उसे मारने के लिए आए हैं। ऐसा कहते हुए वह अपनी चारपाई से उठकर घर से बाहर की ओर भाग जाता। फिर गांव के लोगों की सहायता से पकड़ कर उसे घर लाया जाता। फिर वे डर कर घर के बाहर वाला गेट हमेशा बंद ही कर के रखने लग गये। उसकी ऐसी हालत से परेशान होकर घर वाले उसे लेकर बाबाओं, ओझाओं, तांत्रिकों-मांत्रिकों, मुल्ला-मौलवियों के पास लेकर जाना शुरू हो गये। सभी ने अपने-अपने उपाय किये परंतु उसकी हालत वैसी ही बनी रही। बाबाओं द्वारा ओपरी-पराई को भगाने का ईलाज भी चलता रहा

परंतु साथ ही किसी समझदार रिश्तेदार के समझाने पर वे उसे मनोचिकित्सा विशेषज्ञों के पास भी ले जाने लग गये। मनोरोग माहिरों की दवाइयां भी चलती रही और बाबओं द्वारा प्रेतबाधा के हल का ईलाज भी साथ ही साथ चलता रहा। बीच में जब वह थोड़े समय के लिए ठीक हो जाता तो उसका सारा श्रेय उस समय पर ईलाज कर रहे बाबा को , ओझा को अथवा पीर के भगत को दे दिया जाता।

ऐसा चलते हुए 5-7 साल बीत गये। मजबूर हो कर उन्हें अपनी कंबाईन भी बेचनी पड़ गई। घर की आर्थिक दशा अत्यन्त खराब होती चलची जा रही थी। खेतीबाड़ी से जो आमदन होती वह डाक्टरों की दवाओं पर तथा बाबाओं द्वारा किये जाने वाले ऊल-जलूल क्रियाक्लापों पर खर्च हो जाती थी। अतः घर में परेशानियां अत्यधि बढ़ती चली जा रही थीं। ऐसे में घर के अन्य सदस्य भी मानसिक तौर पर परेशान रहने लग गये थे। बाबाओं द्वारा उनकी समस्या के समाधान के नाम पर उनके घर में देवताओं, पीरों के नाम पर विशेष स्थान भी बनवा दिये गये थे। एक पीर के भगत ने उनके घर के आंगन में एक कोने पर पीर की तुरबत बनवा दी थी और प्रत्येक बृहस्पतिवार को वहां पर दीया जलाने का आदेश कर दिया था। 'काली माता' के एक उपासक ने 'काली' के नाम पर उनसे बकरी का एक मेमना छुड़वा दिया था। बजरंग बली के एक भगत ने उनके गेट के पास एक छोटा सा बजरंग बली का मंदिर बनवा कर उस में लकड़ी की 'बाला जी' की एक मूर्ति स्थापित करवा दी थी। तात्पर्य यह कि जो भी स्याना, ओझा, बाबा, तांत्रिक अथवा मुल्ला मौलवी उनके घर में उनका ईलाज करने के लिए आता। वह घर में देवी-देवताओ वे पीरों के नाम पर अपने पाखंड का जाल फैंक जाता तथा उनका हजारों रूपये का खर्चा करवा कर चला जाता। ऐसे में अंधविश्वासी मानसिकता के कारण बाबाओं की चिकनी चुपड़ी बातों के प्रभाव में आकर रतन सिंह मनोचिकित्सकों द्वारा दिये गये निर्देशों का पालन करना भूल जाता तथा दवाई खाना बंद कर देता। दवाई बंद करने के कुछ ही दिनों के पश्चात् उसकी मानसिक दशा बिगड़ जाती और और वह विचित्र सी हरकतें करना शुरू कर देता।

अब जब से बजरंग बली के किसी भगत ने उनके घर में समस्या के समाधान के लिए उनके बाहरी गेट के साथ छोटा सा मंदिर बना कर उसमें लकड़ी की बजरंग बली की मूर्ति की स्थापना कर दी थी तथा अपनी लच्छेदार बातों से घर वालों के मन में यह प्रभाव बना दिया था कि अब जब घर पर बजरंगबली का पहरा लगया है तो कोई भी प्रेतात्मा वगैरह घर में कभी भी आ नहीं सकेगी। उसे भगत की बातों के प्रभाव में रतन सिंह की मनोरोग चिकित्सा की दवाईया बंद कर दी गई। भगत के कहने पर घर वालों को पूरा विश्वास हो गया था कि घर की सभी सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं के साथ-साथ रतन सिंह की सभी परेशानियां भी बजरंग बली ही ठीक कर देगें।

दवाई बंद करने के कुछ समय के बाद ही रतन सिंह की हालत अत्यधिक खराब होना शुरू होगई। अब जब रतन सिंह पर 'असर' हो जाता तो वह जय काली, जय काले कलकते वाली तथा जय बजरंग बली, जय बजरंग बली के नारे लगाता हुआ अन्दर-बाहर भागता रहता परंतु पाखण्डी बाबाओं द्वारा उनके घर में पहरे पर बिठाये गये कथित पीर एवं देवता उनकी किसी भी प्रकार से कोई सहायता नहीं कर सके। परेशान हो कर रतन सिंह को फिर से मनोचिकित्सकों के पास ले जा गया और फिर से उसकी मनोरोग की दवाई चलाई गई। अब रतन सिंह को डर वाले सपने आने शुरू हो गये। रात को जब वह सोने के लिए बिस्तर पर लेटता तो उसे ऐसा महसूस होता कि कई आदमी एवं औरतें उस को पकड़ रहे हैं तथा उसको दबा रहे हैं। वह डर कर उठ बैठता और घर से बाहर की ओर भागने लगता। अब उसे नींद आना बिल्कुल बंद हो गई। अब तो नींद की दवाईया देने के बाद भी नींद नहीं आती थी।

इसके साथ ही पिछले कुछ समय से एक अन्य भंयकर परेशानी हो गई थी। रतन सिंह का लड़का जो कि तीसरी कक्षा में पढ़ता था, उसे पेशाब का बंध पड़ना शुरू हो गया था। उसे सारा-सारा दिन पेशाब नहीं आता था। कई डाक्टरों से उसका ईलाज करवाया गया परंतु उस`कहीं से भी आराम नहीं आ रहा था। दवाई लेने के बाद उसके बूंद-बूंद करके अपने आप पेशाब निकलता रहा, उसे खुलकर पेशाब नहीं आता था। पहले तो बाप परेशानी में से

गुज़र रहा था, अब बेटे के पेशाब में रुकावट आने से तथा डॉक्टरी ईलाज द्वारा भी ठीक न हो पाने के कारण वे अत्यधिक परेशान हो उठे थे।

हर तरफ से परेशान हो कर तथा थक हार कर उनका सक रिश्तेदार उनकी समस्या को लेकर मेरे पास मनोरोग परामर्श केंद्र आ गया। उनकी बात सुनने पर पता चला कि रतन सिंह ब कहीं बाहर ले जाने की अवस्था में नहीं है। जब भी वे उसे कहीं बाहर ले जाने की बात करते हैं तो वह उनसे मार-पिटाई करने लग जाता है। अतः उनकी मजबूरी को समझते हुए मैंने उनके घर पर जाकर उनकी समस्या को समझ कर -परख पड़ताल करने के उद्देश्य से उनके घर जाने की सहमति प्रदान कर दी। मैंने उनके साथ जाकर घर का अवलोकन किया तो पाया कि घर के आंगन में किसी कोने में पीर का स्थान बनाया हुआ था। कहीं पर प्रतीकात्मक रूप में 'काली' का स्थान तो कहीं पर अन्य अनजान देवी-देवताओं के प्रतीकात्मक स्थान भी बनाए हुए थे। घर के मुख्य द्वारा (बाहरी गेट) पर बजरंग बली का प्रतीकात्मक छोटा सा स्थान बना कर उसमें लकड़ी की एक आकृति रखी हुई थी। सारे घर में काल्पनिक देवताओं के प्रतीकात्मक स्थान बना घर पर उनका पहरा होने का उनके मन में मिथ्या विश्वास दिला कर उन्हें मानसिक तौर पर पूरी तरह से पंगु बनाया हुआ था।

सारे घर का अवलोकन करने के पश्चात् सर्वप्रथम मैंने रतन सिंह को एकान्त में बुलाकर उससे खुल कर बातचीत करते हुए उसकेसाथ मध्यप्रदेश में गेहूं कटाई के वक्त जो कुछ घटित हुआ था, उसके बारे में संपूर्ण जानकारी प्राप्त की। फिर मनोवैज्ञानिक ढग से काऊंसलिग के द्वारा उसके अवचेतन मन में बैठे हुए कथित भूत-प्रेतों के मनोभ्रम को दूर किया। मनोवैज्ञानिक प्रभाव द्वारा उयसे अहसास होता गया कि उसका कंबाईपन पर मध्य प्रदेश में पीछा करने वाले तथा उसे कंबाईन के पास से भगा कर ले जाने वाले तथा फिर उसे बरसाती नाले में धकेलने वाले सभी कथित भूत-प्रेत जलते जा रहे हैं तथा पूरी तरह से उनका नाश हो गया है। फिर चेतन तौर पर उसे समझाया गया कि किसी काल्पनिक पीर वे देता की उसकोजरूरत नहीं है, उसका आत्मबल ही उसका वास्तविक पीर है-उसका साक्षात देवता हैं जब उसे नींद से उठाया गया तो उसने स्वंय जा कर देवताओं के सभी काल्पनिक प्रतीकों को अपने हाथ से उठाया और जा कर बहते हुए पानी मे फैंक दिया तथा पीर की छोटी तुरबत को अपने हाथों से तोड़ दिया।

उसके बाद उसके लड़के को बुलाया गया। उस बच्चे के मन में बैठे हुए कथित भूत-प्रेतों के डर को भी मनोवैज्ञानिक ढंग से काऊंसलिंग कर के पूरी तरह से दूर कर दिया। फिर मैंने उसे निर्देश दिया कि वह अभी जा कर पेशाब कर के आये। वह अभी बाथरूम में गया तथा आकर उसने और उसकी मां ने बताया कि अब उसे खुलकर पेशाब आया है।

कारणः

वास्तव में उनके घर का माहौल अत्यधिक अंधविश्वासी था। जब वे मध्यप्रदेश में गेहं कटाई के कार्य में दिन-रात व्यस्त थे तो अत्यधिक शारीरिक थकावट हो जाना एकसाधारण सी बात है। जब वह सोने के लिए चारपाई पर लेटा तो मांसपेशियों में अत्यधिक थकावट के चलते उसे अपने शरीर पर वजन सा महसूस हुआ। अंधविश्वासी मानसिकता के करण उसके अवचेतन मन ने इसे कथित भूत-प्रेतों का कारनामा मान लिया इसी मानसिकता के चलते उसे कल्पना में भूत-प्रेत डराते हुए दिखाई देने लग गये। व अंधविश्वासी मानसिकता के चलते ही वह कल्पना में उनसे कशमकश में बचने के लिए भागने लग गया। अवचेतन अवस्था में वह भागता चला गया और अंत में जाकर एक बरसाती नाले में गिर कर बेहोश हो गया। बरसाती नाले में पानी नाम-मात्र का था। अतःवह आधा कीचड़ में तथा आधा सूखे में नदी के किनारे पर बेहोश पड़ा रहा। सुबह होती ही उसके सहयोगी उसे ढूंढते हुए वहां पर पहुंच गये और उसे अपने साथ लेकर आ गये। वह बहुत ही घबराया हुआ था और काल्पनिक भय के कारण उसकी मानसिक दशा अत्यधिक खराब हो गई थी । ऐसी दशा में उसके चाचा ने उसे अपने घर पर वापिस ले जाना ही मुनासिब समझा। इसी विकृत मानसिकता के कारण ही उसने ग्वालियर में रेलगाड़ी के धीमी गति में होने पर छलांग लगा दी थी। जब उसके चाचा ने उसे कस कर पकड़ लिया और उसे थोड़ा धमकाया तो उसकी चेतना लौट आई और वह चुपचाप ट्रेन में बैठ गया। आगरा तक आते-आते

उसकी मानसिक अवस्था फिर से बिगड़ गई और वह अपने चाचा की पकड़ से बेकाबू हो गया। उसके चाचा ने वहां समझदारी से काम लेते हुए रेलवे पुलिस को सूचित कर दिया और पुलिस ने उसे सख्ती के साथ पकड़ कर पुलिस चौकी में बिठा लिया तथा उनके घर में सूचना भेज दी। घर वाले किराये पर कार लेकर उसे वापिस घर में ले आए।

मनोचिकित्सकों के ईलाज से उसे थोड़ा आराम अपने लगता परंतु अंधविश्वासी मानसिकता के कारण घर वाले तांत्रिकों-मांत्रिकों, बाबाओं मुल्ला-मौलवियों की शरण में भी जाते रहे।

बाबा लोग अपनी लच्छेदार बातों में उलझा कर उसकी दवाई बन्द करवा देते तथा उनसे धन राशि ऐंठने के बहाने उन्हें काल्पनिक पीरों एवं देवी देवताओं की शक्ति का पहरा लगाने का पाखण्ड करते रहे।

बाबाओं द्वारा फैलाए गये भ्रमजाल के कारण रतन सिंह के पुत्र के अवचेतन मन में भी अत्यधिक डर बैठ चुका था। इसी मानसिक डर के कारण उसे पेशाब का बंध पड़ना शुरू हो गया। शुरू में इसे एक शारीरिक रोग समझकर उन्होंने उसका डाक्टर ईलाज करवाया,परंतु डाक्टरी ईलाज से भी जब उसे आराम नहीं आया तो वे किसी न किसी बाबा व भगत से उसका 'झाड़ा' करवाने के लिए ले गये। 'झाड़ा' करवाने से उसे थोड़ा बहुत आराम आ जाता परंतु एक दो दिन के बाद उसकी हालत फिर से बिगड़ जाती। उनकी इन बातों का सीधा से मतलब था कि वह बालक भी मानसिक परेशानी का शिकार है। अतः मैंने मनोवैज्ञानिक ढंग से उसके अवचेतन मन में बैठे हुए काल्पनिक डर को दूर कर दिया। उसके बाद से वह बिल्कुल तंदरुस्त चल रहा है

जीवन जो आप बचा सकते हैं

-डॉ रणजीत

मुझे अपने पाठकों को यह सूचना देते हुए ख़ुशी हो रही है कि पिछले दिनों मैंने संसार के सर्वाधिक निर्धन और बीमार लोगों को भुखमरी और बीमारियों से बचाने केकाम में लगी हुई, एक पूरी तरह विश्वसनीय संस्था की खोज की है। वह है ऑस्ट्रेलिया के विश्व नागरिक और प्रतिष्ठित मानववादी नीति-दार्शनिक पीटर सिंगर द्वारा स्थापित 'लाइफ यू कैन सेव'। संसार के अभागे लोगों के उपकार में लगे हुए इस संगठन के बारे में विस्तृत जानकारी आप इंटरनैट के "thelifeyoucansave-org" वेबसाइट पर प्राप्त कर सकते हैं। मैं कई दिनों से ऐसी किसी विश्वस्त संगठन की खोज में था जिसे दिया हुआ दान सबसे ज्यादा पीड़ित और अभावग्रस्त मनुष्यों के दुःख दर्द को दूर कर सके। क्योंकि मुझ पर उम्र के इस चौरासीवें वर्ष में कोई पारिवारिक जिम्मेदारी नहीं है, मैंने सोचा है कि मैं अपनी पेंशन का 5 सौ डॉलर (लगभग 35000 रुपये) प्रति माह इस मानव दुखहारी संगठन को दे दिया करूं। यह सूचना मैं अपनी शेखी बघारने के लिए नहीं, आप को अपना अतिरिक्त धन इस भले काम में लगाने की प्रेरणा देने के लिए दे रहा हूँ। मुझे खुद यह प्रेरणा पीटर सिंगर की हिंदी में प्रकाशित पुस्तक 'लाइफ यू कैन सेव' के अनुवाद, 'जीवन जो आप बचा सकते हैं' से प्राप्त हुई है। यह पुस्तक प्राकृत भारती अकादमी जयपुर से प्रकाशित हुई है और अमेज़न पर उपलब्ध है। अंग्रेजी में मूल पुस्तक आप इंटरनेट पर बिना किसी शुल्क के, मुफ़्त में, पढ़ भी सकते हैं, और पीटर सिंगर तथा उनके विचारों और कार्यो से परिचित भी हो सकते हैं।

-सोभा डेहलिया बेलंदूर, बैंगलोर ?
9108792360

वो कोई और चराग होते हैं
जो हवाओं से बुझ जाते हैं
हमने तो जलने का 'हुनर' भी
'तूफानों' से सीखा है।

----रागनी

जीव व मानव का बनना और मानव का विकास ----

नोट --इस रागनी को लिखने के लिए डार्विनवाद और पंडित राहुल सांकृत्यायन की पुस्तक मानव समाज ऋ किस-2 सदी में किस तरह का रहा और (वोल्गा से गंगा) कहानी के रूप में पढना पड़ा । इन तीन पुस्तकों के आधार पर ही यह रागनी लिखी गई है

किस तरयां यु होया जगत में मानव का विकास।
-----------बात सुनाऊं खास।
1.निजहवों से जीन बणे थे, सबसे पहले पाणी में
एक कोशिका जीव इनही से, बणकै फैले पाणी में।
मछली बण फेर रेंगणीए जी, बणकै टैहले पाणी में
इनसे बिल्ली कुत्ता बंदर होया जीव विकास गणा
बंदर से बण माणस बणगया, बण माणस से माणस बणया
डार्विनवाद से बेरा पाटै पढ़ कै देखो जणा जणा
शुरू शुरू में आड़े मणस नै,खाया कच्चा मांस।
--बात सुणाऊं खास।
2.आदि युग में मणस शुरू में, बण में नंगा रैहता था
जब तक भाषा चाली ना थी,
बात इशारें कैहता था

पशु मारणा,गुफा में रहणा, गमह सदह सैहता था
बोलणा चालणा आग जलाणा,
पकाकै खाणा सीख लिया
बणा कबीले मिलकै रहणा,
बर्तन बणाणा सीख लिया
पशु पालणा खेती करणा,
ओजार चलाणा सीख लिया
खेत पशु थे सब साझे के,
सबमें था इकलास।
--बात सुणाऊं खास।
3.दास युग में दो वर्गों में,बंटया समाज हमारा था
बणे कबीले दास करे वो,
जोणसा युद्ध में हारा था
अमीर गरीब का भेद आडै तै,
होया शुरू न्यू सारा था
इस युग में ही पैदावार के,नए तरीके टोहे गए
तरकी खातर कृति से,
भारया जंग भी जोहे गए
काम करणिए पाछै रैहगे मालिक मोटे हो गए
कटठे होकै लड़ी लड़ाई, मुक्ति पागे दास
- बात सुणाऊं खास।
4.सामंत युग में मुक्ति पाकै दास किसान कैहलाण लगे
जागीरदार के मार्फत राजे,टैक्स लगान उगाण लगे
सैकड़ों जाती कर दासां की, इनमैं फूट फैलाण लगे
जमीन के मालिक होया करते, रजवाड़े और जागीरदार
खेत किसानों से जुतवाते, एक हिस्सा दे लेवैं चार
बहु बेटी ने उठा ले जांदे, भारी करया इनहैं अत्याचार
लड़कै फेर किसानां नै किया,राज शाही का नाश
---------बात सुणाऊं खास।

5.सामंत युग में किले बणाणा,
उद्योग लगाणा शुरु करया
कूए खोद हर्ट से पाणी, खेत में लाणा शुरू करया
तीर छोड़ कै तोप ढाल,तलवार चलाणा शुरु करया
पूंजीवादी युग इब आरया यो भी एक दिन जावैगा
समाजवाद इस पाछै आणा, कोए रोक ना पावैगा
साम्यवादी युग जगत में, इसतै पाछै आवैगा
अंग्रेज सिंह रैह समाज बदलता,
कैहरया सै इतिहास
बात सुणाऊं खास.....

★★★

हमारे नास्तिक होने के फायदे

- मुनेश त्यागी

१. मंदिर, मस्जिद में जाकर घंटा घडियालों को बजाने से मुक्ति,
२. सुबह के अखबारों, टीवी चौनलों में राशिफल की बकवास से मुक्ति,
३. रोज-रोज के व्रत और त्योहारों से छुटकारा,
४. रोज-रोज मूर्तियों, तस्वीरों को भोग लगाने से बीमारी से छुट्टी,
५. त्यौहारों पर देवी-देवताओं की पूजा अर्चना से मुक्ति,
६. भांति भांति के तीर्थ स्थलों के चक्कर लगाने से मुक्ति,
७. चार धामों के चक्कर काटने से मुक्ति,
८. हर मंदिर के सामने नतमस्तक होने से निजात,
९. तमाम तरह की पूजा-अर्चनाओं से छुट्टी,
१द्र. शनिवार के दान-पुण्य से मुक्ति,
११. शनिवार को मिर्च और नींबू की बर्बादी से निजात,
१२. भांति भांति के जबरन लादे गए व्रतों से मुक्ति,
१३. डरावनी मूर्तियों और तस्वीरों को देखने से मुक्ति,
१४. आदमी को ऊंच-नीच, छोटा बड़ा और अछूत मानने की बीमारी से छुटकारा,
१५. धर्म, धर्मांधता, श्रद्धांध्दता और अंधविश्वासों से मुक्ति,
१६. कुंडलियों के चक्कर से छुटकारा और
भूत प्रेत और ऊपरी बला की बीमारियों से निजात,
१७. रोज-रोज के पूजा पाठ से होने वाली समय की बर्बादी से मुक्ति,
१८. बिल्ली, नेवले या सवाल करने पर, घर लौट जाने की मानसिकता से बाहर,
१९. किसी कार्य की सफलता के लिए देवी देवताओं के सामने हाथ जोड़कर खड़े रहने से होने वाले समय की बर्बादी से निजात,
२द्र. नदियों, नहरों, तालाबों और कुंडों के चक्कर काटने से मुक्ति,
२१. सत्यनारायण की कथा और उसके करवाने में होने वाले हजारों रुपए के खर्च से निजात,
२२. पंडितों, मुलाओं द्वारा नर्क में जाने के डर से मुक्ति,
२३. 1,3,5,7,9, 11,13, 21,51 की संख्याओं को शुभ अशुभ मानने से छुटकारा,
२४. स्वर्ग और जन्नत में मिलने वाली अप्सराओं, हूरों और गिलमान के लालच से मुक्ति,
२५. जीवन मरण, स्वर्ग नरक, मुक्ति और आत्मा के आवागमन के वहम से छुटकारा,
२६. जीवन के अमृत्व की बीमारी से मुक्ति,
२७. ओझा, ताबीज, गंडा, राख की चुटकी से बीमारियां ठीक होने वाली मानसिकता से छुटकारा,
२८. देवी देवताओं के जागरण पर होने वाले हजारों हजार रुपए की बर्बादी और उनकी मान्यताओं से मुक्ति,
२९. बाबाओं, मांओं, डेरा, पीर, पंडों की शरण में जाकर समस्याओं के हल हो जाने की मान्यता से निजात मिल गई है।
३०. भगवान एक हसीन और कोरी कल्पना के अलावा और कुछ भी नही है। यह नाम और शक्ति आदमी ने अपने उदर पूर्ति, स्वार्थ, अयोग्यता, अज्ञानता, कमजोरी, कमी और अक्षमता को छिपाने के लिए और शोषण और अन्याय को कायम रखने के लिए की है। प्रकृति या आदमी को बनाने या उत्पन्न करने में उनका कोई हाथ नहीं है। हां आदमी और औरत को महामूर्ख बनाने के लिए इनका खूब प्रयोग और उपयोग किया जाता है और किया जा रहा है और कमाल है कि आदमी पढ़ लिख कर भी मूर्ख बन रहा है उसकी नादानी पर सिर्फ दया ही आती है।

इस दुनिया में कुछ भी होने या न होने का, कोई न कोई कारण और संबंध होता है, यहां कुछ भी अकारण या अपने आप नहीं होता है। यहां कोई देवी, देवता, सुपरनेचुरल पावर होने पर हमें कोई विश्वास नहीं है। हमारी कथनी करनी में कोई फर्क नहीं होना चाहिए। यहां जो कुछ भी दिखाई देता है, जो कुछ भी सुनाई देता है और जो भी प्राकृतिक रूप से मौजूद है वह सब मनुष्य और प्राकृतिक शक्तियों के कारण होता है। हमें हर चीज को तर्क, विवेक, आलोचना, अन्वेषण, खोजबीन और संदेह की कसौटी पर परख कर देखना चाहिए। ऐसा करके हम सब देवी, देवताओं, खुदा, अल्लाह, गोड, भगवान की बीमारी और मानसिक विकृति से बच जाएंगे और सुखी जीवन जी पाएंगे।

शारीरिक विज्ञान का एक अदभुत तत्त्व : –मानव रक्त

1. खून का पहला ट्रांसफर 1667 में दो कुत्तों के बीच किया गया था।
2. दुनिया का पहला Blood Bank 1937 में बनाया गया था।
3. एक बूंद खून में 10,000 सफेद रक्त कोशिकायें white blood cell और 250,000 प्लेटलेट्स होती हैं।
4. हमारे शरीर में रक्त का 70प्रतिशत भाग red blood cell के अंदर मौजूद hemoglobin में, 4ः भाग मांसपेशियों के प्रोटीन मायोग्लोबिन में, 25 प्रतिशत भाग लीवर, अस्थिमज्जा, प्लीहा व गुर्दे में होता है और बाकि बचा 1 प्रतिशत रक्त प्लाजमा के तरल अंश व कोशिकाओं के एंजाइम्स में होता है।
5. हर 3 सेकेंड में भारत में किसी न किसी को खून की आवश्यकता होती है। हर दिन दुनिया में 40,000 यूनिट खून की जरूरत पड़ती है। 3 में से 1 व्यक्ति को जीवन में कभी न कभी खून की आवश्यकता पड़ती है।
6. हमारी नसों में खून 400 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से दौड़ता है और पूरे दिन में लगभग 9600 km की दूरी तय करता है।
7. यदि हमारा दिल शरीर से बाहर खून पंप करे तो यह खून को 30 मीटर ऊपर उछाल सकता है।
8. मजबूरी में नारियल पानी को ब्लड प्लाज्मा की जगह चढ़ाया जा सकता है।
9. मनुष्य का रक्त केवल 4 तरह O, A, B, AB का होता हैं लेकिन गायों में लगभग 800, कुत्तो में 13 और बिल्लियों में 11 तरह का रक्त पाया जाता हैं.
10. सिर्फ मादा मच्छर ही खून चूसती है नर मच्छर शाकाहारी होते है। ये सिर्फ मीठे तरल पदार्थ पीते हैं। मादा मच्छर अपने वज़न से 3 गुना ज्यादा खून पी सकती है।

11. आपको लगता होगा कि मच्छर थोड़ा सा खून पीते है लेकिन आपको बता दें कि 12 लाख मच्छर आपका पूरा खून चूस जाएगे। मच्छर 'O' ग्रुप का खून चूसना पसंद करते है।
12. एक नवजात शिशु में सिर्फ 1 कप 250 ml खून होता है और एक जवान आदमी में लगभग 5 लीटर खून हो सकता है। मतलब, शरीर के कुल वजन का 7 प्रतिशत।
13. मौत के बाद शरीर का जो अंग धरती के सबसे नजदीक होता हैं खून का बहाव भी उसी तरफ हो जाता हैं और फिर खून जम भी जाता हैं ऐसा शायद गुरूत्वाकर्षण के कारण होता है।
14. गर्भवती और स्तनपान करवाने वाली महिलाएँ खून दान नहीं कर सकतीं।
15. हमारे शरीर में लगभग 0.2 मिलीग्रॉम तक सोना होता है और इसकी सबसे आधिक मात्रा खून में पाई जाती है। 40,000 लोगो के खून में से 8 ग्राम सोना निकाला जा सकता है।
16. जापान में लोग ब्लड ग्रुप के माध्यम से ही आदमी के व्यक्तित्व का अंदाजा लगा लेते हैं।
17. James Harrison, नाम का व्यक्ति पिछले 60 सालों में 1,000 बार खून दान कर चुका है और 20 लाख लोगों की जिंदगी बचा चुका है।
18. ब्राजील देश में एक आदिवासी समूह है बोरोरो। हैरानी की बात ये है कि इस समूह के सभी लोगो का एक ही ब्लड ग्रुप 'O' है।
19. लगभग सभी में लाल रंग का खून पाया जाता है लेकिन मकड़ी और घोंघा में हल्के नीले रंग का खून पाया जाता है।
20. स्वीडिश में जब कोई खून दान करता है तो उसे Thank You का मैसेज किया जाता है और ऐसा ही मैसेज तब भी किया जाता है जब उसका खून किसी के काम आता है।
21. शारीरक तौर पर एक ही समय पर पेशाब करना और रक्त देना असंभ्व है।
22. कई बार जब हम आसमान की तरफ देखते है तो हमारी आँखो के सामने थोड़े सफेद–सफेद से

डॉट्स घूमने लगते हैं। दरअसल ये हमारी white blood cell होती है।

23. रक्त कोशिकाओं को पूरी बॉडी का चक्कर लगाने में केवल 30 second लगते है, ये 20 सेकंड में 1,12,000 km की दूरी तय कर सकती है.

24. केकड़े का नीलम जैसा खून धरती पर इकलौता ऐसा पदार्थ है जिसका प्रयोग ड्रग्स में पाए जाने वाले दूषित पदार्थो का टेस्ट करने के लिए किया जाता है।

25. यदि रक्त वाहिकाओं को सिरे से सिरे तक मिला लिया जाए तो ये 2 बार धरती को लपेट सकती है।

26. अभी तक कृत्रिम खून नही बनाया जा सका है। ये प्रकृतिक देन है !

27. Red Blood Cells: Oxygen को लेकर चलती है और co_2 को खत्म करती है।

28. White Blood Cells: ये शरीर को बैक्टीरिया और वायरस से बचाता है।

29. Plasma: ये बॉडी में प्रोटीन लेकर चलता है ये खून को जमने से बचाता है।

30. Platelets: ये खून की जमने में मदद करती है, इन्हीं की वजह से चोट लगने के कुछ देर बाद खून निकलना बंद हो जाता है।

–भुपिंद्र सिंह

---

50 देशों में उनका संविधान धर्म को मान्यता नहीं देता

–अनिल नरेन्द्रन

दुनिया की सबसे बड़ी आबादी ईसाई धर्म को मानती है। इस्लाम इस मामले में दूसरे नम्बर पर है। कोई भी धर्म न मानने वाले तीसरे नम्बर पर हैं। लेकिन आधिकारिक तौर पर दुनिया में सबसे ज्यादा देशों का धर्म इस्लाम है। यह जानकारी प्यू रिसर्च सेंटर द्वारा 199 देशों के धर्म के आधार पर किए गए अध्ययन से सामने आई है। इसमें इन देशों के संविधान और कानूनों का अध्ययन किया गया है। इनमें धर्म को लेकर प्रावधान, धर्म को मानने वाले, समर्थक या धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रों का विश्लेषण किया गया है। इसके मुताबिक दुनिया में 43 देश ऐसे हैं द जिन्होंने आधिकारिक तौर पर खुद को धार्मिक देश घोषित किया है। इनमें से 27 ने खुद को इस्लामिक और 13 ने ईसाई देश बताया है। खुद को धार्मिक घोषित कर चुके 43 देशों के अलावा 50 देश ऐसे भी हैं जिनका संविधान धर्म को मान्यता नहीं देता, पर समर्थन जरूर करता है। इनमें ईसाई धर्म के देशों की संख्या ज्यादा है। भारत-नेपाल समेत 106 देशों ने खुद को धर्मनिरपेक्ष घोषित किया है। दुनिया में ईसाइयों की संख्या सबसे ज्यादा है, लेकिन धार्मिक देशों में इस्लाम से पीछे हैं। इस्लामिक राष्ट्रों की संख्या ईसाई राष्ट्रों से दोगुना है। इनमें सुन्नी, शिया इस्लाम या सिर्फ इस्लाम मानने वाले शामिल हैं। अन्य धर्मो से भेदभाव करने वाले देशों में ज्यादातर इस्लामिक हैं। कोमोरोस, मालदीव, मॉरीतनिया में नागरिकों के लिए इस्लाम का पालन अनिवार्य है। लीपटेस्टीन, माल्टा और मोनाको ईसाई हैं, लेकिन अन्य धर्मो को भी सभी सरकारी फायदे मिलते हैं। जॉर्डन इस्लामी देश है। यहां अन्य धर्मो के लोगों को सरकारी योजनाओं के फायदे नहीं मिलते। गैर-मुस्लिमों को प्रॉपर्टी से लेकर शादी तक की जानकारी सरकार को देनी पड़ती है। इस्लाम छोड़कर दूसरा धर्म अपनाने वालों पर निगरानी होती है। चीन, क्यूबा, उत्तर कोरिया का कोई आधिकारिक धर्म नहीं है, लेकिन सख्ती है। इनमें वियतनाम, कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, तुर्कमेनिस्तान भी हैं। यहां धार्मिक आयोजन पर कड़े नियंत्रण हैं। चीन में सिर्फ पांच संगठनों को धार्मिक गतिविधियों की अनुमति है। भूटान और कंबोडिया ने खुद को आधिकारिक तौर पर बौद्ध राष्ट्र घोषित कर रखा है। लेकिन लाओस बौद्ध धर्म का इनसे बड़ा समर्थक है। इसके संविधान में लिखा है, राज्य बौद्ध धर्म और अन्य धर्मो की वैध गतिविधियों का सम्मान और सुरक्षा करता है। गृहयुद्ध झेल रहा सीरिया इस्लाम बहुल तो है लेकिन आधिकारिक तौर पर वह इस्लामिक देश नहीं है।

तर्कशील साथी रामेश्वर जी नहीं रहे

तर्कशल साथी रामेश्वर जी इस 2 नवंबर को प्रकृति में लीन हो गए।

हमारे प्रेरणा का स्रोत साथी रामेश्वर जी का जन्म बहुत गरीब परिवार में 10-4-1071 को गांव बुढाखेड़ा लाठर तहसील जुलाना जिला जींद में हुआ था। उनके पीछे उनके दो बेटे, दो बेटियां व पत्नी हैं।

रामेश्वर जी के पिता जी लाहौर पाकिस्तान में में रहते थे। वहां से आने के बाद करीब 40 साल की उम्र में इनके पिताजी की धर्मू की शादी हुई थी। गरीबी के कारण रामेश्वर जी ज्यादा पढ़ नहीं पाये औ सातवीं कक्षा के पश्चात उन्हें पढ़ाई छोड़नी पड़ी और वे अपने पिता के काम करने लग गये।

रामेश्वर जी का तर्कशीलता सफर 16-17 साल के आयु में तब शुरू हुआ जब वे तर्कशील साथी डा. ऋषि प्रकाश के सम्पर्क में आये। तर्कशील बनने के बाद वे आध्यात्मिक बातों को तर्कशील कसौटी पर परखते। किसी के द्वारा कही हुई ज्ञान की बात या पुस्तक में लिखी कोई बात वैज्ञानिक आधार पर ही सच मानते थे। अंधविश्वास के वे घोर विरोधी थे। अंधविश्वास के खिलाफ लोगों को जागरूक किया करते। धर्म और कर्मकांड पुराण शास्त्रों को गहरारई से समझने के बाद रामेश्वर जी पूर्ण रूप से नास्तिक व वास्तविक बन चुके थे। तर्कशील सोसाइटी के सम्पर्क में आने के बाद एक बार उन्होंने अपने गांव में मीटिंग बुलाई जिसमें मा. बलवंत सिंह, गुरमीत अम्बाला जी पधारे और और जुलाना इकाई का गठन किया। यह रामेश्वर तर्कशील का महान कार्य था।

तर्कशील साथियों के लिए वे प्रेरणा के स्रोत थे।

तर्कशल सोसायटी हरियाणा को अपने प्रिय साथी के जाने से अत्यंत दुख है।

रिपोर्ट

डॉ.ऋषि प्रकाश, संरक्षक

सचिव विजेन्द्र सिंह

तर्कशील साथी मेहर सिंह विर्क नही रहे

हरियाणा में तर्कशील आंदोलन के आरंभिक साथियों में रहे साथी मेहर सिंह गांव असन्ध, जिला जींद का 20 सितम्बर 2021 को लगभग 74 साल की उम्र में निधन हो गया वे लंबे समय से स्वास्थ्य समस्याओं से जूझ रहे थे।

साथी मेहर सिंह ने हरियाणा तर्कशील सोसायटी की स्थापना को लेकर होने वाली प्रथम सभा जो1987 को जींद में रखी गई थी, में भागीदारी की थी और हरियाणा राज्य की प्रथम कार्यकारिणी में सदस्य रहे उसके बाद आगामी वर्षों में वे राज्य कार्यकारणी में विभिन्न पदों पर रहे और तर्कशील आंदोलन को मजबूती प्रदान की।

साथी मेहर सिंह एक सफल किसान के साथ ही पंजाब एंड सिंध बैंक में एरिया मैनेजर रहे पदोन्नति होने पर सरसावा (उत्तर प्रदेश) में वे स्थान्तरित हो गए जहां पर अपने कर्मठ स्वभाव, ईमानदारी के कारण किसानों के बीच बेहद लोकप्रिय रह। वे तर्कशील आंदोलन के साथ ही भारतीय किसान यूनियन के पदाधिकारी भी रहे और अपने जिले में किसानी हकों के लिए बढ़ चढ़ कर भाग लिया।

उन्हें पढ़ने का बेहद शौक था जिस कारण उनके घर मे पुस्तकों का एक अच्छा संग्रह भी था। उनके परिवार में दो लड़के व एक लड़की है।

तर्कशील आंदोलन में विभिन्न आयोजनों में अहम भूमिका के साथ ही उन्होंने अपनी पुश्तैनी जमीन से दस मरले का एक भूखण्ड तर्कशील सोसायटी को प्रदान किया था। जो कि असन्ध में करनाल जींद रोड पर उपलब्ध है।

उनके निधन से तर्कशील सोसायटी ने अपना एक अहम साथी खो दिया।

रोजगार पर कोविड-19 का प्रभाव

-सलिल सरोज

नोवेल कोरोनावायरस रोग (कोविड-19) के विश्वव्यापी प्रसार ने मानव जाति के सामने अब तक का सबसे बड़ा संकट साबित किया है। कोविड-19 स्वास्थ्य महामारी ने एक आर्थिक रक्तपात की घोषणा की जहां व्यावहारिक रूप से दुनिया भर में सभी आर्थिक गतिविधियां बंद देखी जा रही हैं। वास्तव में, यह स्वास्थ्य आपदा वैश्विक आर्थिक संकट में बदल गई है, जो दुनिया भर में लाखों लोगों के स्वास्थ्य, नौकरी और आजीविका के लिए खतरा है। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन ने अपनी रिपोर्ट 'आई एल आ' मॉनिटर (द्वितीय संस्करण) कोविड -19 और कार्य की दुनिय' में कोविड -19 को द्वितीय विश्व यद्ध के बाद सबसे खराब वैश्विक खतरे के रूप में वर्णित किया है। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के प्रमुख, क्रिस्टालिना जॉर्जीवा ने कहा कि दुनिया 1930 के दशक की महामंदी के बाद सबसे खराब आर्थिक संकट का सामना कर रहा है। आई एल ओ के अनुसार, महामारी के कारण दुनिया भर में लगभग 25 मिलियन नौकरियां जा सकती हैं, जिसका अर्थ होगा 860 बिलियन अमेरिकी डॉलर आय का नुकसान।

दुनिया के सबसे गरीब और सबसे कमजोर लोग अनौपचारिक अर्थव्यवस्था में कार्यरत है और उसमें आधे से अधिक लोग विकासशील देशों में कार्यबल रहते हैं। कोविड -19 महामारी ने भारतीय श्रम को तबाह कर दिया है, बाजार, रोजगार परिदृश्य में सेंध लगा रहा है और लाखों कार्यकर्ता और उनके परिवार अस्तित्व के लिए खतरा है। आई एल ओ की रिपोर्ट के अनुसार भारत में 40 करोड़ से अधिक अनौपचारिक कामगार गहरी गरीबी में धकेले जा सकते हैं।

महामारी के कारण इन क्षेत्रों जैसे आतिथ्य और आवास, खुदरा और थोक व्यापार सेवाओं, निर्माण और उद्योग को भारी नुकसान हुआ है।

भारत जैसे विकासशील देशों में, आम तौर पर जनसंख्या का बड़ा हिस्सा अनौपचारिक अर्थव्यवस्था पर निर्भर करता है। दूसरे शब्दों में, सामान्य रूप से विकास और विशेष रूप से विशाल आबादी की आजीविका और मजदूरी भारत में अधिकांश श्रमिक व्यवहार्यता पर निर्भर करते हैं। अत्यधिक श्रम बल सर्वेक्षण (पीएलएफएस) के अनुसार, भारत में कामगारों का 90 प्रतिशत से अधिक हिस्सा अनौपचारिक श्रमिक हैं जो लगभग 465 मिलियन की संख्या में हैं। इनमें से 419 मिलियन अनौपचारिक कर्मचारी, 95 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में और 80 प्रतिशत शहरी क्षेत्रों में हैं। इसका मुख्य कारण शहरी क्षेत्र में केवल 8 प्रतिशत की तुलना में बड़ी संख्या में अनौपचारिक श्रमिक कृषि या कृषि गतिविधियों (62 प्रतिशत) में लगे हुए हैं। शहरी क्षेत्रों में लगभग 93 मिलियन अनौपचारिक कर्मचारी मुख्य रूप से पांच क्षेत्रों अर्थात विनिर्माण, व्यापार, होटल और रेस्तरांय निर्माणय परिवहनय भंडारण और संचारय और वित्त, व्यापार और अचल संपत्ति में शामिल हैं। इन क्षेत्रों में कुल 93 मिलियन अनौपचारिक श्रमिकों में से, 50 प्रतिशत स्व-नियोजित हैं, 20 प्रतिशत दैनिक वेतन भोगी कर्मचारी हैं और 30 प्रतिशत वेतन भोगी या संविदा कर्मचारी हैं। इस प्रकार, अनौपचारिक कार्यकर्ता ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में जो कोविड -19 के कारण सबसे अधिक प्रभावित हुए हैं। इस वर्ग में प्रवासी, कृषि श्रमिक, आकस्मिक/अनुबंध मजदूर, निर्माण श्रमिक, घरेलू कामगार, प्लंबर, पेंटर, बढ़ई, स्ट्रीट वेंडर, गिग /प्लेटफॉर्म वर्कर आदि शामिल हैं।

कोविड -19 महामारी के कारण संगठित क्षेत्र के श्रमिकों को भी आजीविका का नुकसान और नौकरी का खामियाजा भुगतना पड़ा है। भारतीय अर्थव्यवस्था निगरानी केंद्र के आंकड़े के अनुसार, 2020 में लगभग आधे औपचारिक वेतन भोगीकर्मचारी अनौपचारिक रोजगार में चले गए। आय के स्टॉक का बोझ प्रतिगामी था और इसके परिणामस्वरूप असमानता में तीव्र वृद्धि हुई। नौकरी छूटने और वेतन में कटौती के कारण , 2020 के दौरान, 230 मिलियन उन व्यक्तियों की संख्या बढ़ी जो प्रस्तावित राष्ट्रीय न्यूनतम वेतन से नीचे है। दोनों ल कडाउन में ढील के बाद जून, 2020 से

रोजगार और आय में उछाल देखने को मिली है। लेकिन उसके बाद रिकवरी रुक गई। सीएमआईई के आंकड़ों के मुताबिक, लॉकडाउन के दौरान काम गंवाने वाले लगभग 20 प्रतिशत श्रमिक थे जो फिर से या अभी भी बेरोजगार हैं। दिसंबर 2020 तक वास्तविक प्रति व्यक्ति परिवार आय उनके महामारी-पूर्व स्तर से औसतन 12 प्रतिशत कम थी। हालांकि दूसरे लहर जो निर्विवाद रूप से पहले की तुलना में अधिक गंभीर रही है, के प्रभाव पर अभी तक कोई सर्वेक्षण आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं लेकिन उपाख्यान, सबूत और साथ ही पहली लहर के दौरान अनुभव की गई स्थिति से पता चलता है कि विशेष रूप से अनौपचारिक सेक्टर में महत्वपूर्ण आय की हानि हुई होगी जिससे कमजोरों को संकट की ओर धकेला जा रहा है।

कोविड -19 महामारी की पहली और दूसरी दोनों लहरों के प्रभाव से निपटने के लिए भारत सरकार ने विभिन्न कदम उठाए हैं जिससे कई परियोजनाओं, कार्यक्रमों के माध्यम से देश में रोजगार पैदा होगा जैसे प्रधान मंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (पीएमईजीपी), महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (मनरेगा), पं. दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्या योजना (डीडीयू-जीकेवाई) और दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन (डीएवाई-एनयूएलएम) द्वारा संचालित सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय, ग्रामीण विकास मंत्रालय और आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय शामिल हैं। आत्मनिर्भर भारत वित्तीय पैकेज के रूप में सत्ताईस लाख करोड़ रुपये से अधिक का वित्तीय प्रोत्साहन प्रदान करना है। आत्मनिर्भर भारत पैकेज देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए विभिन्न दीर्घकालिक योजनाओं-कार्यक्रमों'नीतियों का समावेश है। आत्मनिर्भर भारत रोजगार योजना नए रोजगार के सृजन के लिए नियोक्ताओं को प्रोत्साहित करने के लिए शुरू किया गया है। इन पहलों के अलावा, भारत सरकार के प्रमुख कार्यक्रम जैसे मेक इन इंडिया, डिजिटल इंडिया, स्वच्छ भारत मिशन, स्मार्ट सिटी मिशन, कायाकल्प और शहरी के लिए अटल मिशन परिवर्तन, सभी के लिए आवास, बुनियादी ढांचा विकास और औद्योगिक गलियारों में उत्पादक रोजगार के अवसर पैदा करने की क्षमता भी शामिल हैं।

पेज 23 का शेष (कोरोना काल में..)

समाज आगे की ओर जाता है, तो हम यह नहीं कह सकते कि मोबाइल /इंटरनेट का प्रयोग बंद हो। आज के समय में यह ज्ञान का एक महत्वपूर्ण स्रोत है और तकनीक का प्रयोग बंद नहीं किया जा सकता। लेकिन सवाल यह है कि इसका सही एवं रचनात्मक प्रयोग कैसे हो ? इसमें हमारी क्या भूमिका हो सकती है ? आने वाले समय में पीडीएफ बुक्स, ई बुक्स, ई. लाइब्रेरी आदि सारे ऐसे वर्चुअल प्लेटफार्म होंगे जो ज्ञान के स्रोत बनेंगे इसलिए हम इनसे किनारा नहीं कर सकते। लेकिन यह सार्वभौमिक सत्य है कि कोई भी वर्चुअल प्लेटफार्म स्कूल का विकल्प नहीं हो सकता और कोई भी ऐप या डिवाइस अध्यापक का विकल्प नहीं हो सकती। इस दौर में अध्यापक वर्ग की बहुत ही महत्वपूर्ण है। एक तो उनके मोबाईल में 'अवसर' (AVSAR APP) है दूसरा उनके पास 'अवसर' है बच्चों के माध्यम उनके अभिभावकों से जुड़ने का तथा अभिभावकों के माध्यम से पूरे समुदाय से जुड़ने का। उनके पास 'अवसर' है स्कूल तथा समुदाय के बीच को दूरी को कम करने का। अन्यथा सरकार तो इस 'आपदा' को 'अवसर' बना ही रही है। क्या अध्यापक वर्ग अपनी भूमिका निभा पाएगा ? अंत में प्रसिद्ध जर्मन कवि -बर्तोल्त ब्रेख्त की एक कविता याद आती है :

कोई नहीं पूछेगा कि अखरोट का दरख़्त कब झूम उठा
पूछेंगे सरकार ने कब मजदूरों को कुचल कर रख दिया
कोई नहीं पूछेगा कब नन्हे हाथों ने
चिकने पत्थर से तालाब में खूबसूरत लहरें उठायीं
पूछेंगे जंग की तैयारी कब शुरु हुई
कोई नहीं पूछेगा कब हुस्न कमरे में दाखिल हुआ
पूछेंगे आवाम के खिलाफ़ साज़िशें कब तैयार हुईं
नहीं कहेंगे कि वक़्त बुरा था
पूछेंगे तुम्हारे फनकार क्यों ख़ामोश थे।

छत्तीसगढ़ में जादू टोने के सन्देह में 4 हत्याएं और मारपीट के मामले .

छत्तीसगढ़ के जशपुर, बिलासपुर, राजनांदगांव कोरबा जिले के विभिन्न क्षेत्रों से पिछले कुछ दिनों में टोनही/डायन के सन्देह में 4 हत्याएं तथा कुछ ग्रामीणों से मारपीट की घटनाएं सामने आयी हैं सिर्फ अंधविश्वास, जादू टोने जैसी भ्रामक मान्यताओं पर भरोसा कर किसी निर्दोष महिला एवं उसके परिवार पर हमला करने की घटनाएं, अत्यंत निंदनीय है, दोषियों पर कड़ी कार्यवाही होनी चाहिए. समिति इन सभी मामलों में प्रवास कर प्रताड़ित परिवारों से मिलेगी और ग्रामीणों को जागरूक करेगी।

अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के अध्यक्ष डॉ. दिनेश मिश्र ने बताया कि जशपुर के सन्ना थाना क्षेत्र से से अंधविश्वास का मामला सामने आया है. यहां ग्राम पंचायत डोभ के एक व्यक्ति बुधराम ने जादू-टोने के शक में अपनी नजदीकी रिश्तेदार गंगोत्री देवी और उसके पति मधनु राम को कुल्हाड़ी से काट दिया. इसमें उसकी पत्नी लुदनी बाई ने भी साथ दिया. महिला ने खुद ही बताया कि गंगोत्री देवी और मधनु राम जादू टोना और तंत्र-मंत्र करते थे जिनसे उनके पूरे परिवार को जान का खतरा था.

दूसरे मामले में बिलासपुर के पास मस्तूरी में जादू टोना करने का आरोप लगाते हुए एक दंपती की पड़ोसियों ने लाठी व रॉड से पिटाई कर दी। अस्पताल में इलाज के दौरान घायल पति की मौत हो गई, जबकि पत्नी का इलाज चल रहा है। 26 सितंबर की रात 8 बजे खोलूराम नामक व्यक्ति मजूदरी करके घर लौटा। तब पड़ोसी सोहराब का भाई विवेक उसके घर जाकर खोलूराम व उसकी पत्नी से गाली-गलौच करने लगा। खोलूराम की पत्नी ने जब उन्हें रोका तो विवेक के घर से उसके दूसरे भाई और पिता भी खोलूराम के घर के सामने पहुंच गये। खोलूराम और उसकी पत्नी देवकुमारी को देखते ही सभी ने उसकी लाठी व रॉड से पिटाई शुरू कर दी। परिजनों ने घायल खोलूराम को इलाज के लिये मस्तूरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया, लेकिन गंभीर चोट के कारण खोलूराम को रायपुर रेफर किया गया। वहां इलाज के दिन शनिवार को खोलूराम की मौत हो गई। जानकारी मिली है कि मृतक व उसकी पत्नी पर पड़ोसी जादू-टोना करने का सन्देह करते थे. कुछ समय पहले आरोपी महिला के बच्चे की मौत हो गई थी. उसे शक था देवकुमारी और खोलूराम ने ही जादू टोने से मरवाया है.

कोरबा के पास ग्राम रलिया में दीपक रात्रे के परिवार की महिला पर एक दर्जन से अधिक ग्रामीणों ने लाठी डंडे से हमला किया जिससे महिला को बचाने आये अन्य परिजन भी घायल हो गए. राजनांदगांव के पास अम्बागढ़ चौकी में दो ग्रामीणों ने जादू टोने के सन्देह में एक व्यक्ति पर टँगीया से ताबड़तोड़ वार किया जिससे उसकी मृत्यु हो गयी. डॉ. मिश्र ने कहा हर व्यक्ति की समस्या और उसके कारण अलग-अलग होते हैं जिनका समाधान तर्कसंगत उपाय से किया जा सकता है. जादू टोने जैसी मान्यताओं का कोई अस्तित्व ही नहीं है,इस लिए तथाकथित जादू टोने से ना ही कोई व्यक्ति किसी को भी मार कर सकता है, न ही किसी को परेशानी में डाल सकता हैं और न ही किसी व्यक्ति का किसी प्रकार से फसल आदि का कोई नुकसान कर सकता है, जादू टोने ,टोनही, डायन की मान्यता सिर्फ अंधविश्वास है. जिसका का कोई अस्तित्व नहीं है ,और इस प्रकार के शक या सन्देह में किसी भी महिला को प्रताड़ित करना उसके व उसके परिवार के साथ मारपीट करना, उसको जान से मारना अनुचित, क्रूर और अपराधिक है .ग्रामीणों को इस प्रकार के अंधविश्वास में नहीं पड़ना चाहिए .

डॉ. मिश्र ने प्रशासन मांग की है कि इस मामले में तुरंत कार्यवाही की जाए तथा आरोपी को कड़ी से कड़ी सजा मिले ताकि भविष्य में कोई भी व्यक्ति इस प्रकार की अनुचित हरकत करने की चेष्टा ना कर सके. समिति इन सभी मामलों में ग्रामीणों से मिलेगी और जागरूक करेगी.

डॉ. दिनेश मिश्र
अध्यक्ष अंध श्रद्धा निर्मूलन समिति.
।

लेखकों/पाठकों के लिए :

1. रचना की मूल प्रति ही भेजें, फोटो प्रति स्वीकार्य नहीं होगी।
2. अस्वीकृत रचना की वापसी हेतू पांच रूपये का डाक टिकट लगाकर लिफाफा संलग्न करें।
3. रचना बायीं तरफ हाशिया छोड़कर अशुद्धियों रहित साफ-साफ लिखी या टाईप होनी चाहिए
4. रचना सोसायटी के उद्देश्यों के अनुरूप होनी चाहिए।
5. पत्रिका में छपी रचनाओं पर प्रतिक्रिया साधारण पोस्ट कार्ड से भी भेजी जा सकती है।
6. लेख, कहानी, कविता तथा रचनाओं पर प्रतिक्रिया ईमेल tarksheeleditor @gmail.com अथवा वट्सएप नं. 9416036203 भी भेजी जा सकती है।
7. पत्र व्यवहार करते समय लिफाफे पर पूरे पैसों के टिकट लगाकर ही प्रेषित करें। बैरंग पत्र हो जाने की स्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा।
8. अनुवादित रचना के साथ मूल लेखक का अनापत्ति पत्र भी संलग्न करें।
9. पत्रिका में छपी किसी भी रचना पर लेखक को मानदेय का प्रावधान नहीं है क्योंकि यह पत्रिका पूर्णतः अव्यवसायिक/ अवैतानिक संपादक एवं संपादक मंडल द्वारा अन्धविश्वासों, पाखण्डों, रूढ़ियों के विरूद्ध जागृति लाने हेतु जनहित में प्रकाशित की जाती है।

रागणी

भूख है अन्नदाता

पीली-पीली सरसों फूली है मस्त खेत में बाली
पता नहीं क्या दाम मिलेगा, चिंता में है हाली

आजाद हुए थे तीस करोड़, थे सारे भूखे प्यासे
अन्न समस्या बहुत बड़ी थी, थे रोटी के भी सांसे,
कैसे खत्म हो अब समस्या, लोग सोच में थे खासे,
भीखमंगा देश कहा करते, थी तब हाथ में टाल्ली।

बीड़ा उठाया खुद जनता ने, ना देखी बाट किसी की,
खेतों में इतना उपजाया, ना छोड़ी घाट किसी की
हरित क्रांति लाए देश में, ना पूछी जात किसी की
अन्न समस्या मेट दई ये, जो ना थी हाथ किसी की
धन-धन रे किसान देश के, ना रह गया देश सवाली।

गोदाम देश में छोटे पड़ गए, इतना अन्न उगाया,
तेरी जिन्स पर मोल उनका, ये नहीं समझ में आया
तेरी मेहनत का चालाकों ने जम के फायदा उठाया
भूख मिटा दी सारे देश की, किसान तो भूखा पाया
चौका-चूल्हा सूना इसका, सूनी अन्न बिन थाली।

कोई उगावे कोई पकावे, यहां कोई तीसरा खाता
गोदामों में अन्न सड़ता है, भूखा है अन्न-दाता
मण्डी में मची लूट देख के, टुकर-टुकर लखाता
'रामेश्वर' मेरे देश का नेता, जरा नहीं शरमाता
कोठी-कुठले सब के भर गए, रहे इसके कोठे खाली।

-रामेश्वर 'गुप्त'

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की अपील

हरियाणा के असंध में शीघ्र ही 'तर्कशील केंद्र' के रूप में एक भवन निर्माण की योजना प्रस्तावित है। जिसके लिए सोसायटी के कार्यकर्ता मेहर सिंह विर्क ने असंध जिला करनाल में एक भूखण्ड भी प्रदान किया है। अतः सभी साथियों से अपील की जाती है कि इस योजना हेतु बढ़-चढ़ कर आर्थिक सहयोग करें।

-राज्य कार्यकारिणी

महासचिव,
तर्कशील सोसायटी हरियाणा

माता अमरजीत कौर का अधार्मिक शोक समागम

समाज और परिवार के सभी पहलुओं से एक माँ का चले जाना किसी के लिए भी दु:खद होता है। माता अमरजीत कौर जी का (स्मृति शेष जोगिंदर सिंह की पत्नी) बुढ़ापे जनित रोगों के कारण 88 वर्ष की आयु में 18 सितम्बर 2021को निधन हो गया।

माता अमरजीत कौर की इच्छा के अनुसार उनका शव दहन परिवार द्वारा बिना किसी धार्मिक या रूढ़िवादी तरीके की बजाए गैस आधारित संयंत्र में किया गया। उनका मृतक शरीर और आंखें गंभीर बीमारियों के चलते मेडिकल क लेज को नहीं दिया जा सका।

29 सितंबर को शोक समारोह अमृतसर में बिना किसी धार्मिक तरीके से आयोजित किया गया, जिसमें माझा जॉन (पंजाब) की तर्कशील इकाइयों के कार्यकर्ताओं के अलावा विभिन्न लोकतांत्रिक और सामाजिक संगठनों के नेताओं और कार्यकर्ताओं, रेल कर्मचारियों व रिश्तेदार शामिल हुए।

समारोह के आरम्भ में उपस्थित लोगों ने माता जी के चित्र पर पुष्प अर्पित कर आदरांजलि दी।

इस अवसर पर तर्कशील सोसायटी पंजाब के प्रभारी राजिंदर भदौड ने अपनी बात रखते हुए कहा कि 1984 में पति की आकस्मिक मृत्यु के बाद कठिन समय में उन्होंने पूरे परिवार का पालन-पोषण किया। उनके परिवार ने तर्कशील,साहित्यक व सामाजिक संस्थाओं को सहयोग किया।उन्होंने कहा कि आत्मा-परमात्मा, स्वर्ग- नरक और अगला पिछला जन्म सिर्फ एक कल्पना है।धर्म के ठेकेदारों द्वारा सदियों से इन अंधविश्वासों के माध्यम से लोगों को लूटा जाता रहा है। उन्होंने जन्म, विवाह और मृत्यु के समय किए जाने वाले रूढ़िवादी और निरर्थक अनुष्ठानों को त्यागकर एक बेहतर समाज बनाने की अपील की।

प्रमुख स्वास्थ्य विशेषज्ञ और विद्वान डॉ. शाम सुंदर दीप्ति ने अनुसंधान के लिए मेडिकल क लेज के छात्रों को शव प्रदान करने और जरूरतमंदों को अंग प्रदान करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

देश भगत यादगर समिति जालंधर के सचिव एवं प्रख्यात विचारक डॉ. परमिंदर सिंह ने कहा कि 1984 में अपने पति की मृत्यु के बाद माता अमरजीत कौर ने जीवन भर साहस और दृढ़ संकल्प के साथ संघर्ष किया। उन्होंने कहा कि खुशी के अवसर पर महंगे शगुन-उपहारों के आदान-प्रदान और धार्मिक-रूढ़िवादी संस्कारों को त्यागने की जरूरत है।

सेंट्रल पंजाबी राइटर्स एसोसिएशन के सचिव और कथाकार दीप देविंदर सिंह ने कहा कि वर्तमान पीढ़ी अपने माता-पिता और बड़ों की देखभाल के प्रति उतनी संवेदनशील नहीं है जितनी पुरानी पीढ़ी है लेकिन इस परिवार ने पूजा पाठ करने के बजाय इस महत्वपूर्ण मानवीय रिश्ते को पूरा किया।

इस अवसर पर सुखदेव फगवाड़ा, राजवंत ने तर्कशील सोसायटी के 37 वर्षो से बेहतर समाज बनाने के संकल्प को दोहराया।

किसान नेता बलविंदर दुधाला ने कहा कि किसी भी परिवार के लिए एक मां का जाना एक असहनीय सदमा है, लेकिन इसे तथाकथित भगवान की इच्छा मानने की बजाय नैतिक सिद्धांतों का पालन करके दुख को कम किया जा सकता है। बीमारियाँ, दुर्घटनाएँ और अप्रा तिक मौतें किसी तथाकथित ईश्वर की गलती नहीं हैं बल्कि इसके लिए हमारी वर्तमान साम्राज्यवाद-समर्थक, मानव-विरोधी और भ्रष्ट व्यवस्था ज़िम्मेदार है, अजीत अखबार के स्थानीय प्रभारी जसवंत जस ने कहा कि सामाजिक और सांस् तिक परिवर्तन के लिए किसी भी परिवार के लिए एक तर्कशील दृष्टिकोण से लैस होना महत्वपूर्ण है।

एन आर एम यूद्धरेलवे यूनियनऋ के शाखा सचिव राजीव शर्मा ने माता अमरजीत कौर के साथ बिताए पलों और पुरानी दोस्ती को याद किया।

अंत में, सुमित सिंह ने विभिन्न तर्कशील, सामाजिक संस्थाओं, रिश्तेदारों, रेलवे साथियों और दोस्तों का धन्यवाद किया।

समारोह के समापन पर तर्कशील पत्रिका और पंजाबी जागरण में सुमित सिंह द्वारा प्रकाशित लेख की 300 प्रतियां वितरित की गई।

इस व्यवस्था में तर्कशील सोसायटी अमृतसर ज न के मुख्तियार गोपालपुरा, जसपाल बसरका, अश्विनी कुमार, कर्ण कुमार, नवरीत, एमपी सिंह, प्रीतकंवल कौर, दानिशवीर सिंह, कुलदीप सिंह और लाल चंद ने अहम भूमिका निभाई. शोक समागम में बलदेव राज वेरका, राज कुमार वेरका, शायर मलविंदर, सरबजीत संधू, हरजीत संधू, धारविंदर कोहली, पंकज शर्मा, जोगिंदर पाल कौर, मनदीप सिंह, रविंदर नाथ आदि उपस्थित रहे।

- सुमित सिंह, अमृतसर।

मो. 76960 30173



माता अमरजीत कौर के अधार्मिक शोक समागम की तस्वीरें।
सम्बोधन करते तर्कशील सोसायटी पंजाब के प्रभारी राजेन्द्र भदौड़



कुरुक्षेत्र में तर्कशील सोसायटी हरियाणा के
राज्य स्तरीय सैमिनार की झलकियां



तर्कशील सोसायटी पंजाब की इकाई खरड़ द्वारा
दिवाली पर्व पर जनता को सन्देश दिया
-किताबें खरीदो, पटाखे नही।



तर्कशील सोसायटी हरियाणा, यमुनानगर
इकाई अपनी मासिक बैठक करते हुए

If undelivered please return to :

Tarksheel

Tarksheel Bhawan, Tarksheel Chowk,
Sanghera By Pass, BARNALA-148101
Post Box No. 55
Ph. 01679-241466, Cell. 98769 53561
Web : www.tarksheel.org
e-mail : tarkshiloffice@gmail.com

BOOK POST
(Printed Matter)

To ....

....

....

प्रो. बलवंत सिंह, प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी, संपादक, मकान न. 1062, आदर्श नगर, पिपली, जिला कुरूक्षेत्र - 136131 (हरियाणा) द्वारा अप्पू आर्ट प्रैस, शाहकोट से मुद्रित करके तर्कशील सोसायटी पंजाब व हरियाणा के माध्यम से वितरण हेतु जारी किया।